

इलाम जिल्ला साखेजुङ्ग गा.वि.स. को चिया खेती र यसको  
आर्थिक र सामाजिक सम्बन्धको अध्ययन

त्रिभुवन विश्वविद्यालय मानविकी तथा सामाजिकशास्त्र सङ्काय  
समाजशास्त्र विभागअन्तर्गत समाजशास्त्र विषयको  
स्नातकोत्तर तहको आंशिक आवश्यकता  
परिपूर्तिका लागि  
प्रस्तुत

शोधपत्र

शोधकर्ता

अनिता राई

परीक्षा रोल नं. : २८१८०७/०६९

त्रि.वि. रजिष्ट्रेशन नं. : ६-२-५३७-१-२००७

त्रिभुवन विश्वविद्यालय

समाजशास्त्र केन्द्रीय विभाग

कीर्तिपुर, काठमाडौं

२०७३

त्रिभुवन विश्वविद्यालय  
मानविकी तथा समाजशास्त्र सङ्काय  
समाजशास्त्र केन्द्रीय विभाग,  
कीर्तिपुर, काठमाडौं

## सिफारिस पत्र

त्रिभुवन विश्वविद्यालयद्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम अनुसार स्नातकोत्तर उपाधिको आंशिक आवश्यकता पूरा गर्नको लागि सामाजिकशास्त्र सङ्कायअन्तर्गत समाजशास्त्र विभागकी छात्रा अनिता राईले “इलाम जिल्ला साँखेजुङ्ग गा.वि.स.को चिया खेती र यसको आर्थिक र सामाजिक सम्बन्धको अध्ययन” मेरो रेखदेख र निर्देशनमा तयार पार्नु भएको हो । यस शोधलाई अन्तिम मूल्याङ्कन समितिमा पेश गर्न सिफारिस गर्दछु ।

मिति : २०७३/१२/०२

.....  
डा. मनहरि ढकाल  
(शोध निर्देशक)  
समाजशास्त्र केन्द्रीय विभाग  
कीर्तिपुर, काठमाडौं

त्रिभुवन विश्वविद्यालय  
मानविकी तथा समाजशास्त्र सङ्काय  
समाजशास्त्र केन्द्रीय विभाग,  
कीर्तिपुर, काठमाडौं

## स्वीकृति पत्र

त्रिभुवन विश्वविद्यालयबाट मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्कायअन्तर्गत समाजशास्त्र केन्द्रीय विभागकी अनिता राईद्वारा “इलाम जिल्ला साँखेजुङ्ग गा.वि.स.को चिया खेती र यसको आर्थिक र सामाजिक सम्बन्धको अध्ययन” शीर्षकमा तयार गर्नु भएको यो अध्ययनलाई शोधपत्रको रूपमा स्वीकृति प्रदान गरिएको छ ।

### शोधपत्र मूल्याङ्कन समिति

विभागीय प्रमुख

.....

प्रा.डा. तुल्सीराम पाण्डे

शोध निर्देशक

.....

डा. मनहरि ढकाल

बाह्य निरीक्षक

.....

डा. टिकाराम गौतम

मिति : २०७३/१२/१५

## कृतज्ञता ज्ञापन

प्रस्तुत शोधपत्र मैले स्नातकोत्तर तहको उपाधि प्राप्तिका लागि तयार पारेकी हुँ । यस शोधपत्र तयार पार्न आफ्नो अमूल्य एवम् व्यस्त समयको बाबजुद पनि आवश्यक निर्देशन, सर सल्लाह एवम् सहयोग पुऱ्याउनु हुने शोध निर्देशक डा. मनहरि ढकालज्यूप्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन गर्दछु ।

प्रस्तुत शोध विषयमा शोधकार्य गर्न अवसर जुटाउने समाजशास्त्र केन्द्रीय विभागप्रति म हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन गर्दछु । आफ्नो अमूल्य विचार दिने विभागका अन्य आदरणीय गुरुहरूप्रति हार्दिक कृतज्ञ छु ।

सामाग्री सङ्कलनका क्रममा सहयोग गर्ने साँखेजुङ्ग गा.वि.स. कार्यालयका प्रमुख सचिवज्यूप्रति हार्दिक आभार व्यक्त गर्दछु । त्यसै गरी अध्ययनको क्रममा तथ्याङ्क सङ्कलन गर्न आवश्यक सहयोग गरिदिनु हुने विभिन्न चिया कृषक, चिया खेती सम्बन्धी व्यक्तिहरू, साथीहरूलाई पनि हार्दिक धन्यवाद दिन चाहन्छु । साथै शोधपत्र टङ्कन तथा भाषिक शुद्धता सहित आकर्षक ढङ्गले कम्प्युटर सेटिङ गरी अन्तिम रूप दिन सहयोग पुऱ्याउनु हुने युनिर्भसल फोटो कपी एण्ड कम्प्युटर सेन्टर कीर्तिपुरका सुभाष खत्रीप्रति पनि धन्यवाद दिन चाहन्छु ।

अन्त्यमा म यस शोधपत्रको समूचित मूल्याङ्कनका लागि त्रिभुवन विश्वविद्यालय समाजशास्त्र केन्द्रीय विभाग, कीर्तिपुर समक्ष पेस गर्दछु ।

.....

**अनिता राई**

समाजशास्त्र केन्द्रीय विभाग

कीर्तिपुर, काठमाडौं

## विषयसूची

| विषय                                     | पेज |
|--|-----|
| सिफारिस पत्र                             |     |
| स्वीकृति पत्र                            |     |
| कृतज्ञता पत्र                            |     |
| विषयसूची                                 |     |
| तालिका सूची                              |     |
| <b>अध्याय –एक</b>                        |     |
| <b>परिचय</b>                             |     |
| १.१ अध्ययनको परिचय/पृष्ठभूमि             | १   |
| १.२ समस्याको कथन                         | २   |
| १.३ अध्ययनको उद्देश्य                    | ४   |
| १.४ अध्ययनको औचित्यता                    | ५   |
| <b>अध्याय –दुई</b>                       |     |
| <b>साहित्यको समीक्षा पुनरावलोकन</b>      |     |
| २.१ अध्ययनको सैद्धान्तिक अवधारणागत ढाँचा | ६   |
| २.२ पूर्व साहित्य समीक्षा                | ७   |
| <b>अध्याय –तीन</b>                       |     |
| <b>अनुसन्धान विधि र प्रक्रिया</b>        |     |
| ३.१ अनुसन्धान ढाँचा                      | १३  |
| ३.२ अध्ययन क्षेत्र छनोटको औचित्यता       | १३  |
| ३.४ तथ्याङ्कको स्रोत                     | १३  |
| ३.४.१ प्राथमिक स्रोत                     | १४  |
| ३.४.२ द्वितीय स्रोत                      | १४  |
| ३.५ तथ्याङ्क सङ्कलन विधि र औजारहरू       | १४  |
| ३.५.१ अवलोकन                             | १४  |
| ३.५.२ अन्तरवार्ता                        | १५  |

|  |    |
|--|----|
| ३.५.३ प्रश्नावाली  | १५ |
| ३.५.४ तथ्याङ्क संकलनका औजारहरू                                 | १५ |
| ३.५.५ व्यक्तिगत अध्ययन   | १५ |
| ३.६ तथ्याङ्क विश्लेषण  | १५ |
| ३.७ अध्ययनको सीमाहरू   | १५ |
| <b>अध्याय-चार</b>  |    |
| <b>अध्ययन क्षेत्रको सामान्य परिचय</b>                          |    |
| ४.१ साँखेजुङ्ग गा.वि.स. को सामान्य परिचय                       | १७ |
| ४.२ हावापानी र वातावरण   | १७ |
| ४.३ जनसंख्याको आकार  | १८ |
| ४.४ जाती/जनजाती  | १८ |
| ४.५ धर्मअनुसार जनसंख्या विवरण                                  | १९ |
| ४.६ स्वास्थ्य संस्था   | २० |
| ४.७ विद्युत/उर्जा  | २१ |
| ४.८ सडक र यातायात  | २१ |
| ४.९ शिक्षाको अवस्था  | २२ |
| ४.१० घर निर्माणको अवस्था                                       | २४ |
| <b>अध्याय- पाँच</b>  |    |
| <b>साँखेजुङ्ग गा.वि.स.मा चिया खेतीको सामाजिक आर्थिक प्रभाव</b> |    |
| ५.१ चिया खेतीको सामाजिक प्रभाव                                 | २५ |
| ५.१.१ स्वास्थ्य क्षेत्रमा परेको प्रभाव                         | २५ |
| ५.१.२ पेशा सम्बन्धी जानकारी                                    | २५ |
| ५.१.३ जमिनको उपयोग   | २७ |
| ५.१.४ खेती प्रणाली   | २७ |
| ५.१.५ नगदेवालीको उत्पादन                                       | २८ |
| ५.१.६ परम्परा सीपको अवस्था                                     | २८ |
| ५.१.७ परम्परागत पेशाको अवस्था                                  | २९ |
| ५.१.८ परम्परागत पर्मा प्रथाको वर्तमान स्थिति                   | ३० |

|  |    |
|--|----|
| ५.१.९ पोसाकको अवस्था   | ३१ |
| ५.१.१० कामदारको पोसाक  | ३१ |
| ५.१.११ खाजाको व्यावस्था  | ३१ |
| ५.२ चिया खेतीको आर्थिक प्रभाव  | ३२ |
| ५.२.१ बचत तथा ऋण परिचालन   | ३२ |
| ५.२.२ चिया खेती र पशुपालनको सम्बन्ध                                    | ३४ |
| ५.२.३ खाद्यन्न निर्भरताको अवस्था                                       | ३५ |
| ५.२.४ शैक्षिक क्षेत्रको प्रभाव   | ३६ |
| ५.३ साँखेजुङ्गा गा.वि.स.को चिया सम्बन्धी विवरण                         | ३७ |
| ५.३.१ चियाको मुख्य प्रजाती   | ३८ |
| ५.३.२ चियाको प्रकारहरू   | ३८ |
| ५.३.३ तयारी चियाको वर्गीकरण  | ३८ |
| ५.३.४ चिया खेती सम्बन्धी समय तालिका                                    | ४० |
| ५.३.५ चिया खेतीमा कामदारको अवस्था                                      | ४० |
| ५.३.६ बैदेशिक रोजगारीको अवस्था   | ४१ |
| ५.३.७ चिया खेतीमा लैङ्गिक संलग्नता                                     | ४२ |
| ५.३.८ श्रमिकको ज्यालाको अवस्था   | ४२ |
| ५.३.९ कृषकको लगानी   | ४२ |
| ५.३.१० व्यापार/बेच्ने स्थान  | ४३ |
| ५.३.११ श्रम अभाव   | ४३ |
| ५.४ चिया कृषक, विचौलिया व्यापारी र प्रशोधन केन्द्र बीचको अन्तर सम्बन्ध | ४४ |
| ५.५ चिया खेती, उत्पादन र सहकारी  | ४५ |
| ५.५.१ श्री उच्च पहाडी चिया उत्पादक सहकारी संस्था सम्बन्धी जानकारी      | ४६ |
| ५.५.२ केन्द्रीय चिया सहकारी संघको भूमिका                               | ४७ |
| ५.५.३ अर्गानिक चिया खेतीको सम्भावना                                    | ४८ |
| ५.५.४ चिया खेतीमा प्रयोग ल्याएका रसायनिक विषादी विवरण                  | ४९ |
| ५.५.५ रसायनिक विषादीको बैकल्पिक उपयाहरू                                | ५० |
| ५.५.६ अर्गानिक चिया खेतीमा आचार संहिता                                 | ५१ |

|   |    |
|---|----|
| ५.५.७ अर्गानिक चिया प्रमाणित गर्न गरिने प्रक्रिया     | ५१ |
| ५.५.८ अर्गानिक चिया प्रतिको कृषकको धारणा              | ५२ |
| ५.६ यस गा.वि.स. मा रहेका चिया सम्बन्धी उद्योगको विवरण | ५२ |
| ५.६.१ साकिरा चिया प्रशोधन उद्योगको वर्तमान अवस्था     | ५४ |
| ५.६.२ साँखेजुङ्ग चिया प्रशोधन उद्योगको वर्तमान अवस्था | ५४ |
| ५.७ नेपालमा चिया खेतीको अवस्था                        | ५५ |
| ५.७.१ चियाको वर्तमान उत्पादन र क्षेत्रफलको विवरण      | ५५ |
| ५.७.२ नेपालको चियाको वर्तमान स्थिति                   | ५४ |
| ५.७.३ नेपालमा उत्पादित चियाको मात्रा विवरण            | ५७ |
| ५.७.४ जिल्ला स्तरिय चिया रोपन र उत्पादन विवरण         | ५८ |
| ५.८ नेपालको चियाको अन्तर्राष्ट्रिय बजार               | ५९ |

## अध्याय- छ

### साराशं र निष्कर्ष

|              |    |
|--------------|----|
| ६.१ साराशं   | ६१ |
| ६.२ निष्कर्ष | ६४ |

### सन्दर्भ सामग्री सूची

#### अनुसूचीहरू

#### अध्ययन क्षेत्रको तस्वीरहरू



## तालिका सूची

| विषय  | पेज |
|---|-----|
| १. जनगणाना तथा घरधुरी सर्वेक्षण आधारमा जनसंख्या विवरण             | १८  |
| २. जाती/जनजातीअनुसारजनसंख्या विवरण                                | १९  |
| ३. धर्मका अनुसार जनसंख्या विवरण                                   | २०  |
| ४. सडक र यातायात पहुँच सम्बन्धी विवरण                             | २२  |
| ५. शैक्षिक अवस्था   | २३  |
| ६. पेशा सम्बन्धी विवरण  | २६  |
| ७. भु-उपयोग सम्बन्धी विवरण  | २७  |
| ८. नगदेवाली सम्बन्धी विवरण  | २८  |
| ९. चिया खेतीमा संलग्न विवरण                                       | ३७  |
| १०. चिया टिपाइमा संलग्न महिला र पुरुषको संलग्नता नमुना छनोट विवरण | ४२  |
| ११. चिया उद्योग सम्बन्धी विवरण                                    | ५३  |
| १२. चियामा ठुला बगान र साना किसानको उत्पादन र क्षेत्रफल विवरण     | ५५  |
| १३. नेपालको चियाको उत्पादन र क्षेत्रफल विवरण आर्थिक वर्ष २०७०/०७१ | ५७  |
| १४. सन् २०१४ देखि २०१५ सम्मको चिया उत्पादन मात्रा विवरण           | ५७  |
| १५. जिल्ला स्तरिय चिया रोपन र उत्पादन विवरण                       | ५८  |
| १६. नेपालको चिया सम्बन्धी निर्यात र आयत विवरण                     | ५९  |

## अध्याय—एक

### परिचय

#### १.१ अध्ययनको पृष्ठभूमि

नेपाल भुपरिवेष्ठित कृषि प्रधान देश भएकाले यहाँको अर्थतन्त्रको मुलआधार नै कृषि र यस सम्बन्धित उद्योगहरूलाई लिन सकिन्छ । नेपालका अधिकांश जनताहरू कृषिमा आबद्ध भएका छन् । नेपालका अधिकांश कृषकको जीवनस्तर माथि उठ्नका लागि कृषि क्षेत्रमा समग्र विकाश हुनु आवश्यक छ । व्यवसायिक कृषि तर्फ नलागिहेको अवस्थामा यसको विकाश गनुपर्ने देखिन्छ । नेपाल जस्तो कृषिलाई प्रमुख अर्थतन्त्र मान्ने देशले यस सम्बन्धित ठोस निति तथा कार्यक्रम निर्माण गर्नुपर्छ ।

नेपालमा कृषिको क्षेत्रमा ८० प्रतिशत व्यक्ति निर्भर छन् र चियाले कुल गाहस्थ उत्पादनको (GDP) मा ३७.७ प्रतिशत भाग ओगट्न सफल छ । देश आत्मानिर्भर नभई आयातमा भरपर्नु परेको बेलामा उत्पादित चिया भने निर्यात भइरहेको छ र यसले केही मात्रामा व्यापार घाटा पुर्तिमा सहयोग गरेको छ । सर्वप्रथम चिया खेतीको शुरूवात धेरै वर्ष अगाडी भारतका अंग्रेज शासक Lord William Beneting ले भारतका विभिन्न स्थानमा गरेका थिए । चिया खेतीका लागि दार्जिलिङ, हावापानी राम्रो मानिन्छ र यहाँको चियाले युरोपमा बजार लिएको छ । विश्वको प्रमुख नगदेबालीका रूपमा चिरपरिचित चिया पेय पदार्थको रूपमा नेपाली समाजमा प्रचलित तरल पेय पदार्थ हो । यो खेती समुन्द्र सतह देखि ५० मि.देखि २२०० मिटर सम्म उपयुक्त मानिन्छ । विश्वमा चिया खेती गर्ने देशमा नेपाल पनि एक पर्दछ । नेपालमा चिया खेतीको शुरूवात वि.स. १९२० (सन् १८६३) मा गजराज सिङ थापाले इलाम चिया कमान स्थापनाबाट भएको हो र त्यसै समयमै (सन् १८६५) मा सोक्तिम कमान र (सन् १८७१) मा कन्याम चिया कमानको स्थापना भएको थियो । वि.स.२०२८ साल तिरदेखि इलाम लगायत अन्य विभिन्न जिल्लामा साना किसान स्तरमा शुरूवात भएको पाइन्छ । वि.स.२०३९ सालमा पूर्वी इलाकाको ५ जिल्लाहरू इलाम, भूपा, धनकुटा, पाँचथर र तेह्रथुमलाई चिया क्षेत्रको घोषणा भए पनि अहिले जम्मा १३ जिल्लामा चिया खेती विस्तार हुँदै आएको छ । सरकारी नेपाल चिया विकास निगम भने २०५७/०५८ मा निजिकरण गरिए पनि निजी तथा साना किसान समुह भने निरन्तर रूपमा चिया खेतीतर्फ सहभागिता बृद्धि गर्दै गएको स्थिति छ र राष्ट्रिय चिया नीति २०५७ घोषणा र

कार्यन्वन निर्देशिका स्वीकृत भएको छ तर यसको पूर्ण लागु भने सबै क्षेत्र लागु पर्ने आवश्यक छ । किसानहरू चिया खेती तर्फ आकर्षित हुनुमा भिरालो, चौर, काल्ला, पखेराहरू र बाभो जमिनमा पनि चिया खेती गरी प्रयोगमा ल्याउन सकिने हुनाले पनि हो । यस गा.वि.समा प्रत्येक घरघुरिमा केहि रोपनी चिया खेती गरेको छ र जुन पुरानो खेती प्रणाली भन्दा चिया खेतीको व्यावसायिकतासगैँ चिया टिपाई, प्रशोधन कारखानामा गरी प्रत्यक्ष र अप्रत्यक्ष रूपमा सयौँले रोजगारी प्राप्त गरिरहेका छन् यसले यस गा.वि.स.का व्यक्तिहरूको दिनचर्या र जिउने आधारमा पहिला भन्दा फरक भएको देखिन्छ । विदेश निर्यात गरी विदेशी मुद्रा आर्जन गरी र देश र व्यक्तिहरूको आर्थिक पक्षमा केहि सुधार गरी राष्ट्रिय अर्थतन्त्रमा केहि सहयोग पुगेको छ (स्रोत : केन्द्रीय सहकारी संघ, २०१५) ।

साँखेजुङ्ग गा.वि.स. इलाम जिल्ला देखि उत्तर पश्चिममा अवस्थित रहेको छ । यहाँ मेची राजमार्ग, नेपालटार मंगलबारे सडक र अन्य छिमेकी गा.वि.स. सगैँ जोड्ने शाखा बाटाहरू रहेको हुँदा चिया कृषकहरूलाई चिया प्रशोधन केन्द्रसम्म लान थप सहयोग पुगेको छ । यहाँका किसानहरू पशुपालन र नगदेवाली खेती बढी गरेको पाइन्छ । चिया खेती पनि बिक्रीका लागि व्यावसायिक खेती गर्ने गरेको पाइन्छ । यस चिया खेतीले गर्दा गा.वि.स.को मानिसहरूको दैनिकीमा पहिला भन्दा फरक भई नयाँ प्रकारका सामाजिक, साँस्कृतिक, आर्थिक, शैक्षिक सम्बन्धहरू विकाश भई नयाँ सामाजिक संरचनामा विकास भएको छ । यो खेती सदरमुकाम लगायत अन्य गा.वि.स.हरू र अन्य जिल्लामा पनि भएको छ ।

कृषिलाई आधुनिकीकरणसंगै निर्यातमुखि र व्यावसायिक अर्थतन्त्रलाई व्यक्ति, समाज, अर्थतन्त्र, वातावरण सन्तुलन, पर्यटन प्रवर्द्धन र राज्यको अर्थतन्त्र बारेमा सुक्ष्म अध्ययन गर्नुका साथै यहाँ ५ वटा कारखानाहरूको स्थापनासंगै यसका प्रभाव र कच्चावस्तु हरियो पत्तीको बिक्री र त्यसमा आधारित काम गर्ने कामदारहरूको अवस्थाका बारेमा विस्तृत अध्ययन र खोज गरिएका छ । अतः व्यवसायिकता नगदेवाली चिया खेतीसंगै यहाँका कृषकमा परेका प्रभाव सम्बन्ध र अन्य त्यस सम्बन्धित क्षेत्रको अध्ययन गरिएको छ ।

## १.२ समस्याको कथन

नेपालीको कुल क्षेत्रफल १, ४७, १८१ वर्ग कि.मि. र २६°२२' देखि ३०°२७' उत्तरदेखि ८०°४' देखि ८८°१२' पूर्वी देशान्तर सम्म फैलिएका छ । विश्व अर्थतन्त्रमा जोडिएको र विशाल राष्ट्र चिन र भारतको चेपमा परेको र भौगोलिक रूपमा हिमाल, पहाड

र तराईमा विभाजित र त्यसै अनुरूपको हावापानी रहेकोले त्यसै अनुरूपको सुहाउने खेती गर्नुपर्दछ । यस चिया खेती प्रमुख नगदे खेती हो र चिया खेतीमा संलग्न सबै चिया रोपण, उत्पादन प्रतिशत देखि बजार व्यवस्थापन सम्म ध्यान दिदै अन्तर्राष्ट्रिय स्तरले स्वीकार हुने मापदण्डको उत्पादन गर्न सके विश्व बजारमा प्रतिस्पर्धा गरी आफ्नो नेपाली चिया बजार विस्तार सहज हुनेछ तर कृषकहरूले विभिन्न समस्याहरू भोग्नुपरेका छन् विभिन्न सरकारी र गैरसरकारी यसको व्यवस्थापनमा लागेपनि उचित बजार मूल्य देखि रसायनिक किटनाशक औषधी प्रयोगमा रोक सँगै यसको विकल्प औषधी दिन सकेको छैन । विश्व बजारमा अर्गानिक चिया माग बढ्दो छ र यस प्रकारको चिया उत्पादन गर्नु चुनौती हामी सामु छ । पहाडी इलाकामा उत्पादित अर्थोडक्स चियाको मुख्य बजार रहेका देशहरू जर्मन, जापान, अमेरिका र पक्लीक, चीन, अष्ट्रलिया आदि रहेको छ । सि.टि.सि. नेपाल भित्र खपत हुनुका साथै भारत, पाकिस्तान र बंगलादेशमा निर्यात भइरहेको छ (स्रोत : नेपालको तथ्याङ्कीय झलक, २०७१) ।

यहाँको परम्परागत कृषि प्रणालीमा पनि परिवर्तनको खाँचो र भू:उपयोगी खेती गर्नुपर्ने र उक्त वस्तु निर्यात तर्फ गुरुस्तरीयताका साथ प्रतिस्पर्धात्मक वस्तु उत्पादन र बिक्री गर्नुपर्ने देखिन्छ जसले विश्व बजार सुरक्षित गर्न सकिन्छ । नेपाल कृषि प्रधान मुलुक भएर पनि कृषि उत्पादनले वर्षौं भरि खान नपुग्ने समस्या हुँदा नयाँ प्रकारका नगदे कृषि खेतीको शुरूवातसँगै चिया खेती एक लिन सकिन्छ । चिया खेती राणाकालिन समयमा इलाम र भ्जापामा रोपेर थालनी गरिएको भए पनि वर्तमान समयमा गाउँ गाउँमा खाली भिरालो जमिनमा यो खेती शुरूवातसँगै स्थानीय स्तरमा रोजगारी, हरियो पत्ति बिक्री गरी आमदामी स्रोत बढ्नुका साथै ठुला देखि साना उद्योगहरूको स्थापना गरी विदेश निर्यात गरी देशको आर्थिक पक्षमा केही मात्रामा व्यपारमा सहयोग पुगेको छ भने विश्वमा यसको बजार धेरै रहेता पनि निर्यातमा प्रतिस्पर्धा बढी भएकाले विश्व बजारको माग अनुसार गुणस्तरिय चिया उत्पादन गर्नुपर्ने चुनौती र त्यहि अनुरूप हरियो पत्ति र प्रशोधित चियाको मूल्य पनि कारखाना सञ्चालकले मात्रा होइन, कृषक र साधारण रोजगार गर्नेले पनि पाउनुपर्छ र मात्र कृषक र नव पुस्ता यस खेती आकर्षित हुनेछ । केही वर्ष यत्ता यस खेतीतर्फ उत्साह घटेको देखिन्छ तर पनि यस खेती विस्तार सँगै स्थानीयमा सामाजिक, आर्थिक प्रभाव परि थुप्रै परिवर्तन देखियो र यसका साथै समस्या देखिएकाले यसका नकारात्मक पक्ष पनि

हेर्नुपर्ने देखिन्छ । समाजभित्रका व्यक्तिहरूको आवश्यक पुरा गर्न बिच आपसी सम्बन्ध र अन्तरक्रिया हुन जरूरी छ र मात्र एक अमूर्त तथा आदर्श समाजको निर्माण हुनसक्दछ ।

नेपाली समाज जहाँ विविधातायुक्त बहुभाषिक, बहुसाँस्कृतिक, बहुधार्मिक विशेषतायुक्त समाजमा चिया उत्पादन र बिक्रीले ठुलो परिवर्तन देखिएको छ । यसले आम्दामीको स्रोतको दायरा वृद्धिसगैँ प्रत्येक साँस्कृतिक, रहनसहन, मानविय सम्बन्धहरू र आर्थिक पक्षसगैँ पुराना मान्यताहरू विस्थापन गर्दै सानो गाउँ विश्व अर्थतन्त्रसँग जोडिन पुगेको छ । यसका चुनौतीहरूका साथै सकारात्मक र नकरात्मक कुरा पनि रहेको छ ।

यस अध्ययनको क्षेत्र साँखेजुङ्गा गा.वि.स.को कृषि क्षेत्रका प्रमुख खेतीमा हरियो चिया उत्पादन, प्रशोधन, बिक्रीले यसको विकाशसगैँ साधारण निम्न वर्गिय कृषक, श्रमिक, निजी उद्योगकर्ता, संगठनात्मक चुनौतीले कस्तो प्रभाव परेका छ । यस बारे अध्ययन केन्द्रित गर्नु छ ।

अतः यस अध्ययन अन्तर्गत निम्न प्रश्नहरूको सवधान खोजिने छ

१. चिया खेतीबाट उत्पादित वस्तुले स्थानीयको आयआर्जनको अवस्था र कृषक, मजदुर, खरिदकर्ता र उद्योगहरूबिचको सम्बन्ध कस्तो छ ?
२. चिया खेती उत्पादन र परम्परागत शैलीको खेती बीचको आपसी सम्बन्धको र समाज, आर्थिक, आदि पक्षमा के प्रभाव परेको छ ?
३. चियाको विश्व बजार मागको अवस्था र कृषक र युवाहरूको यसप्रतिको आकर्षणको अवस्था कस्तो छ ?
४. यस खेती सम्बन्धित के कस्ता सरकारी तथा अन्य पक्षका निती, योजना तथा कार्यक्रम रहेको छ ?

### १.३ अध्ययनको उद्देश्य

- (१) चिया खेतीको सामाजिक र आर्थिक प्रभावको अध्ययन
- (२) चिया कृषक, बिचौलिया व्यापारी र प्रशोधन केन्द्रबिचको अन्तरसम्बन्धको अध्ययन
- (३) अगार्निक चिया खेतीको वर्तमान अवस्था र त्यसको सम्भावनाको अध्ययन

## १.४ अध्ययनको औचित्यता

प्रस्तुत “इलाम जिल्ला साँखेजुङ्ग गा.वि.स.को चिया खेती र यसको आर्थिक र सामाजिक सम्बन्धको अध्ययन” नामक रहेको छ । यस अनुसन्धात्मक अध्ययनको औचित्य निम्न रहेको छ ।

१. यस अध्ययनबाट पुरानो सामाजिक र आर्थिक प्रभावको स्थितिको जानकारी दिँदै नयाँ स्थापित सम्बन्धहरूका बारेमा जानकारी दिनु ।
२. यस अध्ययनबाट कृषक, मजदुर, खरिदकर्ता र कारखाना विचको अन्तरसम्बन्ध कस्तो छ र चिया खेतीप्रतिको युवाहरूको आकर्षण कस्तो र महिलाको भूमिका र कृषकहरूमा परेको प्रभावको जानकारी दिनु ।
४. यो अध्ययनबाट विभिन्न क्षेत्रमा अध्ययन व्यक्ति, विद्यार्थी तथा सरकारी तथा गै.स.स. सामाजिक सेवकहरूको नीति तथा कार्यक्रम निर्माण गरी विकास तथा योजनामा सहयोग गर्न ।
५. अर्गानिक चिया उत्पादनमा सहकारी संस्थाको भूमिका र चुनौती र यसका साहायक संस्थाहरूको खेल्नु पर्ने भूमिका र दिगो विकासमा अर्गानिक चिया खेती आवश्यकता र यसका दिघकालीन बजारको खोजमा सम्बन्धित क्षेत्रलाई जोड दिन ।

## अध्याय - दुई

### पूर्वकार्यको समीक्षा

#### २.१ अध्ययनको सैद्धान्तिक अवधारणागत ढाँचा

प्रस्तावित अध्ययन अनुसन्धान कार्य सम्पन्न गर्नका लागि सामाजिक, साँस्कृतिक र विकाशका ढाँचा अन्तर्गत रहेर आवश्यक तथ्याङ्क तथा सूचनाहरू सङ्कलन गरिएको छ । यस अध्ययनको तथ्याङ्क तथा सूचनाहरू अध्ययन क्षेत्रको समाजभित्र रहेका व्यक्तिहरूका परम्परागत पेशा व्यावसायसँगै बनेका सामाजिक साँस्कृतिक सम्बन्धहरूको अध्ययन गर्दै वर्तमान समयमा उक्त स्थानको व्यक्तिहरूको परिवर्तित कृषि पेशासँगै जिविकापार्जनका तरिका र युवा पुस्ताहरूले चिया खेती प्रतिको दृष्टिकोण बारे खोज गर्दै मानिसहरूको पुराना र नयाँ सम्बन्धहरूको र उनीहरूको दैनिक जिवनशैलीको परिवर्तन, आयआर्जनको दायरा वृद्धिका कुरा र उक्त स्थानमा के विकास भएको छ प्रष्ट पार्दै । यी विविध सामाजिक तथा साँस्कृतिक रूपान्तरणका क्षेत्रहरू अध्ययन गर्दै समाजशास्त्रिय एवम् मानवशास्त्रिय अध्ययन र व्याख्याका विषयहरूसँग सम्बन्धित रहेर विविध सिद्धान्तको अध्ययन गरिएकोछ ।

M.p. Jonson\_“social change or transformation may be difined as modification in ways of doing and thinking of people.”

एल.एज. मोर्गन अनुसार “प्रविधिक परिवर्तनलाई उद्विकाशका मौलिक कारक हो ।”

चिया खेती र उत्पादनका सुक्ष्म तह किसान, रोजगारीकर्ता, श्रमिक देखि उद्योग सञ्चालनका लगानीकर्ता बीचको सम्बन्ध र यसले कृषक तहमा परेको सामाजिक र आर्थिक प्रभाव क्षेत्रको बारेमा अध्ययन गरी यसका कृषक, युवा र महिला वर्गमा परेका सकारात्मक र नकारात्मक पक्षहरूलाई केलाउने हुँदा यसका सिद्धान्तका आधारभुत मान्यता छन् ।

साँखेजुङ्ग गा.वि.स.को चिया उत्पादनले सामाजिक साँस्कृतिक प्रभाव को अध्ययन गरी वर्तमान समयमा चियाको प्रतिस्पर्धात्मक विश्व बजार, चियाको निर्यातको स्थिति र यस गा.वि.स.का मानिसको जिवनयापनमा परेको प्रभावको खोजी गरी कृषक र बिचौलिया व्यापारी र चिया प्रशोधन कारखाना सम्बन्ध हेर्दै अर्गानिक चियाको विश्वव्यापी बजारको संभावना हेर्दै चियामा युवकहरूको आर्कषण कस्तो रहेको छ । चिया कृषकहरूको

संगठनात्मकता (सहकारीता) को भूमिका र उद्योगबीचको अन्तरसम्बन्धको र अर्गानिक चिया उत्पादनका समस्याको अध्ययन गरिएको छ ।

## २.२ पूर्वसाहित्य समीक्षा

प्रस्तुत प्रस्तावित विषयको अनुसन्धानका निम्ति विभिन्न लेखरचना, प्रतिवेदन, योजना पुस्तिका लगायतका अन्य सञ्चारका साधनद्वारा प्रशासित लिखित सामाग्रीको साथै यस विषयमा गरेका अनुसन्धानका लागि आवश्यकीय सामाग्रीहरूको बढी भन्दा बढी खोजी गर्दै अझ फराकिलो समीक्षा गरिन्छ । प्रस्तुत अध्ययन अनुसन्धानका लागि निम्न उपलब्ध उपलब्ध समीक्षा सामाग्री प्रस्तुत गरिएको छ ।

विकास र अविकासको अवधारणा दिने प्रथम व्यक्तिको रूपमा सन् १९४९को विश्वयुद्ध पछि अमेरिकी राष्ट्रपति हनरी ट्रुमेन हुन् । यसै आधार मान्दै सन् १९८० देखि सामाजिक परिवर्तन र विकाश सम्बन्धी अन्य अवधारणाको विकास भइरहेको छ, विकासलाई गुणात्मक र मात्रात्मक दुई पक्ष समेटिएका हुन्छन् । एक गाम्नीण कृषि विकासले कसरी आर्थिक, सामाजिक, साँस्कृतिक मूल्य मान्यताको स्वरूपमा परिवर्तनको जरूरी छ यो स्थिर नभई निरन्तर र सर्वव्यापी हुन्छ । मानिसको जिवनस्तर, सामाजिक प्रतिष्ठा वृद्धि, लगानी उत्पादन बढ्नु, इच्छा, जनचासो, सहभागिता, समाजको अर्थव्यवस्था, राजनिति, साँस्कृतिक व्यावस्था कला साहित्यमा आउने सकारात्मक फेरबदल वा परिवर्तनलाई लिइन्छ ।

Bottmore Tom(1987) “change development progress in led sociology;A guide to problems and literature london;Alian and Uwin pp265–277 अनुसार “विकास परिवर्तन र प्रगतिले सामाजिक क्षेत्रमा विशाल परिवर्तन ल्याउँछ र हुन्छ । यसले सामाजिक विकास को मापकले मापन गर्न सकिन्छ ।

“आज पनि हामीमध्ये कतिले औद्योगिक विकास र उन्नतिको बाटो पहिल्याउन पश्चिम युरोप र उत्तर अमेरिकाको सीप तथा ढङ्गहरूको नक्कल गर्न खोज्दा उनीहरूको बहिरी र आवश्यक सिकेर खाल्डोमा खस्नुपरेको वा ओरालो लाग्नु परेको उदाहरण देखेका छौ ।”

डोर बहादुर विष्ट (सबै जातका फुलबारी, २०६८)

Amartya Sen :1975 in his book cash crops farming in Nepal dealt with the growth of individual cash crop including tea, in the second chapter lastly he made some suggestion for the development of cash crop farming in the country.he suggested that



Tea can play an effective role in the rural areas of the national economy due to its popularity in national and international market should give emphasis on rural Tea planting areas by industrial development.

जसले विकास दृष्टिकोण भित्र क्षमता विकास, मानवअधिकार, लैङ्गिक विकास, प्रजातन्त्रिक सुशासन जस्ता कुरा महत्व दिनुपर्नेमा जोड ।

सन् १९६० पछि विशेष चर्चामा आएको लोकविधी सिद्धान्तको विकास गर्ने क्रममा विभिन्न विद्वानहरूले आ-आफ्नो नै दृष्टिकोण तथा धारणाहरू राखेको छन् । जसमध्ये Harold Garfinkel सन् १९६७ मा प्रकाशित studies Ethnomethodologys, प्रकाशित विचार र क्रियाकलापको सुक्ष्म अध्ययनमा जोड दिएका पाइन्छ । १४ प्रत्येक क्रिया वा मान्यता तथा प्रचलनको अर्थ निहित रहन्छ । यसैले लोकविधी नमुनाले जनताको वा समुदायको अर्थमा सरोकार राख्दछ । व्यक्तिले गर्ने क्रियाकलाप तथा व्यवहारबाट सिङ्गो सामाजिक व्यवस्थाका नियम चलेका हुन्छन् । प्रत्येक व्यवहार आफैमा अर्थपूर्ण छन् भन्ने मान्यतालाई जोड दिएको छ । यसै सम्बन्धी जोन हरिटे (Jhon Heritage 1984) ले Garfinkel and Ethnomethodology सम्बन्धी पुस्तकमा प्रत्येक समाजमा आ-आफ्नै किसिमका सामाजिक मूल्य मान्यता साँस्कृतिक अर्थव्यवस्था तथा परम्परा रहेको हुन्छ । यसैका आधारमा सामाजिक व्यवहार क्रियाकलाप र सम्बन्ध स्थापित भएको हुन्छ भन्ने कुरा लेखि प्रष्ट पारिएका छन् ।

लोकविधी सिद्धान्तको विकासमा अमेरिका समाजशास्त्री सुजको कृति The Phenomenology of the social world (1977) ले घटनाशास्त्रमा महत्वपूर्ण भूमिका खेलेको छ । सामाजिक घटनाको गहन अध्ययन गर्न दैनिक जीवनको तरिकालाई बुझ्न पर्ने सामाजिक घटनाकर्ताको भूमिका रहन्छ ।

यसरी विभिन्न विद्वानहरूले राखेका मतका आधारमा हेर्दा समाजका मानिसका निजी धारणाहरूको सामाजिक यथार्थबाट नै सामाजिक व्यवस्थाले निरन्तरता पाएका छन् । यहि प्रक्रियाबाट सामाजिक संगठन, संस्था, संरचनागत नियमहरूले चल्दछन् । समय अनुसार यसको जनधारणा विधिहरू परिवर्तन भइरहन्छ र नयाँ विधीहरू समाजमा स्थापित हुन्छ । यहि धारणाको प्रत्येक क्रियाकलापको अध्ययनलाई लोकविधिशास्त्र जोड दिन्छ ।

यसरी हेर्दा हाम्रा समाजको नयाँ-नयाँ कृषि व्यावसायसँगै सोही अनुसारका संस्था संगठन, सामाजिक सम्बन्धहरूको निर्माण भइरहको छ । यस अवस्थामा यो शोधपत्र हाम्रो

कृषिप्रधान देशमा कृषि व्यवसायमा चिया खेतीसँगै समाजमा परेका प्रभावको सुक्ष्म रूपमा अध्ययन गरी निष्कर्ष पुग्न जरूरी छ ।

समाजशास्त्रमा समाजको अध्ययन तथा विश्लेषण गर्न क्रममा विभिन्न सिद्धान्तहरू विकास भयो यसै क्रममा समाज रूपान्तरण तथा व्याख्या गर्ने क्रममा मार्क्सवादी सिद्धान्तको विकास हुनपुग्यो । यस सिद्धान्तले वर्ग संघर्ष र उत्पादन ढाँचालाई आधार मानेर समाजको व्याख्या गरेको पाइन्छ ।

Karl Mark “Exploited social classes over throwing those exploiting them.”

विकासको क्रममा विभिन्न वर्गहरूको विकास भई तिनीहरू बिचको सम्बन्धमा खडल बढीभई वर्गीय धुत्रिकरण तथा वर्ग संघर्ष र संघर्षकै माध्यमबाट समाज परिवर्तनका स्वरूप के कसरी भयो देखाउन वर्ग संघर्षको अभिप्राय हो । सामाजिक विकास र परिवर्तनका लागि महत्वपूर्ण कारक तत्व नै आर्थिक व्यवस्था हो । यसै आधार संरचना र उपरिसंरचना निर्माण हुनेमा मार्क्सवादको जोड छ । कालमार्क्सको उत्पादन प्रणालीको विकाससँगै वर्गीय उत्पतिको विकासलाई विश्लेषण गरेको छन् । यहाँ पुजिवादी (हुनेखाने) र सर्वहारा श्रमिक, मजदुर (हुँदा खाने) बीच वर्ग संघर्ष हुन्छ । जहाँ सर्वहारा वर्ग (श्रमिक, मजदुर) एक जुटभई पुजिपति विरुद्धमा संघर्ष गर्दछन् । १७ त्यसै हाम्रो समाजमा पनि पुजिपति चिया कारखाना मालिकहरूले कृषकहरूबाट विभिन्न बाहानामा बढी नाफा लुट्ने र कृषकहरू आफ्नो हितका लागि अन्दोलन गर्न संगठन निर्माण गर्नुका साथै बेला बेलामा अन्दोलन हुने गरेको छ । कृषकले घाटाका साथै हरियो पत्ति बेच्नुपर्ने बाध्यताले चिया कृषक उत्साह भन्दा निरासापन देखिन्छ ।

चिया खेतीको शुरूवात चीन ५ हजार वर्ष अघिबाट शुरू भई अन्य मुलुकमा विस्तार भएको हो । चिनिया दन्त्य कथाहरू अनुसार चिनिया शाषक shan Nung ले सर्वप्रथम चिया पत्ता लगाएका थिए । उनले ई.पु. २६०० को समयमा चियाको पातलाई चिनिया lu :you -लुयु ले चिया सम्बन्धि विभिन्न स्मारिका लेख्न शुरू गरेपछि चिया सम्बन्धी विभिन्न किताबहरू प्रकाशित हुनु शुरू भयो । चियालाई घरेलु औषधीको रूपमा प्रकाशित कृतिमा उल्लेख छ ।

इतिहास देखिनै चियालाई स्वास्थ्य पेयको रूपमा लिइन्छ । चाइनामा उत्पति कालमा दैनिक उपहारको (Diving Gift) रूपमा चियालाई लिने गरिन्थ्यो । हाल आएर

संसारका विभिन्न ठाँउका प्रसिद्ध प्रयोगशाला तथा अनुसन्धान केन्द्रमा अनुसन्धानले चिया पिउनु मानव स्वास्थ्यको लागि फाइदाकार छ भन्ने कुरा प्रमाणित गरी दिएका छन् । (स्रोत : चिया - कफि स्मारिका, २०६८)

Dr. Edward smith, "Tea will be produced freshness and motivate in main caffeine in tea is tea is motivated as scientific proved."

“ विश्वको इतिहासलाई हेर्ने हो भने चिन चिया खेतीको शुरूवात भएको मानिन्छ, करिब ३०० वर्ष पहिले बाट शुरू भएको चियालाई रोपन टिप्न र त्यसबाट चिया बनाएर खान थालियो साथै चियालाई औषधीको रूपमा पनि प्रयोग गर्न थालियो ।”(Juenong, 1980)

यसरी चिया पिउने बानी विश्वका विभिन्न देश जस्तै भारत, इन्डोनेसिया, श्रीलङ्का र रसियामा फैलियो ।

नेपालमा चिया खेतीको शुरूवात भएको वि.स. १९२० सालमा इलाम जिल्लाबाट भएको हो । निजि स्तरमा वि. स. २०१६ सालमा बृद्धकरण चिया बगानबाट शुरूवात भई सरकारी स्तरमा २०२३ सालमा नेपाल चिया विकास निगमको स्थापना र कृषक स्तरमा चिया खेतीको सुरुवात आ. व. २०३६/२०३७ बाट भएको हो । चिया तथाङ्क अनुसार आ.व. २०६६/६७ भित्र निजि र साना किसानले गरी कुल रोपन क्षेत्रफल १७१२७ हेक्टर र उत्पादन १६६०७५५५ के.जी पुगेको थियो भने निर्यात ८४८९ मे.ट. भएको थियो भने आयत रू. ३६११६००० को मात्र आयत भएको थियो र प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूपमा १ लाख रोजगार छन् । (राष्ट्रिय चिया तथा कफि विकास बोर्ड, २०६८)

“नेपालमा नगदेबाली चिया खेतीले प्रवेश गरेको १५० बढी भएता पनि व्यावसायिक रूपमा यस खेतीको थालनी ४०-५० वर्ष मात्र भएको बुझिन्छ । कृषि व्यावसायको विकासको विभिन्न परिभाषाहरू मध्ये बजारमुखि उत्पादन बोट विरूवाको निरन्तरता भुक्षय नियन्त्रण, वातावरण सन्तुलन, स्वादेशमा रोजगारीको श्रृजना एवं निर्यात योग्य रूपमा चिया व्यावसाय सबै परिभाषा भित्र समेटिएको पाइन्छ ।” (राष्ट्रिय चिया तथा कफि विकास बोर्ड, २०६८)

अन्तरिम संविधान २०६३, देशको अर्थतन्त्रको विकासमा सरकार, सहकारी र निजि क्षेत्रको भूमिकाको उल्लेख भएको छ ।

केन्द्रीय चिया सहकारी संघ लि. नेपालको दोस्रो वार्षिक साधारण र सोहो राष्ट्रिय चिया दिवसको अवसरमा स्मारिका २०७० को मुख्य ध्येय : चिया सहकारीलाई आगर्निक खेती प्रणालीमा व्यावसायिक बनाउदै चिया विस्तार, उत्पादन प्रशोधन, बजारीकरण र चिया पर्यटनको माध्यमबाट आर्थिक सामाजिक, साँस्कृतिक रूपमा विकास गर्दै वातावरणीय सन्तुलन कायम गर्ने यसका १० वटा उदेश्य साथ वैदेशिक मुद्रा आर्जन साथ चियाको आचार संहिता लागु गराई अन्तर्राष्ट्रिय बजार उदार अर्थनिति प्रवर्धन गर्नुलाई चिया खेती र अन्तर्राष्ट्रिय सम्बन्ध प्रष्ट्याउछ ।

“वि.सं. १९२० मा वडाहाकिम कर्नेल गजराज सिंह थापाले वर्माबाट चिया ल्याइ चियाको विरूवा इलाममा रोपेपछि इलाममा मात्र नभइ नेपालमानै चिया खेतीको शुभारम्भ भएको थियो । इलाम, कन्याम, सोक्तम चिया बगान जस्ता ठुला चिया बगान तथा तिनका प्रशोधनका संयन्त्रहरू इलाममा सञ्चालनमा छन् । यसका अतिरिक्त निजि क्षेत्रको नै पूर्ण स्वामित्वमा साँखेजुङ्ग, तिनघरे क्षेत्रमा चिया बगान तथा कारखानाहरू अनि धेरै साना कृषकहरू चियाको हरियो पति उत्पादनमा संलग्न छन् ।” (जिल्ला वस्तुगत विवरण, २०६३)

“इलाम सुस्त गतिमा व्यावसायिक पाएको तर चाडै फैलिएको चिया खेतीले कृषकहरूले यस खेतीलाई मुख्य खेतीको रूपमा अगाल्दै आएको छन् । चिया खेतीमा बिगातमा उत्पादनमा भन्दा पनि बजारको समस्याले पिरोलेका थिए । इलामबाट शुरू भएको अर्थोडक्स चिया खेतीले पूर्वी पहाडका कृषकहरूको लागि आश लाग्ने नगदेबालीको सम्भावना बोकेको छ । इलाममा ५१३०-३५ हेक्टर अर्थोडक्स चिया खेती खेतीमा संलग्न छन् ।नेपालमा निजी क्षेत्रबाट वार्षिक ९९ लाख किलो चिया उत्पादन हुने गर्दछ । जसमा साना किसानले मात्र ६२ लाख किलो चिया उत्पादन गर्दछन् । विदेशमा निर्यात हुने चियाले राजश्वमा टेवा पुयाएता पनि सरकारले चियाको प्रवर्द्धनमा ठोस कार्य गर्न सकेको छैन” (भट्टाराई, २०६७)

“नेपाली चियामा निजी स्रोतको व्यावसायिक चिया खेती प्रारम्भ गरेको चार दशकको अवधी पार गर्दा नगदौँ आन्तरिक खपत पुरा गरी अर्थोडक्स ९० प्रतिशत र सि.टि.सी ६० प्रतिशत निर्यात गर्ने अवस्थामा पुगेको छ ।समग्रमा हेर्दा तराई र पहाडमा कुल १६ हजार हेक्टर जग्गामा चिया खेती गरी वार्षिक १ करोड ६५ लाख के.जी.चिया उत्पादन भैइरहेको छ । नेपालमा कुल कारखाना ४० भन्दा बढि छ । १६ हजार किसान परिवार ५५ हजार

श्रमिकले मात्र हरियो पत्ति टिपाइबाट र अन्य काम गरेर वार्षिक करोडौं विदेशी मुद्रा आर्जन गरी रहेको छ । ९९५ करोड अनुदान उपलब्ध भएका भारतिय चिया उद्योगसँग त्यहीको बजारसँग प्रतिस्पर्धा गर्न नेपाली चिया उद्योगको स्थिति स्वतः अनुमान गर्न सकिन्छ । (कटुवाल, २०६७)

“किसान स्तरमा चिया खेती २०३४ साल देखि जिल्लाको पूर्वी कन्याम फिकलबाट शुरू भयो तर सदरमुकाम उत्तर पश्चिम क्षेत्रमा ६-८ वर्ष पछि मात्र शुरू भएको पाइन्छ । आर्थिक वर्ष २०४०/४१ मा चिया विस्तार योजनाको लागि पानीटार मंगलबारेमा जग्गा खरिद गरी फिक्कल कार्यालयबाटै रेखदेख र सञ्चालन भएको थियो । २०४४/४५ सालदेखि मात्रै कृषक स्तरको कार्यक्रम सञ्चालन हुन थाल्यो ।” (राष्ट्रिय चिया कृषि विकास बोर्ड २०६५) । “पूर्वाञ्चलका दुइ जिल्ला भापा र इलाममा प्रसस्त चिया उत्पादन हुने र आवश्यक मजुदुरहरू प्राप्त गर्न सकिने, यातायातको राम्रो सुविधा भएको कारणले गर्दा यि जिल्लाहरूमा चिया बगानको स्थापना गरी चियाको उत्पादन क्षेत्र र उत्पादकत्व वृद्धि गर्न सकिन्छ भन्ने उल्लेख गरेका छन् । (जोशी, १९७८) अधिकारीको नेपाली चिया निर्यात सम्बन्धित अध्ययनको निष्कर्षमा नेपाली अर्थोडक्स चियाले विदेशी मुद्रा आर्जन गर्न नेपाली चियाको अन्तर्राष्ट्रिय बजारमा भविष्य राम्रो रहेको छ । (अधिकारी, २००५)

"Nepal is primarily an agricultural country. It has a population of 30 million, 66 percent of whom are farmers and more than 85 percent of those farmers live in rural areas with marginal land holdings. The farmers usually engage members of their families as inputs in cultivation." Engaging and promoting family tea farmers through cooperative Nepal written by Rabin Rai UN FAO ROOTS 2014 pg.157—158

“उदारीकरण र शहरीकरणको प्रभावले साना तथा मझौला उद्योगबाट उपलब्ध रोजगारीको अवसरले गर्दा खास गरी लोग्ने मानिसहरू यस्ता गैर कृषि काममा संलग्न हुन शहर तथा विदेश जान रुचाउछन् तथा बाध्य पनि छन् । फाइदा तथ्य सामाजिक इज्जतको कारणले मानिसहरू यस्ता काममा लागेका छन् । कृषि क्षेत्र अहिले तुच्छ पेशा बन्न गएको छ । अन्यत्र काम नमिलेमा मात्र मानिसहरू खेती गर्न तिर लाग्छन् । यसकारण नेपाल लगायत, विकशील देशहरूमा खेती महिला तथा बुढाबुढीको जिम्मामा जान थालेको छ । पहिला देखि नै महिलाले खेती र घरको कामको धेरै अंश ओगटेने हाल आएको परिवर्तनले गर्दा उनीहरू घरको बोझमा निकै बृद्धि भएको छ । (स्रोत: नेपालको सन्दर्भमा समाजशास्त्रिय चिन्तन सम्पादक मेरि डेसन, प्रत्युष पन्त, २००४-२००५)

## अध्याय – तीन

### अनुसन्धात्मक विधि र प्रक्रिया

#### ३.१ अनुसन्धान ढाँचा

प्रस्तुत “इलाम जिल्ला साँखेजुङ्ग गा.वि.स.को चिया खेती र यसको आर्थिक र सामाजिक सम्बन्धको अध्ययन” शीर्षकमा आधारित भई तथ्याङ्क सङ्कलन गरी परम्परागत गुजारामुखि कृषिबाट निर्यातमुखि चिया खेतीको शुरूवात र उत्पादन, बिक्रीले यस क्षेत्रका मानिसहरूमा परेका सूक्ष्म देखि बहृत प्रभावको बारेमा वर्णनात्मक र अन्वेशणात्मक अनुसन्धात्मक ढाँचामा रहेर प्रत्यक्ष अवलोकन र सहभागिता भई आपसी तथ्याङ्क तथा सूचना सङ्कलन गरिएको छ ।

#### ३.२ अध्ययन क्षेत्र छनोटको औचित्यता

प्रस्तुत प्रस्तावित अध्ययन अनुसन्धान कार्य सम्पन्न गर्नका निम्ति इलाम जिल्लाको उत्तर पश्चिममा अवस्थित साँखेजुङ्ग गा.वि.स.छनोट गरिएको छ । यस क्षेत्रमा मुख्य पेशा कृषि र प्रायः सबै कृषकहरूले चिया खेतीतर्फ आकर्षित भएकाले यस क्षेत्रको यथार्थ अवस्था प्राप्त गरी सरकारी, निजी, साना कृषकहरू योगदान कस्तो छ र कृषक सामुहिक संगठित भई चिया पत्ती बिक्री गर्नुका फाइदा के कस्ता छन् र निजि क्षेत्र तथा समुहिक सक्रियतामा के कति साना देखि ठुला प्रशोधन कारखाना खोलेका छन् वर्तमान यस खेती देखिएका अनेकौ समस्या र अर्गानिक चियाको सम्भावना र विश्व बजारसँगको प्रतिस्पर्धाका चुनौती तथा यहाँका कृषकहरू र युवा जमातमा निराशा पैदा भई कृषकहरू नयाँ बैकल्पिक खेती तथा युवाहरू प्रायः वैदेशिक रोजगारमा गएका छन् र सिमित स्रोत साधान र पर्याप्त मात्रामा आवश्यक तथ्याङ्क छिटो छरितो र सहभागितामूलक अध्ययन गरी क्षेत्र निम्ति भौगोलिक यातायात र सुरक्षा आदि दृष्टिकोणबाट उपयुक्त भएकाले सम्बन्धित अनुसन्धान अत्यन्तै कम भएकाले यसले राष्ट्रिय तहदेखि यस सम्बन्धित निति निर्माण गर्नमा साथै व्यापार प्रवर्धनमा ध्यानाकर्षण गर्न सक्ने भएकोले यस साँखेजुङ्ग गा.वि.स.मा अनुसन्धान गर्न रूची भई यो क्षेत्र छनोट गरिएको छ ।

### ३.३ तथ्याङ्कको प्रकृति

प्रस्तावित अध्ययन अनुसन्धान कार्यको निम्ति प्राथमिक र द्वितीय स्रोतबाट सूचना सङ्कलन गर्नुको साथै प्राथमिक तथ्याङ्कको निम्ति उक्त स्थानमा गएर सहभागितामुलक अध्ययन अवलोकन, कामदार सहकर्मीसँगको कुराकानी, त्यस स्थानका कृषकसँग कुराकानी र चिया सम्बन्धी विशेष व्यक्तिसँगको प्रश्नवाली साथै द्वितीय तथ्याङ्क सङ्कलनको निम्ति यससँग सम्बन्धित विभिन्न अनुसन्धानकर्ताको किताबहरू, पत्र-पत्रिका, शोधपत्र र प्रतिवेदनहरू मार्फत सङ्कलन गरिएको छ । यस विषय सम्बन्धित अनुसन्धान कार्य सम्पन्नका लागि गुणात्मक र मात्रात्मक दुवै विधीलाई बढी जोड दिइएको छ ।

### ३.४ तथ्याङ्कको स्रोत

प्रस्तुत प्रस्तावित अध्ययनका लागि आवश्यक तथ्याङ्क तथा सूचना प्राथमिक र द्वितीय दुवै स्रोतहरू छन् ।

#### ३.४.१ प्राथमिक स्रोत

अनुसन्धानको क्रममा छनोट गरिएका नमुना उत्तरदाता र सरोकारवालासँग अन्तरक्रिया मार्फत तथा अनुसन्धानकर्ता कम क्षेत्रमा गएर देखेर सुनेर रेकर्ड गरेर वा अनुभव मार्फत सङ्कलन गरेका सूचनाहरू तथ्याङ्क छन् ।

#### ३.४.२ द्वितीय स्रोत

प्रस्तावित अध्ययन अनुसन्धानको क्रममा यससँग सम्बन्धित विषयवस्तु र उद्देश्य अनुरूपका मिल्दा सन्दर्भ सामाग्रीको रूपमा प्रकाशित पुस्तक, पत्रिका, प्रतिवेदन, तथ्याङ्क, शोधपत्र, वेबसाइट, पुस्तिका आदि द्वितीय स्रोत आधारमा तथ्याङ्क सङ्कलन गरिएको छ ।

### ३.५ तथ्याङ्क सङ्कलन विधि तथा औजार

यस शोधकार्यको लागि विभिन्न विधि रहेका छन् जसमा गुणात्मक र मात्रात्मक विधिबाट तथ्याङ्कहरू सङ्कलन गरिएको छ ।

### ३.५.१ अवलोकन

यस अध्ययनको क्रममा आफै चिया खेतीमा संलग्न रही अवलोकन विधि मार्फत महत्वपूर्ण तथ्याङ्क सङ्कलन गरी कृषक र कामदारसंग करिब ६ महिनासम्म घनिष्ठ भई सँगै काम गरी प्राप्त कुराहरू सङ्कलन गरी तथ्याङ्कहरूलाई विश्वसनिय बनाएको छु ।

### ३.५.२ अन्तरवार्ता

अन्तरवार्ता धेरै महत्वपूर्ण तथ्याङ्क सङ्कलन विधि हो । यसले तथ्याङ्कहरूलाई अभि विश्वसनिय प्रदान गर्ने हुँदा यस शोधकार्यका तथ्याङ्क सङ्कलनका लागि स्थानीय कृषक, विषयविज्ञ, कारखाना सम्बन्धित व्यक्तिहरूसँगको अन्तरवार्ता तथा एकअर्का बिचको कुराकानीबाट तथ्याङ्क सङ्कलन गरेको छु ।

### ३.५.३ प्रश्नावाली

प्रश्नावाली मार्फत गुणात्मक तथ्याङ्क सङ्कलनमा धेरै सहयोग गर्ने हुँदा शोधकार्यको तथ्याङ्क सङ्कलनका लागि शोधकर्ताले सूचना सङ्कलन गर्नको लागि खुल्ला र बन्द प्रश्नावाली समावेश गरिएको छ ।

### ३.५.४ तथ्याङ्क सङ्कलनका औजारहरू

यस शोधकार्यको तथ्याङ्क सङ्कलनका लागि क्यामारा, आवश्यक कपि, कलम, भोला लगायतका आदि समान प्रयोग गरिएको छ ।

### ३.५.५ व्यक्तिगत अध्ययन

यो शोधपत्रमा एउटा आवश्यक विधि हो जसले गुणात्मक तथ्याङ्क सङ्कलन गर्नका साथै विशिष्ट अध्ययनको रणनीतिमा महत्वपूर्ण भुमिका खेलेको छ ।

### ३.६ तथ्याङ्क विश्लेषण

यो कुनै पनि प्राप्त सूचना र प्रश्नावालीका उत्तरलाई व्याख्या तथा विश्लेषण गरिन्छ । यसमा दुबै गुणात्मक र मात्रात्मक तथ्याङ्क विश्लेषण गरी प्रमुख रूपमा प्राथमिक स्रोतको तथ्याङ्क विश्लेषण गरिए पनि द्वितीय स्रोतलाई जस्तै: पत्रपत्रिका, पुस्तक, प्रतिवेदन र अनुसन्धानकर्ताहरूले प्रयोग गरी प्राप्त तथ्याङ्कहरूलाई सरल तथा सहज बनाई



अध्ययनलाई स्पष्ट बनाउनका लागि तथ्याङ्क सङ्कलन तथा विश्लेषण गर्दै त्यसैअनुरूप तालिका टेबल, प्रतिशत प्रस्तुत गरिएको छ ।

### ३.७ अध्ययनको सीमा

यो अनुसन्धान शैक्षिक उपाधि प्राप्तिका लागि सम्पन्न गरिन्ने हुँदा आर्थिक तथा भौतिक स्रोतको कमि हुने हुँदा अध्ययनको नतिजामा यसको असर असर पर्नसक्छ । इलाम जिल्लाको साँखेजुङ्ग गा.वि.स.मा मात्र सिमित हुने भएकाले यसको नतिजा समग्र देशको चिया खेतीले सम्बन्धी अध्ययन नसमेट्न सक्छ । तसर्थ: यो अनुसन्धान एउटा निश्चित संस्थामा मात्र सिमित रहेर गरिन्ने भएकाले सन्दर्भ सामाग्रीहरूको अभावका कारण यस सम्बन्धित सर्वेक्षण तथा सूचना शतप्रतिशत ठिक नहुन सक्छ र यो शोधकार्य शैक्षिक उपलब्धी प्राप्तिका लागि भएकाले विधार्थी वा शोधकार्यमा व्यक्तिको व्यवहार र सैदान्तिक ज्ञानको कमीले अध्ययनको महत्वपूर्ण कुरा नसमेट्न सक्छ र नतिजा फरक हुनसक्छ ।

## अध्याय—चार

### अध्ययन क्षेत्रको सामान्य परिचय

#### ४.१ साँखेजुङ्ग गा.वि.स.को सामान्य परिचय

नेपालको सुदूरपूर्वको हरित जिल्ला ईलाम सदरमुकाम देखि करिब १७ कि.मि. उत्तरमा अवस्थित रहेको छ । यस साँखेजुङ्ग गा.वि.स. पूर्वमा बरवोटे र माईपोखरी गा.वि.स., पश्चिममा चमैता, पश्चिम दक्षिणमा शान्तिडाँडा, उत्तरपूर्वमा पूवामभुवा र दक्षिणमा शान्तिडाँडा गा.वि.स. पर्दछ । समुद्र सतहबाट ९३० मिटर देखि २१०२ मिटरसम्मको उचाईमा रहेको यस गा.वि.स.को कुल क्षेत्रफल १७१६ वर्ग कि.मि. रहेको छ । ब्राम्पण, क्षेत्री, राई, लिम्बु, गुरुङ्ग, मगर, शेर्पा, तामाङ्ग, विश्वकर्मा, दर्जि, खवास, सुनुवार आदिवासी जनजाती बसोबास गरेको यस गा.वि.स.मा कुल घरधुरि संख्या ७३१ रहेको छ । कुल जनसंख्या ३८७२ रहेकोमा ८४.३१ प्रतिशत जनसंख्या साक्षार छन् ।

यस गा.वि.स. को नामाकरणको बारेमा स्पष्टता नभएता पनि बुढापाका, बुद्धिजिवि र सर्वसाधारणको भनाइ अनुसार साँखेजुङ्ग भन्ने शब्द लाच्चा भाषाबाट साँखे भन्नाले ठुलो साँडे गोरु र जुङ्ग भन्नाले बस्ने ठाँउ भन्ने बुझिन्छ । माथिल्लो भेगमा अत्यन्तै ठुलो जङ्गलले ढाकिएको थियो । सोहि जङ्गलमा साँडे गोरू बस्ने हुँदा साँखेजुङ्ग नाम रहन गएको भन्ने भनाई छ । यस्तै साँखेजुङ्ग लाई साखेपातल नामबाट पनि उल्लेख गरेको पाइन्छ । समय बित्दै जाँदा यो ठाँउ ताप्लेजुङ्ग र पाँचथर आदि भागबाट तराई भर्ने बाटोको रूपमा विकशित भएकोले मानिसहरूका आकर्षणको केन्द्रको रूपमा विकशित हुन मौका पनि पायो । (स्रोत : वस्तुगत विवरण तथा आवधिक दिगो विकास योजना साँखेजुङ्ग, इलाम, २०६९)

#### ४.२ हावापानी र वातावरण

साँखेजुङ्ग गा.वि.स. पहाडी क्षेत्रमा पर्ने हुनाले यहाँको हावापानी समशितोष्ण रहेको यस गा.वि.स.को अति उचाइमा रहेको चमैता गा.वि.स.को सिमानामा न्युनतम तापक्रम १ डिग्री सेन्टिग्रेटसम्म हुने र अधिकतम तापक्रम सबैभन्दा तल्लो भाग वडा नं. १ पूवाखोला क्षेत्रमा गर्मी मौसममा २७ डिग्रीको हाराहारीमा रहेने अनुमान छ । यस क्षेत्रमा बढी वर्षा हुने हुँदा चिया खेतीका लागि उपयुक्त स्थान मानिन्छ । (स्रोत: गा.वि.स. कार्यालय, २०६९)

### ४.३ जनसंख्याको आकार

यस साँखेजुङ्ग गा.वि.स.को विभिन्न समयमा गरिएका सर्वेक्षण अनुसारको जनसंख्या वनोट विवरण निम्न छ

तालिका नं. १

जनगणाना तथा घरधुरी सर्वेक्षणको आधारमा जनसंख्या विवरण

| सि.नं. | जनसंख्या विवरण             | घरधुरी सर्वेक्षण<br>२०६३ | घरधुरी सर्वेक्षण २०६९ |
|--------|----------------------------|--------------------------|-----------------------|
| १.     | ग.वि.स.को कुल घरधुरि विवरण | ७३१                      | ८८७                   |
| २.     | ग.वि.स.को कुल जनसंख्या     | ३८७२                     | ४२१२                  |
| ३.     | परिवारको औषत सदस्य संख्या  | ५.२                      | ४.७४                  |

स्रोत: गा.वि.स. कार्यालय, साँखेजुङ्ग, २०६९

इलाम जिल्लाको साँखेजुङ्ग गा.वि.स. को जनसंख्या वि.सं. २०६८ (सन् २०१५) को अनुसार साँखेजुङ्ग गा.वि.स.को जम्मा घरधुरि संख्या ९३२ र लिङ्गका आधारमा महिला २१२८ र पुरुष १९१७ जना रहेको छ । (केन्द्रीय तथ्याङ्क विभाग, २०६८)

### ४.४ जाती/जनजाती

यस गा.वि.स. मा विभिन्न जातजातीको बसोबास रहेको छ । तुलनात्मक रूपमा ब्राहमण/क्षेत्रीको संख्या केही बढी देखिन्छ । यस गा.वि.स.मा बसोबास गर्ने जनजातीहरूको विवरण निम्न अनुसार रहेको छ

तालिका नं. २

जाती/जनजाती अनुसार जनसंख्या विवरण

| क्र. सं. | जाती/जनजाती      | संख्या | प्रतिशत |
|----------|------------------|--------|---------|
| १.       | ब्राहमण/क्षेत्री | १४८०   | ३५.१४   |
| २.       | राई              | ९९७    | २३.६७   |
| ३.       | लिम्बु           | २३९    | ५.६७    |
| ४.       | मगर              | ११६    | २.७५    |
| ५.       | तामाङ्ग          | १४७    | ३.४९    |
| ६.       | गुरुङ्ग          | ४६६    | ११.०६   |
| ७.       | विश्वकर्मा       | २४५    | ५.८२    |
| ८.       | दर्जी            | १२२    | २.४९    |
| ९.       | सार्की           | ४      | ०.०९    |
| १०.      | भुजेल/खवास       | ६१     | १.४५    |
| ११.      | सुनुवार/सुनुवार  | १८     | ०.४३    |
| १२.      | शेर्पा           | १८५    | ४.३९    |
| १३.      | जोगी             | ४४     | १.०४    |
| १४.      | तराइवासी         | ४      | ०.०९    |
| १५.      | देवान            | ४      | ०.०९    |
| जम्मा    |                  | ४२१२   | १००.००  |

स्रोत: वस्तुगत विवरण तथा आवधिक दिगो विकास योजना साँखेजुङ्ग, इलाम, २०६९

#### ४.५ धर्म अनुसार जनसंख्या विवरण

यस गा.वि.स. को धार्मिक अवस्थालाई हेर्दा यहाँ हिन्दु, किराँत, बौद्ध, ईसाइ, इस्लाम धर्म मान्ने मानिसहरू वसोबास गरेको पाइन्छ। धार्मिक सहिष्णुताका हिसाबले उदाहरणीय र विविधतापूर्ण रहेकोले नेपालको उदाहरणीय रूपमा यस गाविस लिन सकिन्छ। गणतन्त्रको स्थापना पश्चात धार्मिक स्वतन्त्रता र धर्म निरपेक्षता भएकाले हिन्दु बाहेक अन्य धर्ममा खुलेर मान्ने मानिसहरूका संख्या बढेको छ।

यस गा.वि.स.को जनसंख्यालाई धर्मको आधारमा गरिएको वर्गिकरण निम्न तालिकामा प्रस्तुत गरिएको छ

तालिका नं. ३

धर्मको आधारमा जनसंख्या

| क्र. सं. | धर्म   | संख्या | प्रतिशत |
|----------|--------|--------|---------|
| १.       | हिन्दु | २०५७   | ४८.८४   |
| २.       | किरात  | ११२४   | २६.६८   |
| ३.       | बौद्ध  | ९९६    | २१.७४   |
| ४.       | ईसाइ   | ६०     | १.४३    |
| ५.       | ईस्लाम | ७      | ०.१७    |
| ६.       | अन्य   | ४८     | १.१४    |
| जम्मा    |        | ४२१२   | १००.००  |

स्रोत :आवधिक दिगो विकास योजना सांखेजुङ्ग गा.वि.स., इलाम २०६९

#### ४.६ स्वास्थ्य संस्था

यस गा.वि.स.को वडा नं. ७ स्थित नेपालटार बजारमा एक स्वास्थ्य चौकी रहेको छ । यस इलाम जिल्लाको अन्य गा.वि.स.हरूमा भन्दा स्वास्थ्य सम्बन्धि पूर्वाधार रहेको यसै हाता भित्र सरकारी तथा विभिन्न गैसरकारी संघसंस्थाहरूको आर्थिक तथा भौतिक सहयोग मार्फत एक प्रसुति गृह निर्माण गरी सेवा दिदै आएको छ । ३ वटा निजि औषधी पसल रहेको छ भने विभिन्न वडामा खोप केन्द्र रहेका छन् । यस गा.वि.स.मा ४ कर्मचारी दरबन्दी रहेकोमा अ.हे.वा.२ , स्वास्थ्य साहायक (सि.अ.हे.ब.) १ र अनमी १ कार्यरत छ । यस गा.वि.स.मा ३ जना तलम प्राप्त सुडेनीहरू रहेका छन् भने वडागत १ जना स्वास्थ्य स्वयमसेविकाहरू रहेका छन् । यस गा.वि.स.को करिव ८९.२८ प्रतिशत घरधुरी सबैभन्दा पहिला उपचारमा स्वास्थ्य केन्द्र जाने भने अर्भै पनि रितिरिवाज र अन्धविश्वासका कारण ५.६३ प्रतिशत सबभन्दा पहिला धामीभाक्री कहाँ जाने गरेको विभिन्न तथ्याङ्कले देखाउछ ।

यस गा.वि.स.मा १ वर्षभरि कुनैपनि महिला सुत्केरी अवस्थामा अकालमा मृत्यु भएको देखिन्न जसले मातृमृत्युदर ० देखिन्छ भने बालमृत्युदर भने वर्षभरिमा जन्मन्न वित्तिकै अकालमा मृत्यु भएका बालवालिका संख्या २ भएको देखिन्छ । परिवार नियोजनको सवालमा यस गा.वि.स.मा स्थायी परिवार नियोजन गर्ने महिला बढी तथा अस्थाई परिवार नियोजन गर्ने पुरुष बढी देखिन्छ । (स्रोत : गा.वि.स. कार्यालय सांखेजुङ्ग, २०६९)

## ४.७ विद्युत/उर्जा

यस गा.वि.स.मा विद्युत २०५२/५३ सालतिर केन्द्रीय राष्ट्रिय प्रसारण लाइनको सेवा दिन थालेको हो । हाल यस गा.वि.स. मा ८३ प्रतिशतले विद्युत सेवा उपभोक्त गरेको छ र त्यसै गरी २.२५ प्रतिशत मट्टीतेलको उपयोग भने १४.६५ ले भने उपयोक्त गरेको देखिन्दैन । यस भन्दा अगाडी यहाँका स्थानीय खोहानालाबाट दुई तिन घर मिलि साना क्षमताका पेल्ट्रसेट ६०० बाट देखि किलोवाट सम्मको कृषि विकास बैंक ऋण र अनुदान मार्फत घर घरमा विजुली बालेको अवस्था थियो तर राष्ट्रिय प्रसारण लाइनले यसलाई विस्थापन गरेको छ । सरकारले लोडसेडिङ हटाउन विकल्पमा सोलर ५० प्रतिशत छुट दिने घोषणाले यस गा.वि.स.मा सोलर सेवा लिइरहेको र अझ लिन इच्छुक व्यक्तिहरूलाई प्रोत्साहन मिल्ने देखिन्छ । यस गा.वि.स. जम्मा घर संख्या ८८७ मा मट्टीतेल २० घर, पेल्ट्रसेट १, राष्ट्रिय प्रसारण लाइन ७३६ घरले विद्युत सेवा लिइरहेका छन् । विद्युतको सुविधाले गर्दा यस क्षेत्रमा खोलेका चिया सम्बन्धी उद्योगलाई पनि धेरै सहयोग पुगेको छ । (स्रोत : आवधिक दिगो विकास योजना साँखेजुङ्गा गा.वि.स. इलाम, २०६९) ।

## ४.८ सडक र यातायात

यस गा.वि.स. सडक र यातायात दृष्टिकोणले सबल रहेको छ । चारआली देखि ताप्लेजुङ्गाको मेची राजमार्गले यस गा.वि.स.को वडा नं. ५, ६, ७, ९ लाई छोएर गएकोले यहाँ सडक स्थिति राम्रो रहेको छ । प्राय गा.वि.स.को सबै वडामा कच्ची सडकको सुविधा पुगिसकेको छ । यसै गरी वडा नं. ७ नेपालटारबाट मंगलबारे जोड्ने कृषि सडकले वडा नं. ४, ५, ६, ७ लाई छोएको छ । हाल यस सडक कालोपत्रे बनिसकेको छ तर जुन शान्तिडाँडा र साँखेजुङ्गाको बिच भुत्रेखोलामा पुल नबन्दा वर्षा याममा गाडी तथा मानिस आवतजावतमा बढी नै समस्या रहेको छ । यसैगरी पूवाखोला नजिकको बन्चरे गोलाइ हुदै वडा नं. ३, २, ४, १ सम्म विस्तार भई वडा नं. ३ को चिया कारखानालाई सुविधा पुगेको छ । त्यसैगरी वडा नं. ५ स्थित त्रिवेणी चोक हुदै मंगलबारे जोड्ने सडक रहेको छ । निर्माणधिन कच्चा सडकहवाट हिउँद महिनामा हलुका सवारी साधानहरू आवतजावत गर्दछ । वर्षा याममा ट्याक्टर गुडेपनि अलि समस्या छ । यि सडकले अन्य गा.वि.स. सँग जोडिन्ने हुँदा कृषिजन्य उत्पादन र खाद्यन्न ढुवानी गर्न सुविधा भएको छ । मुख्य रूपमा चिया कृषकले हरियो चिया कारखानामा बेच्न र कारखानाले चिया खरिद गर्न सुविधा भएको छ ।

तालिका नं. ४

सडक यातायात पहुँच सम्बन्धी केही विवरण

| क्र.सं. | सडकको नाम              | लाभान्वित वडा | लाभान्वित घर संख्या | सडक लम्बाई कि.मि |
|---------|------------------------|---------------|---------------------|------------------|
| १.      | सडक                    | १             | ४०                  | १०               |
| २.      | नेपालटार लामागाँउ      | ३             | २००                 | ५                |
| ३.      | सेतीदेवी देखि खोलासम्म | ३             | ४००                 | २                |
| ४.      | देवेन्द्र घाट सडक      | ४             | ०                   | ५                |
| ५.      | बन्चरे सडक             | ४             | ०                   | ५                |
| ६.      | माथिल्लो मंगलबारे सडक  | १             | ३५                  | २                |
| ७.      | जलजले मोटरबाटो         | ५             | २०                  | ८                |
| ८.      | गैरीबाँस भुत्रे सडक    | ५             | २५                  | २                |
| ९.      | नेपालटार लामागाँउ      | ६             | २००                 | ६                |
| १०.     | खत्री गोलाई सेतीधारा   | ७             | १०                  | १                |

स्रोत: गा.वि.स. साँखेजुङ्ग, इलाम, २०६९

यस गा.वि.स.मा विभिन्न वडासँग सडक संजाल विस्तार भई कृषि उत्पादन बिक्रिमा सहयोग पुग्नुका साथै आयस्रोतको बाटो बढेको छ । मुख्य रूपमा चिया कृषक र कारखाना धनी चिया खरिद बिक्रिमा ठुलो सहयोग पुगेको छ । कच्ची सडकका कारण हिउँद याममा कठिनाई हुनाका साथै कालोपत्रे सडकमा जान पर्ने बाध्यता र जाने समय बढी कम्तिमा ३० देखि १ घण्टा लाग्ने गर्दछ । सडकको स्तर उन्नतीका निम्ति सडकको चौडाइ, नली निर्माण, ग्रेभल, गर्नुपर्ने देखिन्छ ।

#### ४.९ शिक्षाको अवस्था

यस गा.वि.स. को समग्रमा शैक्षिक अवस्था हेर्दा सन्तुष्टि नै देखिन्छ । यस गा.वि.स.को जम्मा साक्षरता दर ८१.०२ प्रतिशत रहेको छ ।जसमा महिला ८१.७५ र पुरुष ८४.५५ प्रतिशत रहेको छ । यस गा.वि.स.मा निजि तथा सरकारी विद्यालय रहेको साथै सरकारको साक्षरता अभियान अनुसार प्रत्येक वर्ष प्रौढ शिक्षा दिने गरेका छ । यस गा.वि.स.का शैक्षिक अवस्था बारे तल तालिकामा दिएको छ जसमा ६ वर्षका समावेश छ

तालिका नं. ५

शैक्षिक अवस्था

| सि.नं. | कक्षा      | पुरुष | प्रतिशत | महिला | प्रतिशत | जम्मा | प्रतिशत |
|--------|------------|-------|---------|-------|---------|-------|---------|
| १.     | एस.एल.सि.  | २२३   | १०.८२   | १६८   | ९.२७७   | ३९१   | १०.०९   |
| २.     | +२, स्नातक | १०९   | ५.२८९   | ७९    | ४.३६२   | १८८   | ४.८५५   |
| ३.     | स्नातकतोर  | ३८    | १.८४    | ४१७   | ०.९४    | ५५    | १.४२०   |
| ४.     | डीग्री     | १८    | ०.८७३   | ५     | ०.२७६   | २३    | ०.५९४   |
| ५.     | साक्षर     | १५१९  | ७३.७०   | १४३३  | ७९.१३   | २९५२  | ७६.२३   |
| ६.     | निरक्षर    | १६२   | ७.४७    | २७०   | ६.०१८   | ४३२   | ६.७९२   |
| जम्मा  |            | २०६१  | १००.०   | १८११  | १००.०   | ३८७२  | १००.०   |

स्रोत: आवधिक दिगो विकास योजना साँखेजुङ्ग, इलाम २०६९

यसै यस गा.वि.स.को शैक्षिक अवस्थालाई विभिन्न आर्थिक आयआर्जनले ठुलो प्रभाव पार्ने गर्दछ । उचित शिक्षा दिक्षाका निम्ति आर्थिक बलियो भए उच्च शिक्षामा लगानी गर्नेछन् । यस गा.वि.स. मा +२ निर्माणले थुप्रै विधार्थी स्नातक तह अध्ययनका लागि यस यस गा.वि.स.बाहेक अन्य छिमेकी गा.वि.स. बाट आउदछन् । विहानको पढाइ सकेर चिया टिपाइमा जाने र थप पढाइका लागि रकम जम्मा गर्न सकेका छन् । यस भन्दा अगाडी सदरमुकाम र उच्च तहका लागि काठमाडौँ जानु पर्ने बाध्यता थियो । जसमा खर्च कमीले पढाइ रोकिन्थ्यो । चिया खेती केही मात्रमा भए प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूपमा शैक्षिक क्षेत्रमा सहयोग गरिरहेको छ । अर्को पक्ष वैदेशिक रोजगारी गएर पनि अभिभावकले देखासिकी होस वा गुणस्तरीयता, राम्रो पढाइ, अंग्रजी जान्ने बनाउन जुन भुमण्डलीयको प्रभावको मागले गर्दा प्रायः दुख गरेर आवसिय (बोडिङ्ग) पढाउन चलन छ । यसै गा.वि.स. मा श्री रत्न प्रतिष्ठान नाम मार्फत (CTEVT) प्रविधिक शिक्षालयको भौतिक संरचना निर्माण कार्य धमाधम भइरहेको छ जसले भविष्यमा

केन्द्रीय तथ्याङ्क विभागका अनुसार देशभरिको जम्मा साक्षरता दर ६५.९ प्रतिशत छ । महिला ५७.४ र पुरुष ७३.१ % रहेको देखाउछ । काठमाडौँ सबभन्दा बढी ८६.३ प्रतिशत र रौतहट ४१.७ प्रतिशत सबभन्दा कम छ । (स्रोत : केन्द्रीय तथ्याङ्क विभाग, २०६८)



## ४.१० घर निर्माणको अवस्था

यस गा.वि.स. मा घर निर्माण सामाग्री भने ढुङ्गा र माटोको छाना भने टिन र खरको र अस्थाइ घर भने चित्रा र प्लाटिक पालले छापेर बाँसको प्रयोग गरेको पाइन्छ । तर अहिले खासै खारका घर देख्न पाइन्दैन । खर बारीहरू चिया बारीमा परिणत हुनु, यसको कटाइको श्रमिक मूल्य बढीह हुनु पनि हो । अहिले यस स्थानमा यातायात सुविधाले गर्दा पनि अलमुनियम टिनका छाना पायः प्रत्येकको घरमा र बढी कोठा र बेग्लै भन्साकोठाको पनि व्यावस्था गरिएको पाइन्छ । २०६८ र २०७१ का भुकम्पले भने केही मानवीय क्षति गरेन तर यि ठुला तले घरमा सामान्य क्षति पुगेको छ । यसले पनि मानिसहरू प्राय भुइ तले घर निर्माण गरिएको पाइन्छ । सिमेन्ट तथा रडको पनि प्रयोग गरिएको पाइन्छ । यस गा.वि.स.मा आर.सि. घर निर्माण पनि दिन दिनै बढेको पाइन्छ । २०६८ को तथ्याङ्क अनुसार यस गा.वि.स.मा रहेका घरधुरी संख्या ८८७ मा घरका किसिम अनुसार विभाजन संख्या कच्चा फुसको १०२ आर.सि.सि. २३, टिनको छाना ७६२ रहेको छ । (स्रोत :आवधिक दिगो विकास योजना, २०६९)

## अध्याय-पाँच

### साँखेजुङ्ग गा.वि.स. मा चिया खेतीको सामाजिक र आर्थिक प्रभाव

#### ५.१ चिया खेतीको सामाजिक प्रभाव

यस गा.वि.स.का कुल घरधुरी संख्या ८८७ र १५ प्रकारका जाती/जनजाती रहेको पाइन्छ। यहाँका मानिसहरू कृषि तथा पशुपालनका आवद्ध रहेको पाइन्छ। कृषिमा विभिन्न अन्नबाली बाहेक नगदेबाली अदुवा, अलैची, अम्लिसो बाहेक चिया खेती मुख्य रहेको पाइन्छ। युगौ देखि एक आपसमा सहयोग परमअर्मा गरी कामलाई सजिलै सक्ने गर्दथ्यो। वर्तमान समयमा यो परम्परालाई तोड्दै श्रमलाई रकममा बदलेको अवस्थामा उत्पादन उपभोक्ताले विविध पक्ष सामाजिक, आर्थिक, साँस्कृतिक, राजनीति र जनसंख्या स्थितिमा प्रभाव पारेको छ। चियाको आयु हजारौ वर्ष बाँच्ने सक्ने अन्य खेती भन्दा यसमा रोग कम लाग्ने हुँदा र भिरालो जमिन र खाली पाखामा रोप्न मिल्ने हुँदा पनि यस तर्फ यस गा.वि.स.का मानिसहरूमा चिया खेतीले पनि केही प्रभाव र आकर्षण बढेको पाइन्छ। (स्रोत : गा.वि.स. कार्यालय, साँखेजुङ्ग, २०६९)

#### ५.१.१ स्वास्थ्य क्षेत्रमा परेको प्रभाव

स्वास्थ्य क्षेत्रमा यस गा.वि.स.मा मानिसहरू निकै सचेत रहेको पाइन्छ। यहाँ १ हेल्थपोष्ट र एक प्रसुति गृह रहेको छ। महिला गर्भवती अवस्थामा अनिवार्य जाँच गर्ने गरेमा पाइन्छ र बच्चालाई पनि खोपको मात्रा पुरै दिएको देखिन्छ। यहाँ थुप्रै निजी क्लिनिकहरू पनि खोलेको छ। ठुला दीर्घ रोगका लागि भने जिल्ला अथवा भापा, धरान चितवन, काठमाडौँदेखि भारतका विभिन्न अस्पतालमा लाने गरेको पाइन्छ। यहाँ मानिसहरू स्वास्थ्य प्रति कुनै सम्झौता नगरेको पाइन्छ। जुन चिया खेती पनि एक मानिन्छ र वर्तमान समयमा अर्गानिक चिया प्रति सकारात्मक धारण पनि स्वास्थ्य चेतनाको रूप लिन सकिन्छ।

#### ५.१.२ पेशा सम्बन्धी जानकारी

यस गा.वि.स.को स्रोत भनेको कृषि पेशा हो। नेपाल कृषिमा आधारित अर्थतन्त्र भएका मुलुक भएका कारणले पनि यस गा.वि.स.को मुख्य स्रोत कृषि हुनु स्वाभिक हो।

मानिसहरू कृषिमा आवद्ध रहेका छन् र कृषि बाहेक अन्य क्षेत्रमा आवद्ध छन् । कुनै पनि ग्रामिण अर्थतन्त्रलाई प्रभाव मुख्य रूपमा उक्त स्थानको आम्दामी स्रोतमा भर पर्ने हुँदा त्यसै अनुरूप खर्च गरी जिवनशैलीमा प्रभाव वा फरक पर्ने गर्दछ ।

यस गा.वि.स. मा कृषिमा चिया मुख्य खेती पर्दछ । यस खेती नगदे खेतीको रूपमा लिइन्छ । चिया खेती गर्ने कृषकले टिपेर कारखानाबाट पठाइएको गाडी भए स्थान जहाँ उपयुक्त छ त्यस स्थानमा लगेर कुन स्तरको टिपाइ ९० वा ८० प्रतिशत तोक्री बिल लिएको केही समयमा मात्र कृषकलाई रकम दिने गरिन्छ । यस बाहेक यस गा.वि.स.मा अदुवा, अलैची, अम्लिसो, आलु आदि खेती गर्ने गरेपनि चिया खेती एक पटक रोपेपछि नमासिन्ने र बषौ नटिपेर फेरि काँटछाँट गरी पुनः त्यसै गरी आम्दामी लिन सकिन्छ । यसको लागि हेरचाह, मलजल, बोटमा लाग्ने रोगको रोकथाम, कटिङ्ग र टिपाइमा ध्यान दिनुपर्छ । यो एउटा भविष्य सम्म पुस्तौ आम्दामीको स्रोत हो । यस गा.वि.स.मा अन्य खाद्यवाली धान, मकै, गहुँ, कोदो आदि खेती पनि नभएका हैना तर धेरै स्याहार र मौसम अनुकूल हुँदा मात्र फसल राम्रो हुने र बेचन त पराइ यस खेतीले वर्षदिन खान समेत नपुग्ने र किन्नुपर्ने बाध्यता छ । यस गा.वि.स.को माटो सुहाँउदो, हिउदे वर्षा बढी पर्ने र मौसम अनुकूल हुँदा पनि चिया खेती प्रथम रोजाइ हो ।

#### तालिका नं. ६

#### पेशा सम्बन्धी विवरण

| सि.नं. | पेशा    | घर संख्या | प्रतिशत |
|--------|---------|-----------|---------|
| १.     | कृषि    | ७८६       | ८८.७    |
| २.     | सेवा    | ६६        | ७.५     |
| ३.     | व्यापार | ३५        | ३.८     |
| जम्मा  |         | ८८७       | १००.००  |

स्रोत : दिगो विकास आवधिक योजना साखेजुङ्ग, इलाम २०६९

यस गा.वि.स. मा मुख्य रूपमा कृषि पेशामा आवद्ध रहेको कुल घर संख्या ८८७ मा ७८६ घर जुन ८८.७ प्रतिशत हुन आउँछ ।

### ५.१.३ जमिनको उपयोग

यस गाविस का मानिसहरूले जमिनलाई विभिन्न तरिका र खेती गरी उपयोग गरेका छन् । जस्तै खाद्यन्नबाली, चिया, अलैची, अम्लिसो घाँस, जंगल आदि । विभिन्न आवश्यकता, जमिनको उपलब्धता, उर्वरता र जमिनको दुरिका आधारमा जमिन प्रयोग गरिएको देखिन्छ । यस साँखेजुङ्ग गा.वि.स. लाई नक्साको जमिनको कुल १.२५०० भुभागमा भु-उपयोगमा मुख्य ५ वटा जुन कृषि जमिन, वन, चिया खेती र वगर/गग्नेन र नागी र खाली जमिन पाइन्छ । नेपालटार, त्रिवेणी चोक, रक्से बजार, थापा गाउँमा अत्याधिक बसोबास गरेको पाइन्छ । जुन स्केलमा नआएको समावेश छैन ।

तालिका नं.७

भु-उपयोग सम्बन्धी विवरण

| सि. नं. | जमिनको प्रयोग  | हेक्टर | प्रतिशत |
|---------|----------------|--------|---------|
| १.      | कृषि जमिन      | २६८.९  | २०.७३   |
| २.      | वन             | ७४४.५  | ५७.३८   |
| ३.      | चियाबारी       | १९८    | १५.२६   |
| ४.      | वगर/गग्नेन     | ४२     | ३.२४    |
| ५.      | नागी/खाली जमिन | ४४.१   | ३.३९    |
|         |                | १२९७.४ | १००.००  |

स्रोत: दिगो विकास आवधिक योजना साँखेजुङ्ग, २०६९

### ५.१.४ खेती प्रणाली

खेती गर्न त्यस ठाउँको हावापानी र माटो सुहाउदो हुने हुँदा त्यसै अनुरूप उक्त स्थानमा खेती गर्दा उपयुक्त र फाइदाजनक हुन्छ । सिचाँइको उपलब्धता र उत्पादनको मात्रा बिच पनि अन्तर सम्बन्ध हुने हुँदा यस गा.वि.स. मा हावापानी, माटो र सिचाँइ अनुरूप कुन स्थानमा के उत्पादन राम्रो हुन्छ त्यसै अनुरूप खेती गरेको देखिन्छ । वडा नं.१, २, ३ मा गर्मी स्थान, खोला नजिक र सिचाँइका कारण धान उत्पादन बढी हुने हुँदा यस स्थानमा धान खेती गरेको देखिन्छ । वडा नं. ४, ५, ६, ७, ९ लेक र अलि ठन्डा भएकाले यस स्थानमा मकै, गहुँ, आलु र नगदेबाली चिया खेतीमा जोड दिएको छ । खोल्सा खोल्सी तिर अलैची खेती राम्रै थियो तर मासिन्दै गएकाले कृषकहरू खाद्यन्न फलाउने बारीमा खेती गर्न थालेका छन् । यस गा.वि.स.का तल्लो भागमा पनि धान खेती बाहेक

खाली स्थानमा चिया खेती गरी आमदामी गर्दै आएका छन् भने माथिल्लो भागमा खाली जमिनको प्रयोग, नागी, भिरालो स्थान सम्याएर मसिना पोथ्रा विरूवा मासेर चिया खेती गरी भुक्षय हुन रोकी, प्रकृतिक सुन्दरता बढाउदै, वातावरण संरक्षण गर्दै अम्दामीको स्रोतका बाटो बढाएको छ । (स्रोत : गा.वि.स. प्रोफाइल, २०६९)

### ५.१.५ नगदेबालीको उत्पादन

यस गा.वि.स.मा मुख्य रूपमा यहाँका मानिसहरूको नगदेबालीहरूबाट जिविकापार्जनका साथै फाइदा लिने गर्दछ । यस गा.वि.स.मा नगदेबालीमा आलु, अदुवा, अम्लिसो कुचो, अलैची, अथोडक्स चिया, अलोन दुध, अकबरे खुर्सानी आदि उत्पादन बढी गर्दछन् । इलाम जिल्ला ५ अ ले प्रख्यात वर्तमानमा नगदेबाली थपेर ८ अ का वस्तु उत्पादन र आमदामीका स्रोत रहेको छ । प्रत्येक वस्तुको प्रशोधनको अभावका कारण कच्चा पदार्थ सस्तो मा भारत लगायत अन्य देशमा बेचन बाध्यता छन् । यहाँ दुध मार्फत घ्यू, छुर्पी, चिज बनाउनका साथै कच्चा दुध बिराटनगर दुध संस्थानमा बेच्दै आएका छन् । यो वर्षको नाकाबन्दी लगायत तराई अन्दोलनले दुध बिक्री नहुने स्थिति आयो यसबाट कृषकका आमदामी घट्नुका साथै रोजी रोटी वा दैनिकीमा समेत समस्या परि यस व्यावसाय प्रति निरास भएका थिए । चिया भने यसै गा.वि.स. लगायत अन्य छिमेकी गा.वि.स.का विभिन्न प्रशोधन केन्द्र मार्फत प्रशोधित तयारी चिया विभिन्न अन्तर्राष्ट्रिय, राष्ट्रिय तथा स्थानीय बजारमा बचेको देखिन्छ ।

तालिका नं. ८

नगदेबाली सम्बन्धी विवरण

| आलु   | अदुवा | कुचो | चिया  | अलैची (मनमा) | दुध (प्रति लि.) |
|-------|-------|------|-------|--------------|-----------------|
| १९४०० | ५०४९  | १५१८ | ३२००० | ५७           | २७९७            |

स्रोत : आवधिक दिगो विकास योजना साँखेजुङ्गा गा.वि.स. इलाम, २०६९

### ५.१.६ परम्परागत सीपको अवस्था

केन्द्रीय तथ्याङ्क विभागका अनुसार देशभरिको जम्मा १५-५९ वर्षका उमेर समुह ५४% रहेको छ भने २५.७३% छ भने महिलाले बढी जिम्मेवारी लिएको पाइन्छ । (स्रोत : केन्द्रीय तथ्याङ्क विभाग, २०६८)

यस कृषि क्षेत्रको संलग्नता हेर्दा परिवारिक खेती प्रणाली रहेको छ । कृषि र पशुपालन एक अर्का विच सम्बन्ध भएकाले यस कामको बाडफाँड गरी दैनिक रूपमा सम्पन्न गर्दछन् । घरको नदेखिने काम देखि खाना, खेती, दाउरा, पानी आदि काममा मिलेर सम्पन्न गर्दछन् । वर्तमान समयमा महिलाका तुलनामा पुरुषहरू बढि विदेशिन्नले यो कार्य एक्लो महिलाको काँधमा आएको छ । यस कार्यमा साना १०-१२ वर्षका उमेरका बालबालिकाले पनि आमालाई सघाउने गर्दछ । जस्तै: पानी, दाउरा, घाँस देखि घरका काममा सहयोग गर्दछन् । यो शहर भन्दा ग्रामिण क्षेत्रमा बढी छ । (स्रोत : स्थलगत अध्ययन, २०७३)

कृषि क्षेत्रमा धेरै मानिसहरू संलग्न रहेकोमा महिला र पुरुषको बराबर रूपमा संलग्नता छ । यस बाहेक कसैले समय निकालेर सीपमुलुक काम चोयाका समान डोको, नाम्लो, भक्का, चित्रा, डालो आदि वस्तुको निर्माण गरी गाँउका आवश्यकता पूर्तिका साथै केही रकम अम्दामी गरेको पाइन्छ । यसलाई व्यावसायिकता नदिइ फुर्सदको समय उपयोग गरेको पाइन्छ । यसैगरि काठ काट्ने, काठबाट निर्मित फर्निचर, घर बनाउने ठेका वा दैनिक रोजगार गरी काम गर्ने गर्दछन् भने यसमा महिला भन्दा पुरुष बढी सक्रिय देखिन्छ । यसरी दैनिक कामको अभावले कुनै आर्थिक उन्नति भएको पाइन्दैन । चिया क्षेत्रको कुरा गर्नुपर्दा साना बगान भए परिवारका सदस्यहरूनै संलग्न भइ काम सक्दछन् भने ठुला बगानमा भने हुर्कने समस्याले यो संभव रहदैन । यस प्रकारका बगानमा घरका लगायत गाउँका रोजगारीका निम्ति आएका श्रमिकहरू हप्तादिन सम्ममा सक्ने गर्दछन् ।

### ५.१.७ परम्परागत पेशाको अवस्था

यस गा.वि.स.मा परम्परागत पेशाहरू विस्थापन हुदै गएको पाइन्छ । बुढापाकाहरूले जुन रूपमा सिप मुलक ढोको, डालो, नाम्लो, दाम्लो, चित्रा जस्ता सिप गर्थे तर युवा पुस्ताले सिक्न इच्छा नगरेका र हस्तान्तरणमा कमि आएका छ । जसका स्थानमा बजारमा उपलब्ध रबरका डोरी, बट्टा, र जस्तापाताले स्थान पाएका छन् । जुन बुढापाकाको मृत्युसँगै सीप पनि मर्न थालेको पाइन्छ । कृषिमा पनि परम्परागत खेती भन्दा नगदेबाली बढी गरेको देखिन्छ । आधुनिक खेतीका गर्ने नाममा बढी रसायनिक मल छर्ने काम केही वर्ष अत्याधिक भएका ले यसका असर हाल देखिएको पाइन्छ । स्थानीय बिउँका साटो हाइब्रिट बिउँ छर्ने प्रचलनले पनि परानिर्भरताको छनक गाउँघरमा देखिन्छ । चिया घरमा खाना र

कोशेलीका निम्ति घरमै हाते पत्ती बनाइ आवश्यकता पुरा गर्दछन् र बाँकी हरियो पति भने केजीको हिसाबले चिया उद्योगमा दिइन्छ । चियाको खेतीमा नर्सरी राख्ने केही समयमा रोप्ने कार्यका निम्ति तालिम प्राप्त वा अनुभवि व्यक्ति लगाएको पाइन्छ । चिया खेतीका लागि विभिन्न संघ संस्थाले तालिम दिने गरेको छ । यस गा.वि.स.मा वर्तमान समयमा भने अगार्निक चियाको मागले गर्दा किसान र कारखाना बिच सम्झौता मार्फत चिया खेतीमा आचारसंहिता कार्यन्वयको निम्ति विभिन्न चिया सहकारिता स्थापना गरिएको छ, र निरिक्षण पनि गरिन्छ ।

### ५.१.८ परम्परागत पर्मा प्रथाको वर्तमान स्थिति

यस गा.वि.स.का मानिसहरू समाजमा विभिन्न जातजाती भाइचारा मिलमिलापमा साथ मिलेर काम गरेका देखिन्छ । सबै कृषक र कामदारी एकै बगानमा एक आपसमा गफगाफ गर्दै काम गरेको पाइन्छ, तर चिया खेतीको विकास र विक्रीले परम्परागत रूपमा रहेको पर्मा अर्मा प्रथा रूपैयामा बदेलिएको छ । काम बापत दैनिकी ज्याला लिने गरेको पाइन्छ । जसले भवनात्मक सम्बन्ध भन्दा गाँउमा आर्थिक सम्बन्ध बलियो भएको पाइन्छ । यस गा.वि.स.मा प्रत्येकको चिया बगान भएका हुँदा पलाउने समय एकै हुने हुँदा हुर्कन नदिनका लागि र चिया कामदारको अभावले आपसी सल्लाहले पालै पालो गरे पनि यो पहिलाभन्दा फरक छ । जुन पहिला निस्वार्थ र सहयोगी भावना थियो भने अहिले एकै प्रकारको काममा मात्र जाने आउने र सघाएको दिन समेत गन्ती गरेको पाइन्छ । यसले समाज परिवर्तन हुँदै गएको संकेत पाउन सकिन्छ । ग्रामिण क्षेत्रमा प्रचलित प्रचलन परिवार परिवारबिचमा श्रम आदानप्रदान गर्न जसलाई (पर्मा) प्रथा भनिन्छ । कस्कोमा चाँडो हुर्कको वा आवश्यकता छ उसैको प्रथम प्राथमिकताका साथ सघाउने चलन छ । यो सघाँसघि कुनै उमेर, काम र समय भिन्नता भए पनि फरक पर्दैन । तर समय परिवर्तन सँगै यो परम्परागत पर्मा प्रथा लोभ हुँदै गएका छ । चिया खेतीको काम प्रायः ज्याला दिने प्रचलनमा छ । गाउँघरमा काम बापत दामको चलनले आपसी भावनात्मक सम्बन्ध भन्दा पनि व्यक्तिवादी सोच आर्थिक पक्ष मा जोड दिएको देखिन्छ । यस कारण समयमा काममा पस्ने र समयमै बिदा दिने गर्दछ । यो प्रचलन चियाको सम्पूर्ण काममा लागु छ ।

### ५.१.९ पोसकको अवस्था

यस गा.वि.स.का मानिसहरूका जिवनस्तरमा पोसकको कुरा पनि आँउछ। यहाँका मानिसहरूमा परम्परागत पोसाक भन्दा आधुनिक लुगा प्रति बढी मोह र सिजन अनुसारको पोसाक लगाएको पाइन्छ। युवा, बच्चाहरू फेसन अनुसार लुगा तथा जुता लगाउने गरेको र यसका लागि चाडपर्व नै हुनुपर्छ भन्ने हुँदैन। प्रायः आमदामी बढी हिस्सा लगाउनेमा खर्च गरेको पाइन्छ। यसरी परिवर्तन आउनुमा यस स्थानमा खोलेका फेन्सी पसल, संचार र रोजगारी अवसर आदिको प्रमुख भूमिका रहेको छ। सांस्कृतिक पोसकमा पनि केही सकारात्मक परिवर्तन देखिन्छ, जसमा विभिन्न जातजाती अनुरूपका चाडपर्व र विशेष अवसरमा आफ्ना पोसाक लगाएको पाइन्छ।

### ५.१.१० कामदारको पोसाक

चिया खेतीको पोसाकको कुरा गर्दा चियाका हाँगा ढाला छाँटकाँट गर्नुका साथै एकै लेवल मिलेकोमा छिर्न पनि समस्या पर्ने कारण पनि कपडा दाह्रो लगाउनुपर्छ तर समय अनुरूपको लुगा लगाएको पाइन्छ। पानी र शितबाट बाँच्न बोरा र प्लाष्टिक मिलाएर सिलाएको बेर्ने लगाउने गरिन्छ र खुट्टामा प्लाष्टिक निर्मित गमबुट जुता लगाउने गरिन्छ। वर्षाका समयमा पानीबाट बाँच्न छाता र प्लाष्टिक त बेग्लै पोसाकको, एब्रोनहरू, कपाल ढाक्ने ब्यावस्था गरिएको पाइन्छ। चियाबाट बढीनै धुलो उढ्ने हुँदा कामदारले माक्स अनिवार्य प्रयोग गर्नुपर्छ। उद्योगमा अनिवार्य सरसफाइ भइ काम गर्नु जरूरी छ।

### ५.१.११ खाजाको व्यावस्था

यस गा.वि.स.को खाजा प्रणालीको कुरा गर्दा समय सापेक्ष परिवर्तन भएको पाइन्छ। पहिले जे फल्छ सो चिज कन्दमुल, मकै, भटमास आदि खानेकुरा खाने गरिन्थ्यो भने वर्तमान समयमा किनेरनै चामलको चाम्रे, चाउचाउ, चिउरा, भुजिया जस्ता खानेकुरा खाने गरेको पाइन्छ। पेय पदार्थमा चिया, जुस र बाहुन, क्षेत्री बाहेक अन्य समुदायले खानेलाइ जाँड रक्सी दिने गरिएको पाइन्छ। स्थानीय चिजको उपभोक्तको कमि र किनेर खाने प्रवृत्तिले बचत भन्दा खर्च बढेको पाइन्छ, जुन परानिर्भरता तर्फ बढेको देखिन्छ।



## ५.२ चिया खेतीका आर्थिक प्रभाव

यस साँखेजुङ्ग गा.वि.स. कृषिमा आधारित आर्थिक व्यावस्था रहेको छ । यो गा.वि.स. चिया खेतीमा धेरै अगाडी बढेकाका कारण र चिया खेतीमा एकै समयमा बढी श्रमिक आवश्यक हुने भएकोले यस गा.वि.स.का मानिसहरू चिया टिप्ने समयमा प्रत्येक दिन दैनिकी ज्यालामा काममा व्यस्त रहेको पाइन्छ । प्रत्येक घरधुरीमा चिया खेती भएकाले आफ्नो बगानको काम सकेर अन्यत्र रोजगारमा गएको पाइन्छ । रोजगारीको अवस्थाको कुरा गर्दा चिया बगान देखि यहाँ खोलेका साना देखि ठुला चिया सम्बन्धी उद्योगमा समेत काम पाएको पाइन्छ । जसले काम गरी आफ्नो घरव्यावहार टार्न सहयोग पुगेको छ । यस ठाँउमा सबै चिया बगान निजि भएका कारण पनि परिवारका सम्पूर्ण सदस्य हप्ता दिन सम्म पनि खटेर काम गरेको पाइन्छ । कामदारको अभावले र चिया पत्तिको मूल्य भनेजति नपाएकाले पनि परिवारनै लागेमा मात्र फाइदा देखिन्छ । यहाँ प्राय महिला कामदार लगभग ९० प्रतिशत पाइन्छ र रोजगारका अवसरका कारणले पनि यहाँ अन्य ठाँउबाट बसाइ सरि आएको पनि पाइन्छ । पुरुष कामदार भने बल काम र बढी दामको काममा आकर्षण भएकाले चिया सम्बन्धी काममा अल्छीपन पाइन्छ । विधार्थी पनि छुट्टिको समय चिया टिप्ने रोजगारमा लाग्ने र पकेट खर्च जुटाउनका साथै चिया कामदार अभाव पूर्ति गरेको पाइन्छ ।

### ५.२.१ बचत तथा ऋण परिचालन

यस गा.वि.स.का मानिसहरू विभिन्न समुह तथा सहकारीमा आबद्ध भई बचत गर्न र विभिन्न शिर्षकमा ऋण लिने गरेको पाइन्छ । अन्य जिल्लाका बैंकहरू, लघुवित्त बैंक जिवन विमा समेत बचत गर्ने गरेका पाइन्छ । चिया र दुध संस्था मार्फत पनि विभिन्न कृषि क्षेत्रमा ऋण दिने गरेका पाइन्छ । यो रकम चिया र दुध जोखेर पनि तिर्ने व्यावस्था छ । चिया सहकारी मार्फत एकमुष्ट पेशकी दिने गरेको छ । समुहका छाता संगठन मार्फत सर्वसुलभ घरायासी समान बिक्री गर्दै आएका छ ।

यो गा.वि.स.मा संचालित महिला केन्द्रित विभिन्न नाफामुखि लघुवित्त बैंकहरू  
१. लक्ष्मी बैंक २. छिमेकी ३. फरवर्ड ४. जिवन विकास ५. स्वलम्बी बचत समुह  
६. निर्धन समुह

यस गा.वि.स.मा सञ्चालनमा रहेको कृषि सहकारीहरू निम्न छन्  
– श्री सुर्यज्योती कृषि सहकारी संघ (समुहहरूको छाता संगठन )–लेकाली हिलटप समुह ८

–श्री नव इलामेली सामुदायिक संस्था साँखेजुङ्ग ५

–महिला मिरमिरे समुह ७

–कंचनजंगा ऋण तथा बचत समुह ९

–पाथिभरा प्रगतिशिल बचत समुह ८

यि आदि समुह विभिन्न उदेश्यका साथ परिचालित छन् ।

दुध सङ्कलनका निमित्त विभिन्न ठाँउमा सङ्कलन केन्द्रहरू स्थापना गरिएका छन् जसले गर्दा कृषकले सजिलै र सुलभ तरिकाले उत्पादित दुध बेच्न सकेका छन् जुन संकलित दुध विराटनगर दुध संस्थान अथवा स्थानीय बजारमै बेच्ने गरेको पाइन्छ । यस क्षेत्रमा विभिन्न दुधबाट निर्मित घ्यु, छुर्पी, चिज, ललिपप आदि खाद्यवस्तु उत्पादन गरी स्थानीय, राष्ट्रिय तथा अन्तराष्ट्रिय बजारमा बिक्री गरेका पाइन्छ । विभिन्न कृषि तथा गाईपालन सम्बन्धी ऋण तथा तलिम गोष्ठी र कृषकलाई सेयर सदस्यता पनि वितरण गरिएको पाइन्छ ।

यस गा.वि.स.मा रहेका दुध सङ्कलन केन्द्र निम्न छन्

–रक्से दुध संस्था साँखेजुङ्ग ५ (स्थापना साल २०५३)

–नेपालटार दुध संस्था साँखेजुङ्ग ७ (स्थापना साल २०५३)

–दौतरी युवा दुध संस्था साँखेजुङ्ग ५ (शाखा विस्तार)

–ग्रीनहील दुध संस्थान साँखेजुङ्ग ६ (शाखा विस्तार)

यस गाविसमा सञ्चालनमा रहेको चिया सम्बन्धी सहकारी संस्था निम्न छन्

१. उच्च पहाडी चिया उत्पादक सहकारी संस्था लि. साँखेजुङ्ग ५

२. साँखेजुङ्ग चिया उत्पादक सहकारी संस्था लि. साँखेजुङ्ग ७

३. ग्रीनहील चिया उत्पादक सहकारी संस्था लि. साँखेजुङ्ग ६

स्रोत : सोम कुमारी राई दौतरी दुध संस्थाका सचिव २०७३/११/१५ गतेका कुराकानी

यि माथि उल्लेखित सहकारीहरू यस गा.वि.स.मा सञ्चालनमा रहेका छन् । जुन सहकारीको सिद्धान्तमा रहेर चिया सम्बन्धित कार्यक्रम सञ्चालन गरेको देखिन्छ । चिया कृषकहरूलाई एकै समुहमा आबद्ध गरी विभिन्न तालिम, गोष्ठी, भ्रमण, ऋण, बचत तथा विषादी न्युनिकरण सम्बन्धी सचेतना कार्यक्रम सञ्चालन गर्दै आएको पाइन्छ । पछिल्लो २०७१ –०७२ का तथ्याङ्ग अनुसार इलाम जिल्ला भरि र चिया क्षेत्र इलाम, भूपा, पाँचथर, तेह्रथुम, धनकुटा, ललितपुर, ताप्लेजुङ्ग, संखुवासभा, भोजपुर, उदयपुर, सोलुखुम्बु, रामेछाप लगायतका १३ जिल्लामा ९५ वटा चियाका सहकारीहरू ५ वटा चिया जिल्ला संघहरू सहित

५७२१ घरपरिवार सदस्य रहेका छन् । जसमा महिला १३०६ र पुरुष ४४१५ संख्यालाई सदस्यता वितरण गरिएको छ । ती थुप्रै सहकारीहरूको छाता संगठन केन्द्रीय सहकारी संस्थाको स्थापना गरेको पाइन्छ । जसमा देशभरिका चिया कृषकलाई एकै सिद्धान्त र एकतामा बाधेको पाइन्छ । चियाको उत्पादन गुरुस्तरियता र नेपालकै आफ्नो ट्रेडमार्कको विकास गरी विश्वबजारमा नेपाली चियाको बजार खोजिरहेको पाइन्छ । (स्रोत : राष्ट्रिय केन्द्रीय सहकारी संघ काठमाडौं, सन् २०१५)

यस चिया खेतीबाट खेतीबाट गाउँ उद्योगदेखि स्थानीय र विश्वबजार सम्म आर्थिक गतिविधि सञ्चालन गरी आय आर्जन गर्दै जिवनयापन सहज गरी आर्थिक वृद्धि गर्न सहयोग गरिरहेको छ ।

### ५.२.२ चिया खेती र पशुपालनको सम्बन्ध

यस गा.वि.स.मा कृषिका साथै पशुपालन मुख्य रहेको देखिन्छ । पशुपालनमा प्राय गाईपालन र अन्यमा बाखा, गोरू, भैसी र पन्छीजन्य दोस्रो स्थानमा पाइन्छ । यहाँ दुध उत्पादनबाट पनि राम्रै आम्दामी गरेको पाइन्छ । पशुपालन र कृषि बिच घनिष्ठ सम्बन्ध भएका कारण यस गा.वि.स.को प्रत्येक घरमा गाई, भैसी, गोरू, बाखा, सुगुर, कुखुरामा कुनै न कुनै प्रकार ४/५ वटा अनिवार्य पालेका हुन्छन् । मुख्य रूपमा गाई बढी पालेको पाइन्छ । जसबाट मल, दुध, बाछा - बाछी, पाडा -पाडी लगायत बिक्री गरी मनग्य आम्दामी गर्दछन् । चिया खेतीको कुरा गर्दा विश्वबजारमा अर्गानिक चियाको माग बढ्दो भएका कारण चियालाई बोट देखि नै सुधार गर्नुपर्ने हुँदा चियामा रसायनिक मलका साटो प्राङ्गारिक कम्पोष्ट मलको प्रयोगमा जोड दिएको पाइन्छ । चियाबारीको घाँस पशुलाई र पशुको मल पिसाब चियाको बोटलाई लगाउदा चियाको बोट सुधार हुन्छ र पशुलाई घाँस प्राप्त हुनाले यि बिच घनिष्ठ सम्बन्ध देखिन्छ । पशुका मलमुद्र चियाका बोटमा प्रयोगगरि चिया पति अर्गानिक उत्पादन गरी विश्वमाभ्र गुणस्तर चिया पुराउनुका साथै यसको माग पनि बढ्ने हुँदा चियाको विश्व बजार सुनिश्चित गरी दिर्घकालिन सुधारमा चिया कृषकहरू लागेको पाइन्छ । गाईपालनलाई मुख्य पकेट क्षेत्र नै घोषणा गरी यस अन्तर्गत विभिन्न कार्यक्रम भएको पाइन्छ । यस स्थानबाट २०५३ सालदेखि राष्ट्रिय दुध संस्थान बिराटनगरमा दुध सङ्कलन गरी बिक्री गरिरहेको छ र यसका लागि विभिन्न स्थानमा चिसेन केन्द्र

सञ्चालनमा छ । दुध मार्फत १५/१५ दिनमा पेमेन्ट गरी घरखर्चमा सहयोग पुगेको छ । त्यसैले पनि यस गा.वि.स.लाई गाइपालन मुख्य व्यावसाय लिइन्छ ।

खेतीको क्षेत्रमा साँखेजुङ्गको तल्लो भेकमा धन उत्पादन हुने हुँदा त्यस स्थानमा धन खेती गरिन्छ । अन्य क्षेत्रमा मकै कोदो गहुँ तेलहन जस्ता वस्तु उत्पादन भए पनि यो पर्याप्त नहुँदा भापाको चामल लगायत अन्य आवश्यक चिज आयत गर्नुपर्ने अवस्था छ । त्यसैलेपनि गाउँघरमा खाद्यन्न खेतीभन्दा नगदेबाली अलैची, अदुवा, अम्लीसो बाहेक चिया खेती प्रसस्त मात्रमा गरेको पाइन्छ । अलैची खेतीमा रोगले सताएका कारण कृषकले खाद्यन्न बाली रोप्ने घुरेन बारीमा पनि रोपेको देखिन्छ भने अदुवापनि केही वर्ष अघि बढी मूल्य पाए पनि अहिले नपाउँदा आकर्षण घट्दो छ । अम्लिसो भनेघाँसको रूपमा प्रयोग हुने हुनाले कुचोको भाँउ पाए बेची राम्रै अम्दामी लिन्छन् । पहिला प्रति केजी रू १०० सम्म भए पनि यो साल प्रति केजी रू २० मात्र भएको पाइन्छ । चिया खेती पाखो तथा भिरालो जमिन सम्माइ २०२८ सालदेखि गर्न थालेको र यसको आयु पनि हजारौ वर्षा भएकाले कृषकले नियमित रूपमा काँटछाट, गोडमेल, टिपाइ गरी स्याहार गरेको पाइन्छ । यसले राम्रो अम्दामी भएको नपाए पनि दैनिक रोजगारी र जिविकोपार्जनका रूपमा खेती गरेको पाइन्छ । शुरूवातका दिनमा कम्पनिले बढि नै मूल्य दिइ कृषकले थुप्रै चिया रोपेर हौसिएका र बढि उत्पादन गर्न रसायनिक मल र विषादी छर्ने काम निकै बढ्दो भयो तर यसले दिर्घकालिन असर ल्याएको पाइन्छ तर त्यो धेरै समयसम्म रहेन फलस्वरूप निरास भई नयाँ बगान लगाएको पाइन्दैन र चियामा विषादीका मात्र बढीले विश्वबजारबाट नै फिर्ता हुने स्थिति आयो र सुधारका निम्ति अर्गनिक चिया खेती तर्फ लागेको पाइन्छ । (स्रोत : स्थलगत, सर्वेक्षण, २०७३)

### ५.२.३ खाद्यन्न निर्भरताको अवस्था

खाद्यन्नबालीलाई नगदेबालीले बिस्थापन गरी उक्त चिज बिक्री गरी पुर्ति गरेको पाइन्छ । विभिन्न अन्नबालीको स्थानमा चिया, अदुवा, पशुपालन बढी गरेको पाइन्छ । खाद्यन्नबालीलाई ध्यान नदिने र मौसम पनि अनुकूलता नहुनाले र माटो उर्वरताका कमिले पनि पहिला जस्तो उत्पादन नहुनाले यसप्रति आकर्षण घटेको पाइन्छ । पहिला जस्तो धेरै सन्तान पाउने चलनका कमिका कारण र भएका युवा जमात वैदेशिक रोजगारमा गएकाले

बुढापाका र महिलाले यो बोझ उठाउनु परेको छ भने कामदारका अभाव र पर्माअर्मा प्रचालन पनि लोभ हुँदा पनि खाद्यबालीका स्थानमा नगदेबाली गरेको पाइन्छ ।

#### ५.२.४ शैक्षिक क्षेत्रको प्रभाव

यस गा.वि.स.को आर्थिक उपार्जनका कुराले प्रत्येक व्यक्तिको आम्दामीको मात्रा वृद्धि भएको छ । जुन नगदेबालीहरू र त्यसमा चिया खेतीले बढी नै रोजगार सिर्जना गरेको छ र त्यसबाट प्राप्त आम्दामीले केही क्षेत्र प्रभाव पार्ने हुँदा यस गा.वि.स.मा जम्मा निजि तथा संस्थागत विद्यालय ३ जुन नाफामुलक हुने गर्दछ । सरकारी विद्यालय संख्या भने ४ रहेकोमा २ प्रा.वि. विद्यालय भने बन्द भएको अवस्था छ ।

यस गा.वि.स.मा स्थापित निजि तथा सरकारी विद्यालयहरू निम्न छन्  
निजि तथा संस्थागत विद्यालयहरू

- १.श्री आशादीप बोडिङ्ग स्कुल त्रिवेणी रक्से साँखेजुङ्ग ५
- २.वि.पी मेमोरियल बोडिङ्ग स्कुल नेपालटार साँखेजुङ्ग ७
- ३.ग्रीनहील एकेडेमिक स्कुल नेपालटार साँखेजुङ्ग ७

सरकारी तथा समुदायिक स्कुल

- १.श्री नेपालटार उच्च मा.वि.साँखेजुङ्ग ७
- २.श्री जनता नि.मा.वि. साँखेजुङ्ग १
- ३ श्री अरनिको प्रा.वि. साँखेजुङ्ग ९-बन्द अवस्था
४. श्री सिद्धार्थ प्रा.वि. साँखेजुङ्ग ५-बन्द अवस्था

यी उपयुक्त विवरण हेर्दा यस गा.वि.स.मा सरकारी प्रा.वि. स्कुल भर्ना गर्न अभिभावकको संख्या घट्दो जुन सरकारी प्रा.वि. स्कुल बन्द भएको अवस्थाले देखाउछ । आम्दामी वृद्धिसँगै प्रायः बोडिङ्ग स्कुल पढाउन थालेको छ । यस गा.वि.स.मा ३ वटा आवसिय विद्यालय सञ्चालनले पनि यस गा.वि.स.का मानिसहरूको आम्दामी र रोजगारी बढी भएका कारण खोलेको पाइन्छ । उच्च मा.वि.को स्थापनासँगै त्यस विद्यालयमा बिहानका कक्षा लिई दिनको समयमा भने चिया टिप्ने काममा रोजगार वा घरका परिवारलाई सहयोग गरेको पाइन्छ । जुन कामबाट विद्यार्थीले आफै खर्च जुटाउन सकेका छन् र कामदार अभाव पुर्तिमा थप सहयोग पुगेको छ । (स्रोत : गा.वि.स. प्रोफाइल, २०७२) ।

### ५.३ साँखेजुङ्ग गाविस को चिया सम्बन्धी विवरण

यो साँखेजुङ्ग गा.वि.स. इलाम जिल्लाको उत्तरी भु-भागमा अवस्थित मा चिया खेती व्यापक रूपमा गरेको पाइन्छ । यस क्षेत्रमा वि.सं.२०२८ निजि क्षेत्रले खेती सँगै भएको पाइन्छ र यस गा.वि.स.मा कुल भु-भागका ३२४५ हेक्टर चिया खेती गरेको पाइन्छ । यस गा.वि.स.को वडा नं. ७ मा सबभन्दा कमि वडा नं. २ बढि चिया खेती गरेको पाइन्छ । यस गा.वि.स.का अधिकांश घरपरिवार चिया खेती मुख्य नगदे खेती र एक पटक लगाएपछि हजारौं वर्षसम्म बाँच्ने हुँदा यो खेती प्रमुख आम्दामीको बाटो बनेको छ ।

तालिका नं.९

#### चिया खेतीमा संलग्न विवरण

| वडा नं. | चिया कृषकको संख्या | रोपनी |
|---------|--------------------|-------|
| १.      | ५                  | १७१   |
| २.      | १०                 | ३७    |
| ३.      | ८                  | ९६    |
| ४.      | २८                 | ४१९   |
| ५.      | ३९                 | ५३४   |
| ६.      | ३६                 | ६०७   |
| ७.      | २९                 | ९२०   |
| ८.      | २०                 | २२९   |
| ९.      | १२                 | २३२   |
| जम्मा   | १८७                | ३२४५  |

स्रोत : स्थालगत अध्ययन २०७३

यस गा.वि.स भरि कृषकहरू धेरै नै रहेको छ र कसैले आफ्नो मुख्य व्यावसाय नै चिया खेती गरेको पनि पाइन्छ । शुरूका समयमा कृषकहरू आफ्नै प्रयासबाट चिया खेती तर्फ लागे र कारखानाको स्थापना र यसले हरियो चिया पत्तीको मूल्य पनि राम्रै दिए यसले कृषकहरू बढी नै हौसिए तर पछिल्लो समयमा कृषकहरूले हरियो चियाको मूल्य नपाउनु कामदार अभाव, अर्गानिक चियाको माग र त्यसतर्फ जान धेरै समस्या भैलनुपरेको छ । विगत भन्दा वर्तमान समयमा चियाका नयाँ बोट कमैले मात्र लगाएका र पुराना चिया बारी

पनि स्याहार कमै गरेको देख्न पाइन्छ । यस कुराबाट पनि चियाखेती तर्फको आकर्षण घटेको जसका स्थानमा कृषकहरू अन्य नगदेबाली तर्फ लागेको देखिन्छ ।

### ५.३.१ चियाको मुख्य प्रजाती

चियाको वैज्ञानिक नाम -क्यामेलिया साइनेसिस) हो ।

१.चिनिया जात

२.आसामी जात

३. कम्बोडियाली जात

यि उपर्युक्त प्रजातीहरूमा आसामी र कम्बोडियाली प्रजातीको चिया सि.टि.सि.चिया उत्पादनको लागि प्रयोग भने चिनिया प्रजाती भने अर्थोडक्स चिया उत्पादनमा प्रयोग गरिन्छ । इलाममा ९० प्रतिशत अर्थोडक्स चिया उत्पादन गरिन्छ ।

यस गा.वि.स.मा विभिन्न प्रकारका चिया रोपेका छन् । शुरूमा चिया दानाबाट उमारेको चिया बिरूवा रोप्ने गरेको तर पछिल्लो समयमा छाँटकाँटमै छुट्याएका डाला मार्फत कटिङ्ग गरी तयार गरेका चिया रोपन थालेका छन् । प्रायः प्रचलनमा तक्डा र गुम्ती चिया कृषकले बढी रोप्ने र पहिलो रोजाइमा पर्दछ ।

### ५.३.२ चियाको प्रकारहरू

१. तक्डा ७८ (Takda 78)

२.गुम्ती (Ghumti)

३.फुब्सिरिङ्ग (Fubshiring)

४.बेनेक बोन (Benek bone)

६. तारापुर (Tarapur )

७.तक्डा ८३ (Takda 83)

### ५.३.३ तयारी चियाको बर्गीकरण

यस गा.वि.स.मा विभिन्न प्रकारका चिया उत्पादन गर्दछ । चिया विश्वमा प्रथम पेय पदार्थका रूपमा परिचित छ । नेपालमा पनि चिया पिउने र कुनै परिवारका सदस्यका बाहेक अन्य व्यक्तिको उपस्थितिमा वा अथिति सत्कारमा प्रथम त चिया दिने चलन नै छ । चिया गर्मी स्थानमा भन्दा ठन्डा चिसो स्थान माथिल्लो हिमाली भेगमा बढी खपत हुनुका साथै उपयुक्त पनि छ ।

## १. कालो चिया (Black Tea fermented tea)

- सि.टि.सि. चिया (crush Tearund clarl) -यसलाई धुलो दानादार चिया पनि भनिन्छ । नेपालमा भापामा मात्रा यसको उत्पादन भए पनि यसको खपत भने अन्तरिक रूपमा भएपनि पछिल्ला दिनहरूमा भारत, बङ्गलादेश र पाकिस्तानमा निर्यात हुन थालेको छ ।
- अर्थोडक्स चिया (Ortodox Tea) – यसलाई पत्ती चिया पनि भनिन्छ । यो बास्नादार हल्का रडको हुन्छ । विश्वप्रसिद्ध अर्थोडक्स चिया इलाम, पाँचथर, धनकुटा र अन्य पहाडी जिल्लाहरूमा उत्पादन हुन्छ । यस साँखेजुङ्ग गा.वि.स.मा पनि अर्थोडक्स चिया नै उत्पादन गरिन्छ ।

## २. ओलङ्ग चिया (Oolong Tea semi formented tea)

यो चिया सेमी फर्मन्टेड चिया हो । यसको उत्पादन नेपाल, चीन, भारतमा भएपनि यसको खपत भने ताइवन, जापानमा बढी घण्टासम्म ओइलाइन्छ । त्यसपछि, रोलरमा राखेर रोलिङ गरिन्छ र आवश्यकता अनुसार १.२ घण्टासम्म फर्मन्टेसन गरी डायरमा राखेर सुकाइन्छ । हरियो पत्तीलाई हरियोपन नहराउने निश्चित समय भित्रमा ओइलाउने गरिन्छ र रेस्टिङ वा स्टेमिङ विधिबाट ओइलाउने काम हुन्छ र रोलरमा पठाइन्छ । रोलरबाट तत्कालै डायरमा पठाई चियामो हरियो गुण यथावत राखेर रोलिङ गरिन्छ ।

## ३. हरियो चिया (Green Tea unfermented tea)

यो ग्रीन टि उत्पादन गर्ने स्थान इलामको पशुपतिनगरमा छ । यो जापान, चीन, ताइवनमा उत्पादन तथा खपत गरे पनि यस गा.वि.स.मा पनि माग अनुरूप ग्रीन टी तयार गरिन्छ ।

(स्रोत : राष्ट्रिय चिया तथा कफि बोर्ड, २०६८)

यस साँखेजुङ्ग गा.वि.स.का सम्पूर्ण कारखानामा अर्थोडक्स कालो चियाका विभिन्न गुणस्तरका उत्पादन गर्नुका साथै ग्रीन चिया र ओलङ्ग चिया पनि उत्पादन गरिन्छ । ग्रीन चिया रोगीहरूले औषधीका रूपमा प्रयोग गरिरहेको पाइन्छ । यि चिया चिन, जापान, ताइवन बढी खपत भएको पाइन्छ । सि.टि.सि. चिया भने तराइका क्षेत्र भापामा बढी उत्पादन हुनाका साथै यो चिया कडापन, चमकपन र तिखरता पाइन्छ र यो भारत,



बंगलादेश, पकिस्तान मा निर्यात र खपत भएको पाइन्छ । नेपालमा पनि ग्रीन टि प्रति आकर्षण दिन दिनै बढ्दो छ । गाँउमा भने हाते कालो चिया र सि.टि.सि. चियालाई दुध प्रयोग गरी चियाका रूपमा प्रयोग पाइन्छ ।

### ५.३.४ चिया खेती सम्बन्धी समय तालिका

चिया पहिले दाना बिउबाट उमारेर रोपेको पाइन्छ तर अहिले चियाको बोट मार्फत डाला कटिङ्ग गरी माटो तयार गरी नर्सरी गरिन्छ । यो गरेको २ वर्षपछि चाहिन्दो स्थानमा उचित माटो सम्माएर, दुरी, खडाल मिलाइ बनाएका स्थानमा सार्नुपर्छ । वर्षयाममा रोप्दा बिरूवा नमर्ने सम्भावना बढि हुन्छ । रोपेको पश्चात गाँच तयार हुन ५/६ वर्ष लाग्दछ । त्यसपश्चात चिया उत्पादन शुरूदेखि सय वर्षसम्म आम्दामी दिइरहन्छ । यसका लागि भने काँटछाँट मिलाउन जरूरी छ ।

पुस, माघ, फागुन— विभिन्न कलामी चक्र, ३ वर्षे काटछाँट, ४ वर्षे काटछाँट (हाँगा डाला काँटछाँट (टेबल मिलाउने, हार्ड कटिङ्ग आदि )

पानी परेमा चैत पहिलो हप्तादेखि देखि पुष पहिलो हप्तासम्म –टिप्ने समय

पुष पहिलो हप्ता देखिनै चिसोका कारण मुना चाम्रो भइ टिप्न बन्द हुने र प्रशोधन केन्द्रले पनि पत्ति खरिद बन्द गर्दछ । टिपाइको समयमै पनि मुना नपलाएको समय मिलाएर वा विभिन्न समयमा गोडमेल, मल तथा भारपात फाडेर कुहिने बोटमै राख्ने गरिन्छ जसबाट मल तयार भई बोटलाई आवश्यक मल लिन सक्छ ।

### ५.३.५ चिया खेतीमा कामदारको अवस्था

चिया खेतीमा कामदार प्रायः महिला बढी हुने गर्दछ । हरियो चिया पत्ती टिप्न महिलाहरूले बढी टिप्न सक्ने, कम बल, बढी समय, कम ज्याला र बढी मेहेनत लाग्ने हुदाँ पनि पुरुष भन्दा महिला बढी सक्रियका साथ लागेको पाइन्छ । चिया सम्बन्धित कामलाई कुनै लिङ्गका आधारमा यो महिला र पुरुषले मात्र हो भनिएको पाइन्दैन तर पनि समग्र चिया खेतीका महिलाको ९० प्रतिशत संलग्नता रहेको देखिन्छ । पुरुषहरू यो काममा अल्छी बढी लाग्ने तर बढी बल लाग्ने काम जस्तै— ढुङ्गा मुढाका काम गर्न मनपराउने र ज्याला पनि बढी लिन इच्छाका कारण पनि चिया टिपाइमा पुरुषको संलग्नता न्युन रहेको छ । चियाको कटिङ्गका काम र अरू सम्मानित काममा भने पुरुषहरूको संलग्नता रहेको देखिन्छ । महिला

हरूले कारखानाका काममा चिया केलाउने, चिया पकेट भर्ने काममा बढि संलग्नता देखिन्छ तर कटिङ्ग, नर्सरी बेड, नर्सरी, रोप्ने जस्ता काममा बढी पुरुष लागेको पाइन्छ र कारखाना पनि चिया सुकाउने मेसिन चलाउन स्थानबाट चिया पत्ति गुणस्तर चेक गरी ल्याउने काम भने बढि पुरुष लागेको पाइन्छ । चिया खेतीमा मौसमी विरोजगार हुने समस्याले पनि चिया खेती भन्दा बैदेशिक रोजगार तर्फ पुरुष गएको पाइन्छ । जसको भार महिलाको काँधमा आएको देखिन्छ । बैदेशिक रोजगारबाट बढी रकम कमाइ हुने सपनाले प्रायः यस ठाँउका पुरुषहरू विदेश गएका पाइन्छ । फलस्वरूप चिया खेतीमा कामदार अभाव भएको देखिन्छ । यस गा.वि.स.को चिया खेती तथा बगानहरूमा महिला कामदार बढी रहेको देख्न पाइन्छ । (स्रोत : स्थलगत अध्ययन २०७३ )

### ५.३.६ बैदेशिक रोजगारीको अवस्था

यस गा.वि.स.मा विदेश जाने संख्यामा मलेशिया, खाडी मुलुक देखि, वर्तमान समयमा आकर्षक को केन्द्र कोरिया जस्ता मुलुक पहिलो रोजाइ र यि आदि मुलुकमा जाने गर्दछन् । यस गा.वि.स. बाट अदक्ष कामदार विदेश जाने गर्दछ र यो क्रम निरन्तर रूपमा जाने आउने हुँदा संख्यामा घटबढ भइरहन्छ । गाउँमा रोजगारी अभाव र पाए पनि दैनिक कामको कमि मौसमी काम पाउनु र युवामा कृषि प्रतिको नकारात्मक धारणा, हेलाको दृष्टि, वचत कम र कृषिप्रतिको आकर्षण कमिले गर्दा युवा जमात कसै कर र कसै लहैलही र रहरमा अनेक सपना लिई विदेश जाने गरेका पाइन्छ । यो क्रम पछिल्लो समयमा एस.एल.सि. नदिएका र दिएकाहरूले विदेश जाने मानसिकता बोकेका हुन्छन् । फलस्वरूप गाउँमा युवा श्रमिकको अभाव देखिन्छ । यो चिया क्षेत्रमा समेत यस खेती गर्दा देखि टिपाइ र उद्योगका कामदारमा पुरुष भन्दा महिला र बुढापाकाका संख्याले पनि प्रष्ट पर्दछ । यो कामदार पुर्तिका निम्ति घरका सम्पूर्ण जन र बिदामा विधार्थी लगाउन परेको छ । २०६८ अनुसार पुरुष १७२ र महिला ४० जना विदेश गएको देखाउछ । (स्रोत: साखेजुङ्ग गा.वि.स., इलाम, २०६९)

### ५.३.७ चिया खेतीमा लैङ्गिक संलग्नता

तालिका नं. १०

चिया टिपाइमा महिला र पुरुषको संलग्नता नमुना छनोट विवरण

| बगान सं. | १. | २ | ३  | ४  | ५ | जम्मा | प्रतिशत |
|----------|----|---|----|----|---|-------|---------|
| महिला    | ७  | ५ | १० | ११ | ३ | ३६    | ८०%     |
| पुरुष    | २  | १ | ०  | ५  | १ | ९     | २०%     |

स्रोत : स्थलगत अध्ययन, २०७३

यस गा.वि.स.को ५ वटा बगानमा गरिएको चिया टिपाइमा संलग्न महिला र पुरुष संख्याको नमुना छनोटबाट पुरुष २० प्रतिशत महिला ८० प्रतिशत संलग्नता देखिन्छ । यसबाट के स्पष्ट हुन्छ भने पुरुषभन्दा महिलाको संलग्नता बढी हुने गरेको पाइन्छ । यस गा.वि.स का मानिसहरू समाजमा मेलमिलाप र भाइचाराका साथ काम गरेको पाइन्छ । चिया सम्बन्धित कामलाई कुनै लिङ्गका आधारमा यो महिला र पुरुषले मात्र हो भनिएको पाइन्छ तर पनि समग्र चिया खेतीका महिलाको ९० प्रतिशत संलग्नता रहेको देखिन्छ ।

### ५.३.८ श्रमिकको ज्यालाको अवस्था

ज्यालाको कुरा गर्दा कामको प्रकृति अनुसार फरक पाइन्छ । दैनिकी ज्यालामा चिया कटिङ्गका लागि रू ३००/५०० चिया टिप्न रू २०० खेतीका लागि रू २०० रहेको छ । यो ठाँउ अनुसार फरक पर्दछ । समान भाउ र महगाई अनुसार परिवर्तन गर्दै लाने गरेको पाइन्छ । चियाको सवालमा बढी मुना पलाएको बेला भने प्रति के.जी. रू २०/२५ दिएको पाइन्छ । यसले चिया हुर्केर नाश हुने र कामदारको अभाव पुर्ति हुनाका साथै कामदारले राम्रै कमाइ गरेको पाइन्छ । तर यो रकममा पनि कामदार सन्तुष्ट भने पाइन्छैन । अन्य कामको दैनिकी काठ र हुङ्गाका काम गर्नेको रू १०००/१२०० अलैची टिप्ने रू ४०० दिएको पाइन्छ । यसरी दैनिकी ज्याला दिए पनि कामदार असन्तुष्ट रहेको बताए ।

(स्रोत : सूर्य राईसँग प्रत्यक्ष भेटघाट, २०७३)

### ५.३.९ कृषकको लगानी

यस गा.वि.स.का मानिसहरू चिया खेतीलाई प्रमुख खेतीकै रूपमा गरेको पाइन्छ । यस क्षेत्रमा बढी वर्षा र चिया खेतीका लागि उपयुक्त हावापानी भएका कारण पनि चिया

खेती तर्फ आकर्षण बढेको पाइन्छ । यस क्षेत्रमा निजि लगानीमै कृषक लागि परेको पाइन्छ र यस स्थानमा खोलेका चिया प्रशोधन कारखाना पनि प्रायः निजि रहेको पाइन्छ । द्वन्द्वकाल पुर्व भने कृषि विकास बैकले कृषकको चिया रोप्नेलाई रोपनी हिसाबले लगानी गरेको पाइन्छ र तर द्वन्द्वका कारण पनि ऋण बन्द गरी शान्ति बार्ता पश्चात भने रू. दश हजार सम्मको ऋण मिनाहा गर्नुका साथै अन्य ऋणमा भने केही व्याज मिनाह गरी कृषकलाई आर्थिक भार कम हुने गरी बैकले ऋण उठाएको पाइन्छ । यस क्षेत्रमा खासै सरकारले प्रत्यक्ष रूपमा ऋण तथा अनुदान सहयोग गरेको देखिन्दैन । (स्रोत : शक्ति राई २०७३)

चिया सहकारी समुह मार्फत सुलभ ब्याजदारमा युवा स्वरोगार मार्फत ऋण लिइ लगानी गरेपनि यो रकम समुहमा रहेको कृषकमा मात्र सिमित हुने देखिन्छ र सबै कृषकहरूमा यो सुविधा लिन नसक्ने देखिन्छ र यो रकम चिया खेती भन्दापनि चिया गुणस्तर सुधारमा पशुपालनको सम्बन्ध भएका कारण पनि यस क्षेत्रमा लगानी गर्ने बताए । चिया विकासका लागि अन्य दातृ राष्ट्रका संस्थाले सहयोग गरिरहेको बताए । (स्रोत : खड्का राउत २०७३)

### ५.३.१० व्यापार /बेच्ने स्थान

यस गा.वि.स. का चिया कृषकहरू उत्पादित हरियो चिया बिक्री केन्द्र भने यस स्थानमा खोलेको निजि प्रशोधन केन्द्रहरू हो । यहाँ कृषकहरूले विभिन्न स्थानबाट तौल लिइ बिल लिएर दिने गरेको यसका लागि चिया प्रशोधन केन्द्रहरूले पनि आफ्ना गाडीहरू दैनिक पठाउने गरेको छ र कृषकहरूले आफुले मन परेको र उपयुक्त कारखानालाई दिने गरेको छ । केही कृषकहरू भने सामुहिक सहकारी मार्फत कुनै कम्पनी सँग सम्झौता गरी बेचेका पनि पाइन्छ । यसरी धेरै प्रशोधन कारखाना भए पनि यि कारखाना बिच प्रतिस्पर्धा नभएका र एकले अर्काले दिएको मूल्य हेरेर त्यसै अनुरूप भाउ दिने गरेको पाइन्छ । जसमा कृषकले आफ्नो समानको मूल्य आफैँ तोक्नु भन्दा कारखानाहरूकै मनोमानी पाइन्छ । जसका कारण कारखानाहरू कृषकमुखि भन्दा नाफामुखी भएकाले हो । फलस्वरूप: कृषकले उचित मूल्य नपाएका बताउछन् । (स्रोत: मन कुमार राई २०७३)

### ५.३.११ श्रम अभाव

यस स्थानमा पनि चिया खेतीमा श्रमिक अभाव देखिन्छ । चिया टिप्ने सिजनमा कामदारको अभाव हुने कारणले चिया हुर्कने गर्दछ । जुन चिया कम गुणस्तरमा बेच्नु पर्ने र

मूल्य पनि कम लगाउने गर्दछ । कामदार अभावमा यस स्थानमा प्रत्येकको चिया बगान हुनु एक कारण हो भने अरू बैदेशिक रोजगारीमा युवा पलायन पनि एक मानिन्छ । कृषकहले कामदारको अभाव हुन नदिनका निम्ति चियाको मुना बढि आएका समयमा हुर्कन नदिन के.जी. को हिसाबले पनि दिने गरेको पाइन्छ । जुन १ केजी टिपेबापत रू. १५ देखि रू. २० सम्म दिएको पाइन्छ । खाजाको व्यावस्था भने आफै कामदारले गर्नुपर्ने खुसीले जुनै समयमा टिप्ने र निस्कने गर्न सक्छ । कामदार भरसक बढि पैसा बसाउन खटेर बिहानैबाट बढी टिप्ने प्रयास बगानको काम चाँडो गर्न गरेको पाइन्छ । यो हुलपत्ति आउने समय र चाड पर्वको समयमा बढि दिएको पाइन्छ । (स्रोत : शुभराज राई २०७३ को कुराकानी)

#### ५.४ चिया कृषक, बिचौलिया व्यापारि र प्रशोधन केन्द्र बीचको अन्तरसम्बन्ध

यस गा.वि.स. का चिया कृषकहरू संगठित भइ सहकारीमा आवद्ध भए पनि सबै यसरी सहकारीमा संगठित भएका छैनन् । चिया कृषक र कारखाना बीच घनिष्ट सम्बन्ध रहेको छ । यस सम्बन्धमा थप सहयोगी भूमिका बिचौलिया व्यापारीको हुने हुँदा जसमा सहकारीलाई पनि लिन सकिन्छ । जसले कृषकहरूले उत्पादित चिया बिक्रिका लागि विभिन्न सहकारीका माध्यम मार्फत कारखानासँग सम्भौता गरी हरियो पत्ति लाने गरेको छ । यसै गरी कृषकहरूबाट चिया सङ्कलनका एजेण्ड स्वस्वय ब्यक्तिहरू पनि रहेको पाइन्छ । जसले प्रति केजि रू १ फाइदा दिने गरेको पाइन्छ । जसले बढी परिमाणमा चिया सङ्कलन गरियो त्यसै अनुरूप रकम कमाउने सक्ने छ । शुरूका समयमा हप्तामा २ दिन मात्र लिन आउने हुँदा चिया टिप्न समस्या भई चिया हुर्कने गर्दथ्यो र चिया पनि कारखानाले नलिन पनि सक्थ्यो तर वर्तमान समयमा यस गा.वि.स. भरि ५ उद्योग ठुला उद्योग खोलेका कारण पनि चिया कृषकले इच्छा अनुरूप प्रत्येक दिन जोख्न पाएमा छन् । यहाँका कृषकहरूले आफ्नो पायक पर्ने स्थानमा र बढी मूल्य दिने कारखानालाई चिया जोख्न सकेका देखिन्छ । यस गा.वि.स.मा सडक सुबिधाका कारण अन्य फिक्कल, जसबिरे जस्ता स्थानका उद्योगका सङ्कलन गाडी निरन्तर चल्ने हुँदा त्यस उद्योगलाई पनि बेचन सक्छन् । गाडी भएका व्यक्तिहरूले आफ्नो साधान लिइ बगानबाटै चिया उठाउने पनि गरेको छ र कम्पनीले हुवानी भाडा सहित रू २/३ सम्म दिने गरेको पाइन्छ । जसले गर्दा केही व्यक्तिहरूले चियाको परिमाण अनुरूप कमाउने मौका पाएका छन् तर यसमा भने कृषकहरूले विभिन्न समस्या पनि भैल्लुपरेको कुरा सुन्न पाइन्छ जुन जोखेको चियाको मात्रा हराउने र बेलाभै पेमेन्ट नपाएका र पाए पनि आधा मात्र बुझ्नुपर्ने देखिन्छ । यसले सहकारी जस्तो विश्वास

गर्ने आधार नभएको देखिन्छ । सहकारीले कारखाना र कृषक बीच पुलको काम गरेको पाइन्छ । कृषकका गुनासा उद्योग सम्मर कारखानाका हरियो चिया प्रतिका गुनासा सजिलै प्याउने काम सहकारीले गर्दछ । अर्गानिक चिया उत्पादनमा कृषकहरूको तहबाट हुनु पर्ने हुँदा यस सम्बन्धित तल्लिम तथा सचेतना सजिलै पुराउन सकिन्छ । संगठित भइ गरेका कार्य जहिले पनि सफल हुन गरेको र कारखानाले पनि अर्गानिक चियाको मूल्य भने यो गएका वर्ष रू ५३ दिएको थियो । अर्गानिक चियाको उत्पादन गुणस्तर कायममा र बढी जनशक्ति, मुना चाम्रो अरू भन्दा कम उत्पादन हुने हुँदा पनि यो रकम पर्याप्त छैना यसकारण पनि सहकारीले चिया कृषकको हितमा आफ्नो खोल्नुपर्ने देखिन्छ । उत्पादित चिया बिक्रीका लागि स्थानीय राष्ट्र तथा अन्तर्राष्ट्रिय बजार आवश्यक पर्दछ । यसका लागि चिया बिक्री उद्योग स्ययम् र कुनै बेला विदेशी व्यापारी आफै उद्योगमा गएर गुणस्तर हेरि लाने गरेको पाइन्छ । यस बाहेक विभिन्न जिल्लामा रहेको कोशेली घर लगायत खुद्रा व्यापारीका माध्यमबाट बिक्री गर्दै आएका छन् । यहाँका चियाका बिक्री केन्द्र काठमाडौँका विभिन्न स्थानमा रहेको पाइन्छ । यस बाहेक विभिन्न घरेलु तथा साना उद्योग र कृषि मेलामा समेत स्टल राखेको पाइन्छ । यसले व्यापार प्रवर्धनमा र प्रचारप्रसारमा थप सहयोग पुगेको छ । सहकारी तहबाट जिल्लामा बिक्री केन्द्र पनि स्थापना गरिएका छन् । केन्द्रीय चिया सहकारी संघले र राष्ट्रिय चिया चिया कफि विकास बोर्डले विभिन्न वेवसाइट तथा अन्य माध्यमबाट प्रचारप्रसार गर्दै आएको छ ।

## ५.५ चिया खेती, उत्पादन र सहकारी

समुह सहकारीमा समेल भई कुनै पनि कार्य सफल रूपमा सम्पन्न हुने हुँदा यस गाविसमा पनि चिया कृषकहरू समेटेर सहकारीको माध्यमबाट अर्गानिक चिया उत्पादन र बिक्रीमा सहयोग गर्दै आएको छ र यसमा सहकारी व्यावस्थापनमा कारखानाको पनि सहयोग दिदै आएको छ । विश्वबजारमा अर्गानिक चियाको माग धेरै रहेकोले यसका निम्ति तल्लो तह कृषकको कच्चा चियाको उत्पादनमा सुधार ल्याउनु पर्ने हुँदा पनि सहकारीका माध्यमबाट विषादी मुक्त उत्पादनमा जोड दिएको पाइन्छ । यस गा.वि.स.मा जम्मा ३ वटा सहकारीहरू सञ्चालनमा रहेको छ । यी संस्थाहरूले चिया कृषक र उत्पादन कारखाना बिचमा पुलको रूपमा काम गर्दै आएको छ । कृषकका समस्याहरू सहकारी मार्फत कारखानामा राख्ने गरेको पाइन्छ ।

“कार्यालय सञ्चालनका निमित्त प्रति केजी रू १ सहकारीलाई दिदै आएको र अन्य रसायनिक चियाको मूल्य भन्दा वर्ष भरि नघट्ने गरी रू ५ बढी अर्गानिक चिया कृषकलाई दिदै आएको छ । ग्रीनहील समुहले भने अर्गानिक र रसायनिक मल हालेको चिया सङ्कलन गरेको र सहकारीका सदस्य कृषकको चिया चेक जाँच पनि सामान्य हुने गरेको बताउछन् ।” (स्रोत : ग्रीनहील सहकारी संस्थाका सचिव श्री सविन बस्नेत २०७२/०१/१० गते)

## ५.५.१ श्री उच्च पहाडी चिया उत्पादक सहकारी संस्था सम्बन्धी जानकारी

### स्थापना इतिहास

यस गा.वि.स.का चिया कृषक सहकारीहरू मध्ये एक नमुना छनोट गरिएको सहकारी हो । यस श्री उच्च पहाडी चिया उत्पादक सहकारी लि. साँखेजुङ्ग ५ रक्सेको स्थापना वि.सं. २०५७/१०/१२ मा डिभिजन कार्यालय इलाममा सहकारी ऐन २०४८ अनुरूप दर्ता गरेको संस्था हो र यसमा साँखेजुङ्ग ५, ७, ९ मंगलबारे ८ शान्तिडाँडाका माथिल्लो भेक र चमैता ८ का कृषकहरूलाई समेटेको पाइन्छ । जब २०५५ सालमा हिमालयन संग्रीला टि. प्रड्युसर प्रा.लि. को स्थापना सँगै कृषकहरूले हरियो चिया सङ्कलन गरी उद्योग लान थाले यही कृषकहरू समुह सहकारीका परिणत भएको पाइन्छ र समुहमा थोरै रकम पनि जम्मा गर्न थाल्यो । चिया सम्बन्धी समस्याहरू समुह मार्फत सवधान गर्नुपर्ने र चिया विकास विस्तार सम्बन्धी कानुनी रूपमा अपौचरिक संगठन बनाउनुपर्ने आवश्यकताको रूप यो सहकारी नमुना हो ।

### २०७३ को विवरण अनुसार

सेयर सदस्य संख्या शुरूवातमा ३३ जना वर्तमान समयमा २०७३ सम्ममा १५४ जना सेयर सदस्य रहेको छ । बचत शुल्क मासिक भने रू ११० र यस गत वर्ष २०७३ को सम्झौतामा हिमालय संग्रीला टि प्रड्युसर प्रा.लि.ले रू ५३ को दरले खरिद गरेको र अबको सालको सम्झौता नगरिएको यस आउदो सालको असोज सम्म मात्र चिया दिने त्यस पश्चात भने यस सहकारीकै निजि कारखाना खोल्ने यसका लागि उन्नति कार्यक्रम अन्तर्गत रू ५२ लाख अनुदान दिने बताए । सेयर सदस्य शुल्क १ बराबर रू १०५ मा हाल रू २६१० रहेको छ । तर यो सबै सेयर सदस्य कृषकमा समान छैना यसको मुख्य कारण पछि सेयर खरिद गरी यस समुहमा पस्नुका कारण हो । २०७३ सम्ममा रू ७ लाख जम्मा भएको

र यस रकमलाई मुख्य रूपमा चिया र पशुपालनका लागि ऋण दिदै आएको छ । अर्गानिक चियाका उत्पादनका लागि पशुपालन र चिया खेती परस्परिक सम्बन्धका कारणले हो बताए । कारखानाले पहिले प्रति केजी २/३ दिदै गरेकोमा अहिले भने सहकारी विकासका लागि ९० प्रतिशत चियाको मात्रा केही रकम दिदै आएको बताए । युवा स्वरोजगार कोषबाट यस समुहका सचिव र अध्यक्षको धनिपुर्जा राखेर ७ प्रतिशत ब्याजमा रू १ करोड लिइ ५ प्रतिशत रकम भने समुहमा राखि अन्य रकम १२ प्रतिशत ब्याजमा रकम सेयर सदस्यहरूलाई गाईपालनमा ऋण दिएको छ । यस ऋण राम्ररी तिरेमा प्रोत्साहन स्वरूप ६० प्रतिशत रकम समेत फिर्ता गर्दछ । यसरी यस ऋण अरू भन्दा सुलभ र सस्तो भएको जानकारी दिए । सहकारीका सदस्य कृषकहरूमा ८० प्रतिशत अर्गानिक चिया उत्पादन गर्ने गरेको बताए । स्रोत : श्री उच्च पहाडी चिया उत्पादक सहकारी लि. का वर्तमान सचिव श्री खड्का राहुत (२०७३/१२/१ को कुराकानी)

### ५.५.२ केन्द्रीय चिया सहकारी संघको भूमिका

केन्द्रीय चिया सहकारी संघ लि. को वि.सं. २०६७ भदौ ३१ मा विधिवत रूपमा नेपाल सरकार कृषि तथा सहकारी मन्त्रालयको सहकारी विभागमा दर्ता गरिएको हो । नेपाल भरिका कृषकहरू समेल छाता संघमा १३ जिल्ला भापा, इलाम, पाँचथर, तेह्रथुम, धनकुटा, भोजपुर, उदयपुर, ललितपुर, संखुवासभा, ताप्लेजुङ्ग, सोलुखुम्बु, रामेछाप, ओखलढुङ्गा भरिको जम्मा ९५ सहकारीहरू र ५ वटा चियाका जिल्ला संघहरू सहित हाल ६२ घरपरिवारका सदस्य आबद्ध भएको छ । यस संघसँग नेपाल सरकार, राष्ट्रिय चिया तथा कफि विकास बोर्ड, राष्ट्रिय सहकारी बोर्ड, राष्ट्रिय सहकारी संघ लि, नेपाल विषयगत केन्द्रीय संघ, राष्ट्रिय सहकारी बैंक, राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय गैर सरकारी संस्थाहरू एरीटेरा नेदरल्याण्ड, उन्नति फान्डेसन डी फ्रान्स, आफा, विभिन्न उद्योग र कम्पनीसंग सहकार्य गरी चियाको विकास सम्बन्धी विभिन्न काम गरिरहेको छ । यसै ५९ औँ राष्ट्रिय सहकारी दिवस भन “आर्थिक विकास र सामाजिक रूपान्तरण लागि सहकारी” भन्ने नाराका साथ मनाए ।

सन् २०१५मा सञ्चालन गरेका कार्यक्रम निम्न छन् :

१. कृषक वहस परामर्श औजार फ्याक्ट तलिम सञ्चालन
२. चिया खेती अभिलेखिकरण प्रशिक्षण तालिम कार्यक्रम सञ्चालन
३. चिया प्रशोधन सहकारीहरूलाई अर्थोडक्स तथा गुणस्तर सुधार तलिम
४. चियामा विषादी न्युनिकरण तथा अर्गानिक विषादी तयारी सचेतनामुलक तलिम



५. किसानहरू का पैरवीका लागि परामर्श औजार
६. सहकारीको तयार चियाको नमुना सङ्कलन गरी राष्ट्रिय तथा अन्तराष्ट्रिय विभिन्न खरीदकर्ताहरूलाई पठाइरहेको
७. अर्गानिक चियाको अन्तरिक नियन्त्रण सम्बन्धी कार्य गरिरहेको
८. चिया सहकारीहरूको स्तरीकरण निर्धारण र सहकारीहरूको अनुगमन
९. व्यावसायिक योजना निर्माण तथा उधमशीलता तालिम
१०. सहकारी नेतृत्व विकास तालिम आदि

यि केन्द्रिय सहकारी संघ र अन्य संघ संस्थाहरूले विभिन्न जिल्ला स्तरिय सहकारीको सुधारका लागि र कृषकहरूलाई पनि चिया खेती सम्बन्धी उपयुक्त कार्यक्रम तथा तालिमहरू मार्फत र गुणस्तर चिया उत्पादन सम्बन्धी व्यावहारिक ज्ञान दिई नेपाली चिया कृषकलाई सहकारीका माध्यमबाट नेपाली चियाको गुणस्तर सुधार गर्दै विश्व बजारमा नेपाली चियाको माग सुनिश्चितताका लागि यि विभिन्न तालिम ,गोष्ठी ,चियाको प्रचारप्रसार आदि गरेको पाइन्छ । तर यो अझै अपुग र सबै कृषकहरू संगठित पाइन्दैन र सबैले यो तालिम पाइरहेको छैन र यसका लागि अझ कृषक केन्द्रित कार्यक्रम ल्याउनु पर्ने देखिन्छ ।

(स्रोत: केन्द्रीय सहकारी संघ लि.नेपाल वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन, २०१५)

### ५.५.३ अर्गानिक चिया खेतीको सम्भावना

यस गा.वि.स.मा अर्गानिक चिया खेतीतर्फ विभिन्न समूहिकरूपमा मार्फत यस तर्फ लगेका पाइन्छ । जुन विश्वबजारमा दिर्घकालिन बजार प्रबृद्धनका निम्ति पनि दिगो चिया खेतीका लागि विभिन्न संस्थामार्फत तालिम गोष्ठी जनचेतना जगाउने रहेको पाइन्छ । चियाको गुणस्तर राम्रो पार्नका लागि बोटै मार्फत शुरूवात निम्ति कृषकका लागि विभिन्न कार्यक्रम गरेको पाइन्छ । जसका निमित्त प्रत्येक समूहमा १ जना सामाजिक परिचालकको व्यवस्था गरेको छ । जस समूहका सदस्यहरूलाई आवश्यक जाँच परामर्श दिई चियाको मुनाको गुणस्तर बृद्धिका लागि पुलको काम गरेको पाइन्छ ।

शुरूको समयमा कारखानाले कृषकलाई बढी मूल्य दिएका कारण पनि कृषकहरू हौसिएर बढी रसायनिक मल तथा विषादी छर्ने होडबजी चलेको देखियो । यो माटो देखि बोटमै मुना पलाउने देखि भार माने विषादी छर्ने चलन बृद्धि सँगै यसले आर्थिक उन्नति भए पनि मानव स्वास्थ्यमा असर गर्नुका साथै यसले चियाको विश्वबजारमा विषादी चेक

जाँजमा बढी मात्रा देखियो फलस्वरूप फिर्ता समेत भएको घटना देखिन्छ । यसकारण पनि चियाको मात्रात्मक भन्दा गुणस्तर सुधारका निम्ति हिमालयन संग्रीला चिया प्रशोधन उद्योगले समुहिक अर्गानिक चिया उत्पादनमा जोड दिदै आएको छ । यसका लागि समुहमा संगठित हुदै अर्गानिक चिया उत्पादनमा जोड दिनका साथै उत्पादित हरियो चियाको मूल्य भने अलि बढी दिएको छ । यहि २०७३ साल मा पनि प्रतिकेजी रू ५५ सम्म दिएको पाइन्छ र यस मूल्यमा घटबढ हुदै नजसका लागि कम्पनि र समुहबिच सम्भौता हने गर्दछ । अर्गानिक चिया बाहेकका लाई भने ४०-४५ सम्म दिने गरेको र यो स्थिर नभई घटबढ हुने गर्दछ । समुह सञ्चालनका लागि कारखाना जोखेको प्रति के.जी. रू १ दिने गरेको पाइन्छ ।

साना उद्योगले पनि अर्गानिक चियाको बिक्री स्थानीय बजारमा राम्रै भाउ पाएको र स्थानीय बजारमा पनि अर्गानिक चियाको मोह र माग राम्रै छ । यसै गरी ठुला उद्योगहरूले पनि उत्पादित चियाको गुरुस्तर चेक जाँच गरी अर्गानिक प्रमाणित गर्न सके विश्वबजारमा दिर्घकालिन बजारका साथै उचित मूल्य प्राप्त गर्न सक्ने सम्भावना छ । अर्गानिक चेकका लागि भने विदेश तथा शुल्क पनि बढी लाग्ने गरेको छ ।

#### ५.५.४ चिया खेतीमा प्रयोग ल्याएका रसायनिक विषादी तथा मल विवरण

–युरिया, पोटास, डि.ए.पि.

–सुफस

–ग्राससील (शिरू तथा घाँस मार्ने)

–मुनासील (मुना उमार्ने)

(मनोक्रोटोपस, क्वीनालफस, फोटेट र इथियन) जस्ता विषादी पूर्ण निषेद गरिए पनि गाउँघरमा लगाएको देखियो ।

गाउँघरमा प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूपमा मानव स्वास्थ्य, वातावरण तथा जैविक विविधतामा असर गरेको पाइन्छ । चिया जस्ता पेय पदार्थले जुन रोग सम्बन्धी औषधी जन्य काम गर्नका सट्टो विषको मात्रा दिनदिनै पिउदा भन् रोग लाग्न सम्भावना थियो ।

#### ५.५.५ रसायनिक विषादीको बैकल्पिक उपयाहरू

यस गा.वि.स.मा विभिन्न समुहमा आवद्ध अर्गानिक चिया कृषकहरूलाई विभिन्न संस्थाहरूले समय तसमयमा तलिम, गोष्ठी, सचेतनाका साथै जैविक मल तथा मलखाध

बनाउने तथा जैविक विषादी जुन गाँउघरमा प्राप्त औषधीजन्य भारपात मार्फत तयार गर्ने विधि तथा तालिमहरू सहकारी मार्फत सिकाएको पाइन्छ । जस मार्फत रोग, किरा, भारपात व्यावस्थापनमा सहयोग पुग्ने गरेको पाइन्छ । भारपातलाई बोटमै कुहाएर र विभिन्न रूख रोप्ने जसको पात खसेर मलमा परिणत हुने गर्दछ । यो क्षेत्रमा पशुका मल लगायत पिसाब (रछेन) चियाबारीमा बगाउने, किरामर्न वा भगाउन विभिन्न भारपात मिलाएर बनाएको जैविक भोल छर्ने आदि कुरा सिकेका पाइन्छ ।

### ५.५.६ अर्गानिक चिया खेतीमा आचार संहिता

“अन्तर्राष्ट्रिय स्तरमा प्रचलनमा रहेका प्रविधिक एवं सामाजिक मापदण्ड अनुरूप चिया उत्पादन तथा प्रशोधन प्रकृया मापन र यसको गुरस्तर कायम राख्नु चिया उत्पादनमा र प्रशोधनको स्वस्फुर्त रूपमा प्रयास आचारसंहिता हो ।” यसले मुख्य ४ कुरा जोड दिएको छ ।

१. प्रकृतिप्रति सम्मान
२. मानवीय सम्मान
३. उत्पादन प्रणाली प्रति सम्मान
४. उच्च गुणस्तर कायम राख्न प्रतिबद्धता

(स्रोत : अर्थोडक्स चिया उत्पादक प्रशोधन तथा प्रचार प्रवर्द्धनका लागि आचार संहिता एवं मापदण्ड, २०६३)

उक्त मुख्य ४ विषयमा रहेर चिया उत्पादक कृषकहरूले हरियो चिया उत्पादन गर्ने देखि प्रशोधन गर्ने देखि प्रशोधन कारखानाको उच्च गुरस्तरको चिया अन्तर्राष्ट्रिय बजारमा पुयाई अर्थोडक्स चियाको मूल्यलाई बृद्धि गर्ने कार्यक्रम मुख्य उदेश्य रहेको छ ।

अचार संहिताको भन्नूनै पूर्ण इमान्दारी, नैतिकवान् र सफाइ हो । संस्थागत रूपमा चिया किसानलाई समेटेर संचेतना जागरण उत्प्रेरणा र अन्तरिक नियन्त्रण प्रणालीका प्रविधिक पक्षहरू टिसेकले गर्दै आएका छ । चिया किसान र कारखाना बीचको सन्भौता मार्फत आचार संहिता कार्यन्वयन मानिन्छ । किसान जिल्ला संघ र टिसेक र कहिलेकाही कारखानाको छानविनबाट कृषक समुह संख्याको आधारमा कम्तिमा १ जना सामाजिक परिचालक नियुक्त हुन्छ । उक्त कर्मचारीको आयोजन बमोजिम आचार संहिता र अन्तरिक नियन्त्रण प्रणालीको सन्बन्धमा टिसेकका प्रविधिक सल्लाकारहरूले समुह उप समुहगत

रूपमा प्रविधिक प्रशिक्षण दिने र प्रत्येक समुहमा अन्तरिक निरिक्षण तालिम पनि दिइन्छ ।  
नेपालमा अर्थोडक्स चियामा गुणस्तरीयता बढेपनि यसको उचित मूल्य पाउन सकेको छैन ।  
निर्यात गर्दा उचित मूल्य पाउन नसक्दा पनि कृषकले हरियो चियाको मूल्य पाएका छैनन् ।

### ५.५.७ अर्गानिक चिया प्रमाणित गर्न गरिने प्रक्रिया

- किसान समुहमा प्रागरिक विषयमा छलफल
- किसानहरूले समुहमा आफ्नो प्रतिबद्धता सहित निवेदन
- प्रमाणिकरण निकायमा आवश्यक कागजात पेश गर्ने
  - अन्तरिक नियन्त्रण प्रणाली कार्यन्वयन २–३ वर्ष
  - प्रमाणिकरण निकायबाट प्राप्त फर्म भर्ने
  - सहकारी समुह र प्रमाणिकरण निकायबिच सम्झौता
  - सबै कागजात ठिक भए निरिक्षणको लागि लागि तय हुन्छ
- निरिक्षकले निरिक्षणको समय तालिका मिलाउछ
- बगान, कार्यालय निरिक्षण र कृषकसँग अन्तरवार्ता
- प्रमाणिकरण निकायमा प्रतिवेदन पेश हुन्छ
- प्रमाणिकरण निकायमा निरिक्षण उपर समीक्षा अध्ययन
- प्रमाणीकरण हुने नहुने निर्णयको चिठी तथा प्रमाणीकरणका शर्तहरू सहित सहकारी वा समुहलाई पत्र प्राप्त हुन्छ ।

यी उपयुक्त प्रमाणिकरण प्रकृत्यामा गएपछि यदि सबै मापदण्ड पुरा गरेमा साना किसान समुह र वा सहकारीको नाममा प्रमाणपत्र प्राप्त हुन्छ । (स्रोत : राष्ट्रिय चिया तथा कफि विकास बोर्ड, सन् २०१५)

यसरी प्रमाणिकरण गरेपनि प्रायः कृषकहरू यि प्रकृत्यामा गएका पाइन्न् किनभने सबै कृषकहरू सहकारीमा आवद्ध भई सहकारी मार्फत नै अर्गानिक चियामा जोड दिदै आएको छ तर यस गा.वि.स.का मानिसहरू सबै सहकारीमा आवद्ध छैना र अर्गानिक चिया खेती सबैले गरेका पनि पाइन्न् कारण अर्गानिक चियामा उत्पादन घट्ने डरले पनि गुणस्तरीयता भन्दा मात्रात्मक उत्पादनका लागि रसायनिक मल लगाएको पाइन्छ । गुणस्तरमा सुधारका लागि अर्गानिक चिया मूल्य अझ बढाउनु पर्ने देखिन्छ र अर्गानिक चियाको भविष्य प्रति

सचेत गर्दै यसका फाइदा बारे चेतना जगाउनु पर्ने देखिन्छ । केही सहकारीहरू भने यसरी प्रमाणित गरी प्रमाणपत्र पाउन लागेको पाइन्छ ।

### ५.५.८ अर्गानिक चिया प्रतिको कृषकको धारणा

यस गा.वि.स.का कृषकहरू अर्गानिक चिया उत्पादनमा सचेत भए पनि यसले व्यवहारिक पक्षले गर्दा अर्गानिक पुर्ण अर्गानिक भएको पाइन्छ । कृषकहरूले रसायनिकका विकल्पमा जैविक मलखाद र जैविक विषादी बनाउन समय, लगानी बढी हुनु यसका लागि कामदारको अभाव हुनु, सबै कृषकहरूमा तालिम अभाव र समुहमा आबद्ध सबै कृषकहरूमा पनि तालिम नलिएको पाइन्छ । जुन कृषकहरू सहकारी माध्यमबाट अर्गानिक उत्पादन गर्ने मापदण्डमा लागे पनि कृषकहरूमा चियाको मूल्य उचित नपाएको र मात्रात्मक उत्पादन पनि कम हुनु र मुना पनि कम आर्कषक, टिप्दा चाम्रो हुने, टिप्ने कामदार संख्या बढी लाग्ने हुदाँ यस प्रति कृषकमा निरासपन देखिन्छ र कसै कसैले अर्गानिक चिया कृषकहरूले पनि लुकी छिपी केही रसायनिक मल प्रयोग गरेको पाइन्छ । सबै कृषकहरू यसरी अर्गानिक चिया उत्पादन गर्न सहकारीमा आबद्ध छैना जसका कारण कम लगातमा बढी उत्पादन गरी बढी आम्दामी हात लगाउनु सकिने हुदाँ पनि अर्गानिक चिया उत्पादन प्रतिको मोह कम भएको हो । कारखानाले अर्गानिक चियाको मूल्य बढी दिए पनि यो अपुग रहेको छ । अर्गानिक चियाको मूल्य लगानी अनुरूपको कृषक घाटा नहुने गरी उचीत दिनुपर्ने अर्गानिक चिया कृषक बताउन् ॥स्रोत : अर्गानिक चिया कृषक सुशान्त कुमार राई २०७३॥

### ५.६ यस गा.वि.स.मा रहेका चिया सम्बन्धी उद्योगको विवरण

यस साँखेजुङ्ग गा.वि.स.मा विभिन्न कृषि सम्बन्धित घरेलु उद्योग सञ्चालनमा रहेकोमा यहाँ उत्पादित दुध भने नेपाल दुध संस्थान विराटनगरमा पठाइन्छ भने केही गाउँका निजि डेरीहरू मार्फत दुधका विभिन्न वस्तु उत्पादन गरी नेपाल लगायत विभिन्न देशमा निकासी गरिन्छ । यहाँ उत्पादित अदुवा, कुचो, अलैची भने कच्चा रूपमा भारत लगायतका अन्य मुलुकमा निकासी गरिन्छ । यस गा.वि.स.मा चियाको सम्बन्धित उद्योगको विवरण हेर्दा यस क्षेत्रमा ठुला, मझौला देखि साना उद्योग सञ्चालनमा छन् । जुन निजि तथा सहकारितामा र साना डाइयरहरूको स्तर उन्नतिका लागि विभिन्न संस्थाको सहयोगमा स्तर उन्नति गरिरहेका छन् ।

तालिका नं. ११

चिया उद्योग सम्बन्धी विवरण

| सि. नं. | उद्योगको नाम                                       | स्थापना मिति | उत्पादन क्षमता हे. | उत्पादन के.जी.मा | रोगगार क्षमता |
|---------|--|--------------|--------------------|------------------|---------------|
| १.      | हिमालयन ग्रिन टि.प्रोड्युसर प्रा. लि. साँखेजुङ्ग ७ | वि.सं. २०५५  | १ हजार केजी        | करिब २ लाख       | १८जना         |
| २.      | साखिरा चिया प्रशोधन कारखाना साँखेजुङ्ग ३           | वि.सं. २०५६  | ४-५ हजार दैनिक     | १ लाख के.जी      | १५ जना        |
| ३.      | साँखेजुङ्ग चिया प्रशोधन उद्योग साँखेजुङ्ग ५        | वि.सं. २०६५  | १२००               | ७ हजार के.जी     | ६ जना         |

स्रोत : प्रत्यक्ष भेटघाटबाट प्राप्त जानकारी, २०७३ ।

यस गा.वि.स. मा ६ वटा चिया उद्योग रहेको पाइन्छ । यि बाहेक अन्य २ उद्योग बन्ने क्रममा छ । यस चिया सम्बन्धित उद्योगहरूमा ठुला ३ नमुना कुराकानी प्रस्तुत कारखाना सम्बन्धित केही जानकारी दिने कोशिस गरेको छु ।

हिमालयन संग्रीला प्रोड्युसर प्रा.लि. साँखेजुङ्ग ७ मा वि.सं. २०५५ मा स्थापित उद्योग हो । यो चिया उद्योग पनि निजि भएको र यस उद्योगले भने २० जनालाई नियमित कर्मचारी राखेको पाइन्छ र यसको प्रमुखबजार कलकत्ता र सामान्य अर्डर अनुसार जर्मनीमा निर्यात गर्ने गरेको छ । यस उद्योगले ३ समुह मार्फत अर्गानिक चिया उत्पादनमा जोड दिएको पाइन्छ । र त्यस चियाको मूल्य भने यो वर्ष ५३ रूपैया दिएको पाइन्छ । अर्गानिक चिया सुकाउने फरक भएको र चियाको सरदर मूल्य पनि साकिरा उद्योग सँग समान रहेको पाइन्छ ।

अर्गानिक चियामा यसको मुख्य जोड भए पनि पूर्ण अर्गानिक भने नभएको र यसको व्यावस्थापन राम्रो पाइन्छ हरियो चिया लानको लागि एकै गाडी लाने गरेको तर अहिले भने फरक फरक कोठामा लाने गरेको पाइन्छ र सुकाउने क्रममा पनि समस्या रहेको देखिन्छ ।

यस साँखेजुङ्ग गा.वि.स.को हिमालयन सांग्रीला टि. प्रोड्युसर प्रा.लि. नेपालटार इलामले दिएको गुणस्तर हरियो चियाको मूल्य विवरण विगत र वर्तमानमा यस गा.वि.स का एक नमुना प्रशोधन केन्द्रले गुणस्तर अर्गानिक हरियो चियाको बिक्री भाउ हेर्दा शुरूको समयमा केही कम भए पनि यो २००८ मा रू. १०५ कृषकलाई दिएको पाइन्छ । यस मूल्यले कृषकलाई धेरै हौसाएको र खेती जमिनलाई पनि चिया बारीमा परिणत गरे । यो

२०१६ सम्म आइपुग्दा चियाको मूल्य रू. ५३ मा भरेको देखिन्छ । जुन रूपमा बढ्नुपर्ने हो त्यो नहुँदा कृषकले कामदारलाई ज्याला दिन पनि गाह्रो भएको पाइन्छ । अर्गानिक चियाको उत्पादन रसायनिक मल लगाएको तुलनामा कम र कम सुइरो आउने, टिप्दा चाम्रो, चाँडो बाँझो हुने र हेर्दा नराम्रो हुँदा ए ग्रेड मा नपर्न सक्छ । यसरी गुरस्तरिय पत्तिका आधारमा मूल्य दिदाँ कृषक मारमा पर्न सक्छ तर ए ग्रेड भए यो तोकेको मूल्य हिउँद वा वर्षा याममा समान दिने गर्दछ । तर यदि रसायनिक मल लगाएको भए प्रति केजी मूल्य कम र मूल्य एकनाश नहुन सक्छ । (स्रोत : प्रवन्धक निर्देशक हिमालयन साँग्रिला, २०७३)

### ५.६.१ साकिरा चिया प्रशोधन उद्योगको वर्तमान अवस्था

साकिरा चिया उद्योगको स्थापना पश्चात वि.सं. २०५६ बाट सञ्चालनमा आएको छ । यो चिया उद्योग भारतका माडे समुहबाट सञ्चालित निजि उद्योग हो । यसमा नियमित कर्मचारी १५ जना आवश्यक अनुसार २५ जना सम्मलाई रोजगार दिने गरेको छ । यसको प्रमुख बजार भनेको भारतको कलकत्ता र यसको स्थानीय बजार नरहेको पाइन्छ । यहाँ अर्थोडक्स कालो चिया र ग्रीन टि भने माग अनुसार उत्पादन गर्ने गरेको छ । यस वर्ष हरियो चियाको मूल्य भने ४०/४५ दिएको र विभिन्न स्थान पूवामभुवा, शान्तिडाँडा, साँखेजुङ्ग स्थानबाट लगभग ६/७ लाख हरियो चिया सङ्कलन गरिएको तयारी चियाको मूल्य विभिन्न ग्रेड अनुसार फरक भए पनि सरदर चियाको मूल्य ३५०/४०० रहेको र अर्गानिक चियाको स्थिति भने विषादी मुक्त चहि हो तर पूर्ण अर्गानिक नभएको बताए । पूर्ण अर्गानिक भने धनकुटा र कंचनजंगा उद्योग पाँचथरमा उत्पादन गरेको बताए । (स्रोत: व्यक्ति साकिरा चिया उद्योगका कर्मचारी श्री इन्द्र ब. राईसँगका कुराकानी, २०७३/१२/४)

### ५.६.२ साँखेजुङ्ग चिया प्रशोधन उद्योगको वर्तमान अवस्था

साँखेजुङ्ग चिया प्रशोधन उद्योग साँखेजुङ्ग ५को स्थापना वि.सं.स २०६५ मा स्थापित निजि उद्योग हो । यसको उत्पादन बजार भने नेपालका स्थानीय बजार, भारत र युरोपियन बजार रहेको छ । यस वर्षमा हरियो चिया लगभग २० हजार के.जी सङ्कलन गरी ७ हजार के.जी. तयारी चिया उत्पादन गरेको पाइन्छ र साँखेजुङ्ग, माइपोखरी, शान्तिडाँडा, पूवामभुवा र पाँचथर स्थानबाट चिया सङ्कलन गरिएको बताए र हरियो चियाको मूल्य भने अरू उद्योग समान दिएको ४०/४५ र २ पात १ सुइरो मुनाको मूल्य भने रू १३० ले खरिद गरिएको बताए र यस उद्योगबाट अर्थोडक्स कालो चिया, ग्रीन टी, वाइट टि, गोल्ड

टि सबै प्रकारको चिया उत्पादन गर्ने गरेको र यसको सरदर मूल्य भने रू ८००-९०० रहेको छ। अर्गानिक चिया का चेकजाँज भने हेरेर गर्दै आएको र उत्पादित चियाको लेपटेष्ट नेपालमा नभएकाले जापान, अष्ट्रेलियामा लाने गरेको र यस उद्योगले भने अर्गानिक चियाका लागि चेक जाँज भइरहेको र प्रमाणपत्र पाउने स्थितिमा रहेको बताए। अर्गानिक चिया उत्पादन गर्न सकेमा यसको बजार राम्रो रहेको तर यस्तो नभएमा बजार डामाडोल हुने। यस उद्योगको सुधारका लागि ए.डि.वि.ले र हाल उन्नती कार्यक्रम जर्मन ले गरिरहेको बताए। (स्रोत: श्री डम्बर खत्री साँखेजुङ्ग चिया प्रशोधन उद्योगका प्रमुख, २०७३/१२/४)

## ५.७ नेपालमा चिया खेतीको अवस्था

चिया खेती मुख्य वैदेशिक मुद्रा आर्जनका स्रोत भएकोले यो नगदेबालीका रूपमा लिइन्छ। यो एक पटक लगाएपछि हजार वर्षसम्म बाँच्ने हुँदा पनि यो खेती दीर्घकालीन खेती लिइन्छ। यस पूर्वी भेकमा बढी मात्रामा गरेको पाइन्छ। यसमा ३ क्षेत्र संलग्न छन्

१. सरकारी क्षेत्र (सन् २००० वि. सं. २०५७/०५८) मा नेपाल चिया विकास निगम पनि निजिकरण भयो। जसमा ७ वटा चिया बगानहरू निजिकरण भएको हो।
२. निजि क्षेत्र
३. साना किसान समूह

### ५.७.१ चियाको वर्तमान उत्पादन र क्षेत्रफलको विवरण

तालिका नं. १२

चियामा बगान र साना किसान (आर्थिक वर्ष २०७१/०७२) (सन् २०१४-२०१५) को उत्पादन र क्षेत्रफल

| स.नं. | प्रकार     | अर्थोडक्स               |                  | सिटिसि                  |                | जम्मा                |                  |
|-------|------------|-------------------------|------------------|-------------------------|----------------|----------------------|------------------|
|       |            | उत्पादन क्षेत्रफल (हे.) | उत्पादन (के.जी.) | उत्पादन क्षेत्रफल (हे.) | उत्पादन(के.जी) | उत्पादन क्षेत्र(हे.) | उत्पादन (के.जी.) |
| १.    | बगान       | ६८७८                    | १८३६६७५          | ७७१८                    | ११४२८४७७       | १४५९६                | १८२६२९९८         |
| २.    | साना किसान | ७८६४                    | ३०८७०५३          | ३७०५                    | ६७१६८८१        | ११५६९                | ४९२३७२८          |
|       | जम्मा      | १४७४२                   | ४९२३७२८          | ११४२३                   | १८१४५३५८       | २६१६३                | २३१८६७२६         |

स्रोत: राष्ट्रिय चिया तथा कफि बोर्ड, नेपाल, सन् २०१५



उपयुक्त तालिकाका अनुसार अर्थोडक्स चियामा ठुला बगानले ६८७८ हेक्टर रोपन क्षेत्रफलबाट कुल उत्पादनको ३७.३१ प्रतिशत र साना किसानको ७८६४ हेक्टर क्षेत्रफल चिया खेतीमा ६२.७ प्रतिशत उत्पादन मात्रा देखिन्छ । जसबाट ठुला बगानको तुलनामा साना किसानको अर्थोडक्स चिया उत्पादन योगदान बढी देखिन्छ । यसै गरी सि.टि.सि. चिया ठुला बगानको कुल क्षेत्रफल ७७१८ हेक्टरमा जम्मा ६३ प्रतिशत उत्पादन र साना किसानले भने ३७०५ हेक्टर क्षेत्रफल चिया खेतीमा ३७ प्रतिशत मात्रा देखिन्छ । सिटिसि को भने ठुला बगानको क्षेत्रफल बढीका कारणले पनि साना किसान समुह भन्दा बढी देखिन्छ ।

यस गा.वि.स.मा भने निजि क्षेत्र तथा साना किसान समुह बढी सक्रिय रहेको पाइन्छ । सरकारी क्षेत्रको चिया सम्बन्धी कुनै क्षेत्रमा उपस्थिति देखिन्दैन । करिब १८००० बढी परिवारहरूले चिया खेती गरेको अनुमान गर्न सकिन्छ । यहाँ बगान देखि कारखाना स्थापनामा निजि तथा साना किसान समुह सक्रिय रहेको पाइन्छ । इलाम जिल्लामा कन्याम टि.स्टेट (२२ सय रोपनीमा फैलिएको) बाहेक १ करोड भन्दा माथिको उद्योग १८ वटा सञ्चालनमा छ भने १ सय देखि ५०० केजी सम्म उत्पादन गर्ने ४० भन्दा माथि छ । इलाम, भापा, पाँचथर, धनकुटा र मोरङमा ६० वटा निजि कम्पनीहरू रहेको र यो क्रम बृद्धि अवस्थामा छ । हाल ९५ सहकारीहरू विभिन्न चिया खेतीका जिल्लामा सञ्चालनमा रहेको छ र यो केन्द्रीय सहकारी संघमा आबद्ध भइसकेको अवस्था छ । अहिले कृषकहरू मिलेर सहकारी रूपमा साना प्रशोधन केन्द्र खोलेका र खोल्न पनि कममा छ । इलाम साँखेजुङ्ग, मंगलबारे, जसबिरे, फिकल, पाँचथर, तेहथुमका स्थानमा ८० वटा साना तथा घरेलु उद्योग सञ्चालनमा रहेको छ र यो स्थानमा बृद्धि अवस्थामा छ । साँखेजुङ्ग गा.वि.स.मा भने निजि उद्योग रहेको छ र सहकारी उद्योग भने खोल्ने कममा छ । साना किसानका संख्या भने २० हजार घरधुरि चिया खेतीमा संलग्न छन् भने इलाम जिल्लाको कुल १२००० र १३ हेक्टर क्षेत्रफलमा चिया खेती गरेको पाइन्छ । स्रोत :अन्नपूर्ण शुक्रवार २८, २०७३ ।

## ५.७.२ नेपालको चियाको वर्तमान स्थिति

तालिका नं. १३

नेपालको चिया उत्पादन र क्षेत्रफल आर्थिक वर्ष २०७१/७२(२०१४-०१५)

| क्र. सं. | विवरण | अर्थोडक्स       |                  | सि.टि.सि.       |                  | जम्मा           |                  |
|----------|-------|-----------------|------------------|-----------------|------------------|-----------------|------------------|
|          |       | क्षेत्रफल (हे.) | उत्पादन (के.जी.) | क्षेत्रफल (हे.) | उत्पादन (के.जी.) | क्षेत्रफल (हे.) | उत्पादन (के.जी.) |
| १.       | बगान  | ३३८३            | ९८६६९६           | ६५६९            | १११३३५७०         | ९९५२            | १२१२०२६६         |
| २.       | किसान | ५४०३            | २०५०९९८          | ३६८१            | ६४१६८८१          | ९०८४            | ८४६७८७९          |
|          | जम्मा | ८७८६            | ३०३७६९४          | १०२५०           | १७५५०५१          | १९०३६           | २०५८८१४५         |

स्रोत: राष्ट्रिय चिया तथा कफि विकास बोर्ड, नेपाल, सन् २०१५

माथिको तालिका अनुसार अर्थोडक्स चिया किसानले ५४०३ हेक्टरमा २०५०९९८के.जी. उत्पादन गरेको देखिन्छ भने सि.टि.सि. चिया किसान ३६८१ हे. मा ६४१६८८१ के.जी. उत्पादन भएको देखिन्छ। अर्थोडक्स चिया खेती हेक्टर बढी भए पनि सि.टि.सि.को उत्पादन बढी छ। जम्मा कुल बगान र किसान गरी अर्थोडक्स र सि.टि.सि. चिया उत्पादन २०५८८१४५ के.जी. उत्पादन भएको छ। इलामको साँखेजुङ्गमा भने अर्थोडक्स चिया खेती गरेको छ। सि.टि.सि. चिया भने तराइको भापामा बढी गरेको पाइन्छ। हरियो चिया, ओलाङ्ग चियाको बारे भने विवरण नभएको स्थिति छ।

## ५.७.३ नेपालमा उत्पादित चियाको मात्रा विवरण

तालिका नं. १४

आर्थिक वर्ष सन् २०१४-२०१५ सम्मको चिया उत्पादन मात्रा विवरण

| अर्थिक वर्ष (ए.डि.) | उत्पादन क्षेत्र (हेक्टर) | उत्पादन मात्रा (हजारमा) |
|---------------------|--------------------------|-------------------------|
| २००४-२००५           | १५९००                    | १२६०६०८१                |
| २००५-२००६           | १६०१२                    | १३६८८२३७                |
| २००६-२००७           | १६, ४२०                  | १५२६७७४३                |
| २००७-२००८           | १६५९४                    | १६१२७९०                 |
| २००८-२००९           | १६७१८                    | १६२०८१२७                |
| २००९-२०१०           | १७१२७                    | १६६०६५५५                |

|           |       |          |
|-----------|-------|----------|
| २०१०-२०११ | १७४५१ | १७४३९३३  |
| २०११-२०१२ | १८१४९ | १८३०९८२४ |
| २०१२-२०१३ | १९०३६ | २०५८८१४५ |
| २०१३-२०१४ | २०१२० | २१०७३६६  |
| २०१४-२०१५ | २६१६५ | २३१८६७२६ |

स्रोत: वार्षिक प्रतिवेदन २०१५, राष्ट्रिय चिया तथा कफि विकास बोर्ड, नेपाल

यस तालिका मार्फत प्रत्येक आर्थिक वर्ष चिया खेती गर्ने दर बढेको देखिन्छ । उत्पादन क्षेत्र पनि विगत आर्थिक वर्ष २०१३-२०१४ मा हेक्टरमा २१०७३६६ हजार उत्पादन भएको देखिन्छ, पछिल्लो आर्थिक वर्ष २०१४-२०१५ मा भने २६१६५ हेक्टरमा २३१८६७२६ हजार केजी उत्पादन भई तुलनात्मक रूपमा ६०४५ हेक्टरको वृद्धि सगै २१०७९३६० हजार चिया उत्पादन भएको देखिन्छ । यसलाई चिया खेती तर्फको सकारात्मक वृद्धि भएको पाइन्छ ।

### ५.७.४ जिल्ला स्तरिय चिया रोपन र उत्पादन विवरण

तालिका नं. १५

(आर्थिक वर्ष २०७१-०७२ वा २०१४-०१५)

| सि. नं. | जिल्ला   | चियाबारी            |                | साना किसान        |               | उत्पादन | जम्मा              |               |
|---------|----------|---------------------|----------------|-------------------|---------------|---------|--------------------|---------------|
|         |          | रोपन क्षेत्र हेक्टर | उत्पादन के.जी. | साना किसान संख्या | रोपन क्षे. हे | के.जी.  | रोपन क्षेत्र (हे.) | उत्पादन के.जी |
| १.      | भापा     | ७७१                 | ११४२८४७७       | २९५२              | ३७०५          | ६७१६८८१ | ११४२३              | १८२६२९९८      |
| २.      | इलाम     | २८१                 | १४९१५९४        | ६९८५              | ४९८७          | २६५४६७८ | ७८०५               | ४१४६२७२       |
| ३.      | पाँचथर   | ६१९                 | १५३५७०         | ११३१              | ५१९           | १९८७४२  | ११३८               | ३५२३१२        |
| ४.      | धनकुटा   | ४७८                 | ७९४५६          | ४८२               | ४६२           | ९८३६३   | ९४०                | १७७८१९        |
| ५.      | तेह्रथुम | ९५                  | १९५१२          | ६६२               | २४२           | ५६६१३   | ३३७                | ७६१२५         |
| ६.      | अन्य     | २८६८                | ९२५४३          | २६८६              | १६५४          | ७८६५७   | ४५२२               | १७१२००        |
|         | जम्मा    | १४५९६               | १३२६५१५२       | १४८९८             | ११५६९         | ९८०३९३४ | २६१६५              | २३१८६७२६      |

स्रोत: वार्षिक प्रतिवेदन २०१५ राष्ट्रिय चिया तथा कफि विकास बोर्ड, नेपाल

यि माथिको तालिका मार्फत ६ जिल्ला मध्ये प्रथम भापा ११४२३ हेक्टर र दोश्रो स्थानमा इलाम ७८०५ हेक्टर चिया खेती गरेको देखिन्छ । कुल साना किसान जम्मा संख्या

पनि १४८९८ ले ९८०३९३४ हजार केजी उत्पादन गरेको सन् २०१४-२०१५ को बर्षिक प्रतिवेदनले देखाउँछ ।

## ५.८ नेपालको चियाको अन्तराष्ट्रिय बजार

नेपाल विभिन्न स्थानमा चिया खेती गर्दै आएको छ । विश्वमा विभिन्न देशमा धेरै प्रयोग गरिने पेय पदार्थमा चिया पनि एक हो । थुप्रै मानिसहरूले चिया पिउने हुँदा यसको बजार संभावना बढी नै देखिन्छ । विश्वमा करिब ३ अर्ब कप चिया पिउने तथ्याङ्कमा सबभन्दा बढी खपतमा आयरल्याण्ड पर्दछ । ग्रीन टि स्वास्थ्यका लागि बढी लभदायक हुने हुँदा पनि यसलाई औषधीका रूपमा प्रयोग बढाउन सकिन्छ । यो चिया भने प्राय चिन, जापान, ताइवानमा बढी गरेको पाइन्छ । नेपाली चियालाई अन्तराष्ट्रिय मापदण्ड अनुरूपको अर्गानिक चिया उत्पादन गर्न सके यसले अन्तराष्ट्रिय बजारको सुनिश्चितता गर्दै व्यापार नभएका अन्य मुलुकमा पनि यसको माग बढाउन सकिन्छ । यसका लागि विभिन्न कृषक सहकारीलाई विभिन्न चिया सम्बन्धी सहयोगी संस्था मार्फत कृषक तहमा अर्गानिक चिया सम्बन्धी विभिन्न कार्यक्रम गर्दै आएको छ । यसले सबैलाई भने नसमेटेको अवस्था छ ।

पछिल्लो तथ्याङ्क सन् २०१४/१५ अनुसार विभिन्न ठुला बगान र साना किसान समुहको तथ्याङ्क हेर्दा अर्थोडक्स चियाको उत्पादन क्षेत्रफल १४७४२ हेक्टरमा ४९२३७२८ हजार के.जी. उत्पादन भएको छ । सि.टि.सि. भने ११४२३ हेक्टर क्षेत्रफलमा १८१४५३५८ हजार के.जी.उत्पादन गरेको पाइन्छ । नेपालमा उत्पादित चियामा अर्थोडक्स चिया बजार जर्मन अमेरिका, चिन, रूष, जापान अष्ट्रेलिया, केनडा, चेक रिपब्लिक मुलुक रहेको छ । सिटिसि चिया नेपालका भगापा तथा तराई क्षेत्रमा हुने हुँदा यसका बजार भने भारत, पकिस्तान, बंगलादेश र नेपालका स्थानीय बजार रहेको छ ।

### तालिका नं. १६

#### नेपालको चिया सम्बन्धी निर्यात तथा आयत विवरण

| आर्थिक वर्ष | निर्यात      |             | आयत          |
|-------------|--------------|-------------|--------------|
|             | परिमाण मे.ट. | मूल्य रू.ह. | मूल्य रू. ह. |
| २०५६-०५७    | ८१.६         | २५७२२       | ७३२७७        |
| २०५७-०५८    | ६९५          | २३०८४       | ९८०००        |
| २०५८-२०५९   | ७९.६         | २७७८७       | ८८३८         |
| २०५९-०६०    | १९३          | ५३९०८       | ४६८          |
| २०६०-२०६१   | ८८४          | १०४८२२      | ९९२          |
| २०६१-०६२    | ४३१६         | ४३८७७१      | ४१९          |

|           |       |         |       |
|-----------|-------|---------|-------|
| २०६२-०६३  | ४६२३  | ४१५६३२  | ५००५  |
| २०६३-०६४  | ७०००  | ७३४२८५  | १९००० |
| २०६४-०६५  | ८६००  | ९०२१२२  | १३१२३ |
| २०६५-०६६  | ८८८९  | ११६०५९३ | ९६२४  |
| २०६६-०६७  | ८४९८  | ११९५३१९ | ३६११६ |
| २०६७-०६८  | १०५३३ | १५४९८९१ | ४०८०४ |
| २०६८-२०६९ | ११०६० | १६२७५८९ | ४७८०१ |
| २०६९-०७०  | १०७०९ | २०४३२२० | ५७५१६ |
| २०७०-०७१  | ११३५७ | २०२९४३९ | ५५८२० |
| २०७१-०७२  | १११४२ | २००६८७७ | ९३७६३ |

स्रोत : राष्ट्रिय चिया तथा कफि विकास बोर्ड, नेपाल, सन् २०१५

यस तालिकाबाट यो स्पष्ट हुन्छ भने २०५६-०५७ मा ८१.६ मेट्रिक टन चिया रू २५७२२ रूपैया का दरले विदेश निकास गरेको देखिन्छ । र यो समान रूपमा नभए पनि क्रमिक रूपमा बढेको पाइन्छ । पछिल्लो तथ्याङ्क अनुसार वि.सं. २०७१-२०७२ मा भने १११४२ मेट्रिक टन चिया रू २००६८७७ हजार को दरले विदेशमा बिक्री गरेको छ । जसले तयारी चियाको अन्तर्राष्ट्रिय बजार राम्रो हुँदै आएको र विदेशी मुद्रा आर्जनको एक बाटो चियालाई लिन सकिन्छ ।

## अध्याय-छ

### साराशं र निष्कर्ष

#### ६.१ साराशं

यस गा.वि.स. चिया खेतीका लागि उपयुक्त हावापानी र अति संभावित क्षेत्र हो । यस क्षेत्रमा २०२८ साल देखि निजि प्रयासबाट चिया रोपन थालेको पाइन्छ र इलाम जिल्लामा भने सरकारले करिब १२० वर्ष अघि चिया खेती गरेको पाइन्छ । यस गा.वि.स.मा केही व्यक्तिहरूले दानाबाट उमारेको चिया रोपे पनि त्यसलाई तयार गरी पिउन नजानका स्थिति थियो । खाने चिया भने बजारबाट ल्याउने गरेको पाइन्छ । तर वर्तमान समय परिवर्तन भई यस क्षेत्रमा चिया रोपेर व्यवसायिक रूपमा हरियो चिया बेच्ने गरेका पनि छ । यस स्थानमा थुप्रै निजि कारखानाहरू पनि खोलेको छ र कृषकले उत्पादन गरेका हरियो चिया खरिद गर्नुका साथै यसले थुप्रैलाई रोजगार पनि दिई रहेको छ । यसरी चियाले रोजगार सिर्जना गरेपनि यसप्रति युवाहरूको आकर्षण कम देखिन्छ । प्रशोधन कारखानाहरू संख्यात्मक रूपमा खोलिएपनि यस स्थानमा हरियो चिया खरिदमा केही प्रतिस्पर्धा देखिन्दैन र सबै कारखानाहरूले समान किसिमका मूल्य दिएको पाइन्छ । यस क्षेत्रमा चियाखेतीले समाजका विभिन्न सामाजिक आर्थिक संस्कृतिक रहनसहन मानवीय सम्बन्धहरू परिवर्तन भई विश्व अर्थतन्त्रसँग यस साँखेजुङ्गा गा.वि.स. जोडिन्न पुगेको छ । जसले नेपालको अर्थतन्त्रमा केही हिस्सा विदेशी व्यापारबाट ल्याउन सहयोग गरेको छ । चिया खेतीले स्थानीय कृषक, कामदार खरिदकर्ता व्यापारी र उद्योग बीचको सम्बन्ध, परम्परागत खेती र चिया खेती, विश्वबजार र यस प्रतिको युवा भुकाव के कस्तो छ भन्ने समस्यालाई यि विभिन्न उद्देश्यहरू चिया खेतीको सामाजिक र आर्थिक प्रभावको अध्ययन, चिया कृषक, बिचौलिया व्यापारी र प्रशोधन कारखानाबीचको अन्तरसम्बन्ध र अर्गानिक चिया खेतीको वर्तमान अवस्था र त्यसका सम्भावनाको अध्ययन गर्नु रहेको छ र यसका लागि विभिन्न अध्ययन विधि मार्फत त्यस क्षेत्रको केही तथ्याङ्कहरू ल्याएको छ । आफु स्वयम् उक्त स्थानमा गई कृषक र कामदारसँग नजिकसँग सहभागी भई काम गरेर, चिया सम्बन्धित मुख्य व्यक्तिहरू सँगको कुराकानी र विभिन्न पत्रपत्रिकामा रहेका सम्बन्धित लेख तथा वेबसाइटका सहाराले यो अध्ययन पुरा गरेको छ ।

यस अध्ययनबाट यस गा.वि.स.का मानिसहरू जुन रूपमा हौसिएर चिया खेती गरेका थिए त्यो स्थिति अहिले देखिनदैन किन भने शुरू समयमा कारखानाले सन् २००८ रू. १०५ प्रति केजी मूल्य दिएका तर अहिले सन् २०१६ अर्गानिक चिया रू ५३ प्रति केजी र अन्य रू ४५ लिएको यो भरेको स्थिति छ यसले कृषकले कामदारलाई दिन मात्र पुग्ने देखिन्छ ।

शुरूका समयमा कृषि विकास बैंकले चिया क्षेत्रमा ऋण लगानी गरेपनि द्वन्द्वका कारणले यस क्षेत्रमा लगानी नगरेका र द्वन्द्व अधिका ऋण कमिमा रू १० हजार सम्म भए मिनाहा र धेरै भने व्याजमा केही छुट दिएको पाइन्छ । चिया क्षेत्रमा सरकारले भने केही सहयोग नगरेको पाइन्छ बरु सरकारले आफ्ना सरकारी चिया कमान तथा निगम २०५७ साल देखि निजिकरण गरी सरकार आफ्ना जिम्मेवारीबाट टाढा रहेको छ ।

शुरूवात समयमा कृषकहरूले विभिन्न रसायनिक मल र विषादी छर्कर उत्पादन वृद्धि गर्ने प्रवृत्ति बढ्दो थियो यस क्षणिक आमदामी भए पनि यसले दिर्घकालीन कृषक देखि अन्य विभिन्न सरोकार व्यक्तिहरूका स्वास्थ्य, उत्पादित चिया र वातावरणमा नराम्रो असर परेको पाइन्छ । वर्तमान समयमा चिया कृषकहरू सहकारीमा संगठित भई चिया कृषकहरूलाई विभिन्न तालिम जनचेतना तथा अर्गानिक चिया उत्पादनमा जैविक मल खाद र जैविक मल सम्बन्धी तालिम दिदै कृषकहरूलाई अर्गानिक चिया उत्पादनमा जोड दिदै आएको छ । यसका केन्द्रिय सहकारी संघ र अन्य संघ संस्थाहरूले पनि सहयोग गर्दै आएको छ । यस प्रकारमा चिया बिक्रीका लागि सहकारी मार्फत कारखाना सँग रू ५ बढीले बिक्री गरेपनि यसको मूल्य पर्याप्तता नरहेको कृषकका गुनासा छ ।

यस गा.वि.स.का सम्पूर्ण व्यक्तिहरू अर्गानिक चिया उपादनमा समेटिएका पाइन्छ यस स्थानमा खोलेका ३ सहकारीमा आबद्ध कृषक बाहेक अरू छुटेका कृषकहरू अर्गानिक चिया उत्पादनमा गरेको पाइन्छ कारण अर्गानिक चिया अरू तुलनामा कम उत्पादन ,बढी श्रम, मेहेनत ,अर्गानिक उत्पादनमा चाहिन्ने मलखाद र जैविक विषादी बनाउने तालिमको अभाव र यसरी उत्पादित हरियो पत्तीको मूल्य पनि पर्याप्त नपाउनु रहेको छ ।

समुह र सहकारीका माध्यम गरेका कुनै पनि कार्य सफल हुने उदाहरणलाई यस क्षेत्रमा कृषकहरूका चिया समुह मार्फत अर्गानिक चिया उत्पादन तर्फ बढेको जनचेतना संगै अर्गानिक चिया उपादनमा लागिरहेको छ । चिया खेतीलाई अर्गानिक तर्फ लाने भनिए

यस प्रकारको खेतीमा विभिन्न समस्या रहेको पाइन्छ, यसका लागि राज्यले कुनै अनुदान र सहयोग दिएको पाइन्दैन ।

चिया खेतीमा पुरुष भन्दा महिलाको संलग्नता बढी छ । ५ बगानमा गरेको नमुना छनौटमा चिया टिपाइ काममा महिला ८० प्रतिशत र पुरुषहरू २० प्रतिशत को संलग्नता देखिन्छ । यो कारण पुरुषहरू चिया टिप्न अल्छी गर्ने, चियाका कटिङ्ग जस्ता बल काम र कारखानाका काममा भने संलग्न धेरै रहेको छ । बढी बल र बढी दाम पाउने काममा मात्र मनपराउने र प्राय विदेश जाने कारणले पनि पुरुष भन्दा महिला बढी देखिन्छ । चिया खेतीले यस स्थानमा रोजगार सृजना हुनाका साथै बढी महिलाको जिवनस्तर सुधारका साथै बाल बच्चालाई पनि राम्रो शिक्षा दिन सकेका छन् कामको संभावनाका कारण यस स्थानमा बसाई सरि आएका पनि पाइन्छ । यहाँ गा.वि.स.मा थुप्रै महिला केन्द्रित लघुवित्त बैंक र सहकारीहरू खोलेका र महिलाहरू बचत तथा ऋण सम्बन्धि ठुला निर्णय आफै गर्न सकेका छन् ।

यस गा.वि.स.मा प्रत्येक घरमा चिया रोपेका कारण पनि कामदारको समस्या पर्ने गर्दछ । चिया उम्रन्ने सिजनमा सबै आफ्ना बगानमा खटिनुपर्ने र ठुला बगान भएका कृषकहरूको मुना हुर्केर गुणस्तरहिन हुने समस्या भन्ने ज्यादा पर्ने देखिन्छ । जसका लागि पुर्तिका लागि विधार्थी कसैले प्रति के.जी.का हिसाबले टिप्न दिएका पाइन्छ । जसले कामदारले अझ बढी कमाउन र विधार्थीहरूले आफ्ना पकेट खर्च जुटाएका पाइन्छ ।

यस गा.वि.स.मा खाद्यन्न खेती गर्न छाडेका र खाद्यवालीका साटो नगदेवाली तर्फ लाग्दा सबै लागेका कारण प्राय सबै कुरा किन्नुपर्ने हुदाँ परानिर्भर बढेको देखिन्छ र पुरानो पर्मा प्रथा जुन भावनात्मक सम्बन्ध जोड्ने गर्दथ्यो त्यो पर्मा प्रथा चलन हट्दै गएको प्रत्येक कुरा व्यक्तिवादी र आर्थिक पक्षमा जोडेको पाइन्छ ।

नेपाल कृषि प्रधान देश भएकाले प्रत्येक कुरा आयत गर्नुपर्ने स्थितिमा चियालाई अन्तर्राष्ट्रिय बजारमा बेच्न सकेको हुनाले व्यापार घाटा पुर्ति गरी राष्ट्रिय अर्थतन्त्रमा थप सहयोग पुगेको छ । आर्थिक वर्ष २०७०/०७१ मा १११४२ मेट्रिक टन निर्यात भएको देखिन्छ ।

चिया क्षेत्र इलाम, भ्जापा, पाँचथर, तेह्रथुम, धनकुटा ५ जिल्ला बाहेक अन्य जिल्लामा पनि विस्तार भई यो संख्या १३ जिल्ला पुगेको छ । इलाममा भने २०७० /०७१



मा साना किसान संख्या ६९८५ ले ४९८७ हेक्टरमा २६५४६७८ केजी चिया उत्पादन गरेको छ ।

चिया सम्बन्धी बजार देखि यस सम्बन्धित कार्यक्रम, अनुदान, बजारको खोज तथा अर्गानिक चिया उत्पादन तर्फ राज्यले कुनै सहयोग नगर्नु र सरकारी चिया विकास निगमहरू २०५७ /०५८ मा निजिकरण गरी सरकार आफ्नो जिम्मेवारीबाट टाढा रहेको अवस्था छ । गत वर्ष सहकारी मार्फत चियाका सदस्यलाई स्वरोजगार कोषबाट सुलभ ब्याजदरमा ऋण दिए पनि यो पर्याप्त छैना र यो रकम सहकारीमा आवद्ध कृषकले मात्र हात पर्न देखिन्छ । र यो रकम अर्गानिक चिया सँग सम्बन्धित पशुपालनमा गर्ने लक्ष्य छ ।

जसले ठुला व्यापारिहरूले मनोमनि तरिकाले हरियो चियाको मूल्य तथा बजार कब्जा गरेका छन् । यस गा.वि.स.मा ६ वटा उद्योग खोलिए पनि कृषकको चिया खरिदमा प्रतिस्पर्धाको अभाव भएको र शुद्ध अर्गानिक उत्पादनलाई गुणस्तरका आधारमा खरिद गर्ने वातावरण नहुनु र अर्गानिक चिया कारखाना सम्म लान र त्यस कारखानामा प्रशोधन गर्न व्यावस्थापन अभाव देखिन्छ । यस स्थानमा उत्पदित चिया प्राय भारत लाने हुदाँ नेपाली नाम हराउन सक्ने देखिन्छ ।

अर्गानिक चिया गुणस्तर जाँचमा सरल र सुलभ तरिकाले गर्ने व्यावस्था, शुद्ध अर्गानिक उत्पादनलाई गुणस्तरका आधारमा हरियो चियाको उचित मूल्य दिनुपर्ने देखिन्छ, र नेपाली चियाको गुणस्तर बृद्धि गरी विश्व बजारसँग प्रतिस्पर्धा गर्न सक्ने उत्पादनमा जोड दिदै चियाको बजार प्रवर्द्धनमा संचारका विभिन्न माध्यमबाट प्रचारप्रसार व्यापक पनुमा विभिन्न चिया सम्बन्धी सरकारी तथा गैसरकारी संस्थाहरू भने सक्रियका साथ लागेको पाइन्छ ।

## ६.२ निष्कर्ष

नेपाल कृषिमा आधारित अर्थतन्त्र भएका कारण पनि व्यावसायिक कृषि हुन आवश्यक छ र यसले वर्षेनी युवा रोजगारका लागि विदेश जाने संख्या केही हल हुन सक्छ । कृषि सम्बन्धी उत्पादन विश्व बजारमा लान सके देशकै अर्थतन्त्र बलियो हुनसक्छ तर नेपाली तयारी चिया भने विश्व बजारमा गइरहेको स्थिति भएपनि यसको दिर्घकालीन बजारको खोजी गरी नेपाली चियालाई विश्व सामु चिनाउनु पर्ने देखिन्छ । चियाको बजार अन्तराष्ट्रिय बजार धेरै भएका कारणले पनि चिया सम्बन्धी आएका समस्याहरू सवधान आजको आवश्यकता हो । यस गा.वि.स मा वि.सं. २०२८ साल देखि चिया कृषक आफैँ

रोपन थालेको हो । यसले कृषकको पुराना खेती खाद्यबाली भन्दा नगदेबालीमा बढी आकर्षित भई मानिसहरू चियाको खेती बढी गरेको पाइन्छ । जुन एक पटक लगाए पछि हजारौं वर्ष सम्म आम्दामी दिने, पाखा तथा भिरालो जमिन लगायत बारीमा पनि हुनाले यस खेती गरेको पाइन्छ । यस गा.वि.स. उच्च स्थान, ओसिलो ठाँउ र बढी पानी पर्ने भएकोले पनि चिया खेतीका लागि उपयुक्त स्थान मानिन्छ । चिसो हावाले गर्दा यहाँका चिया गुणस्तरीय उत्पादन रहेको छ । शुरूका समयमा उद्योगले बढी नै दाम दिन थाले पछि भने कृषकहरूमा उत्साह पलाएको पाइन्छ तर यो धेरै समय रहेन । चिया मानव स्वास्थ्यमा प्रत्यक्ष असर गर्ने र यो औषधीका रूपमा लिने हुदाँ अर्गानिक चियाको माग विश्व बजारमा बढी छ । यसका लागि यस स्थानका कृषकहरू अर्गानिक उत्पादनका लागि सहकारीमा आबद्ध रहेको र कृषकहरूलाई आचारसंहिता लागु गरिरहेको छ । चिया सहकारीले नै माध्यमबाट अर्गानिक चिया उत्पादनमा जोड दिदै आएको छ यो सकारत्मक पक्ष लिन सकिन्छ । कारखानाले पनि केही बढी मूल्य दिदै आएको छ तर यस प्रकार अर्गानिक चिया कृषकहरूले उत्पादन गर्ने लगात बराबरको चिया पत्तिको उचित मूल्य पाउन सकेको छैन र यसमा सबै छुटेका कृषकहरू पनि समेटिनु जरूरी छ । यस स्थानमा पशुपालन पनि धेरै गरिन्दै आएकोले पशुपालन र चिया खेतीसँगै लान सके पशुबाट उत्पादित मल चियामा लगाई अर्गानिक चिया उत्पादन गर्न सकिन्छ । यसका लागि अर्गानिक मलखाद तथा रोगका लागि चाहिने जैविक विषादी बनाउने विधि र अर्गानिक चियाको बजार खोजी गर्नु आवश्यक छ । यस क्षेत्रमा कारखानाहरू बढी खोले पनि यिनिहरू बीच हरियो चिया खरिदमा प्रतिस्पर्धा नहुँदा कृषकहरूले फाइदा उठाउन सकेको छैन र प्रायः निजि कारखाना भएकाले कृषकको हितलाई टाढा राखि बढी फाइदा लिन सक्ने देखिन्छ । यहाँका ठुला कारखानाको मुख्य बजार भारत भएकोले नेपालको चियाको परिचय गुम्ने स्थिति छ । केही सहकारीले आफ्नै निजि प्रशोधन केन्द्र खोल्ने तयारीले अर्गानिक चिया शुद्ध उत्पादन गर्न सक्ने देखिन्छ र आफ्नै बजार व्यवस्थापन गर्नले कृषकहरूलाई राम्रो मूल्य दिन सक्नेछ । यस गाविसमा चिया खेतीको महिलाको संलग्नता महिलाहरूले रोजगार बढी देखिन्छ । यसले महिलाहरूको विभिन्न पक्षमा सुधार आएको देखिन्छ भने आर्थिक गतिविधी पनि बढेको पाइन्छ ।

## सन्दर्भ सामग्रीसूची

आवधिक दिगो योजना, साँखेजुङ्ग गा.वि.स. इलाम, २०६९ ।

असोज २८, २०७३ –शुक्रवार अन्नपूर्ण समाचारपत्र, काठमाडौं ।

अर्थोडक्स चिया उत्पादक प्रशोधन तथा प्रचार प्रवर्द्धनका लागि आचारसंहिता एवम्  
मापदण्ड, २०६३ ।

इलाम, जिल्लाको वस्तुगत विवरण (२०६३), नेपाल सरकार राष्ट्रिय योजना अयोगको  
सचिवालय, केन्द्रीय तथ्याङ्क विभाग शाखा तथ्याङ्क कार्यालय पाँचथर, इलाम,  
पाँचथर, ताप्लेजुङ्ग ।

कुमार श्रेष्ठ र बलाराम आचार्य (२०६७ असोज ), सामाजिक संस्था र प्रक्रियाको विश्लेषण  
केन्द्रीय चिया सहकारी संघ लि. नेपाल वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन, सन् २०१३

केन्द्रीय चिया संघ लि. नेपालको दोस्रो वार्षिक साधारणसभा र चिया सोह्रौँ राष्ट्रिय दिवसको  
अवसरका प्रकाशित स्मारिका, २०७० ।

केन्द्रीय चिया सहकारी संघ लि. नेपालको वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन, सन् २०१५

केन्द्रीय सहकारी संघ लि. कृषक समाचारपत्र २०६३ ।

खत्री, प्रेम कुमार (२०३६), “हाम्रो समाज र संस्कृति”, पाठ्यक्रम विकास केन्द्र, त्रि.वि.,  
काठमाडौं ।

चिया कृषक -समाचारपत्र सेप्टेम्बर २००८ ।

नेपाल चिया तथा कफि विकास बोर्ड नेपाल (NTCDB) -२०६८

पदमलाल देवकोटा र नेत्रकुमार ओझा (संस्करण २०६८), समाजशास्त्रका सैद्धान्तिक  
दृष्टिकोण ।

राष्ट्रिय चिया तथा कफि विकास बोर्ड नेपालको चियाको उत्पादन मात्रा विवरण  
२०७०/२०७१

विष्ट, डोरबहादुर (२०५५ सातौँ संस्करण), सबै जातको फूलबारी, काठमाडौं : साभा  
प्रकाशन ।

साँखेजुङ्ग गा.वि.स. को वस्तुगत स्थलगत अध्ययन प्रतिवेदन, २०७३ ।

- Amatya, S.L. (1975), *Cash crop farming in Nepal*. Kathmandu T.U. Geography  
Insruction committee
- CBS, (2011). *Population Monograph of Nepal*, Kathmandu: CBS
- CEDA, (1972). *Population Development policy in Nepal. Internal working  
Document*. Kathmandu: CEDA, T.U. Nepal.
- DAVA (2001), *Poverty reduction development of the tea setor in Nepal*.
- Food and Agriculture organization of united Nation—DEEP ROOTS 2014
- GTZ (2004), *Orthodox Tea in Nepal, Garman Technology co-operation (private  
Sector, promation Rural Finance, Nepal)*
- Hard, C.R. (1994), *The culture and marketing of Tea*. Londan Oxford University  
Press
- Harka Bha.chemjong (2013), *Role of tea cultivation on village economy (A case study  
of paktep V.D.C. of pachther District)*, Thesis, submitted to T.U., Kritipur,  
Kathmandu
- Mac farlance, A.(1976) *Resource and population: A study of the Gurung*, Ratna  
pustak Bhandar, kathmandu, Nepal
- NTA- 2015, *The Himalayan Flaver*, Kathamandu, Nepal Tea Association
- NTCDB,(2015) *Tea-A-Tea*,Kathmandu National Tea and coffee Development Board,  
central office.
- Shivaram,B.(1999), *Sustainability of Tea in Next Millennium Tea-A-TEA*.  
Kathmandu: NTCDB.
- Singh ,P (2011) *National Tea and coffee Development Board*, Central Office  
,Nayabaneswer
- Subedi, B.R (2057) *Adhunik Chiya Kheti Prabidhi Ilam*, Shree Kanchanjanga  
Bahuuddeshya Sahakari Sanstha Limited ,Fikkal -6
- Subedi, B.R. (2057 B.S.) *Moreern Tea Farming Technology*. Kathmandu: Laxmi  
Offset press
- [www.ctcf.org.np](http://www.ctcf.org.np)
- [www.ratopati.com](http://www.ratopati.com)

अनुसुची १  
विशेष व्यक्तिसँग कुराकानी

१. इन्द्र बहादुर राई
२. सोम कुमारी राई
३. सूर्य राई
४. शक्ति राई
५. शुभराज राई
६. सुशान्त कुमार राई
७. मन कुमार राई
८. सविन बस्नेत
९. खड्का राउत
१०. इन्द्र बहादुर राई
११. डम्बर खत्री

## अनुसूची -२

प्रश्नावली

सहकारी सम्बन्धी प्रश्नावली

१.उत्तरदाताको विवरण

| उत्तरदाताको नाम | लिङ्ग | सहकारीको पद |
|-----------------|-------|-------------|
|-----------------|-------|-------------|

२.चिया सहकारीको नाम :

३.चिया सहकारी स्थापना मिति :

४.चिया सहकारीको सदस्य कति जना रहेको छ ?

५.शेयर सदस्य लिने रकम शुरूकादिन रअहिले कति छ ?

६.बचत दर कति गर्ने गरेको छ ?

७.जम्मा बचत रकम कति रहेको छ?

८.यो रकम कुन कुन क्षेत्रमा लगानी गरिएको छ ?

अर्गानिक चियाको मूल्य कति दिदै आएको छ ?

९.अर्गानिक चिया कति प्रतिशत उत्पादन हुने गरेको छ र अर्गानिक चिया प्रतिको धारणा के छ ?

१०.यस संस्थालाई सहयोग गर्ने अन्य संस्था कुन कुन छ र के के क्षेत्रमा ?

११.यसको भवि योजना के छ ?

चिया कारखाना सम्बन्धी प्रश्नावली

१. कारखानाको नाम :

२. स्थापना मिति:

३. कर्मचारी संख्या कति छ ?

४. कारखानाको प्रकार कस्तो ?

क. सरकारी ख. निजि ग.सहकारी

५. उत्पादन क्षमता कति हो?

६. यो वर्ष उत्पादन गरिएको मात्रा कति हो?

७. हरियो चिया कुन कुन स्थानबाट सङ्कलन गरिन्छ ?

८. यो वर्ष संकलित हरियो चिया मात्रा कति हो?
९. यो वर्ष हरियो चिया प्रति केजी कति दिइयो ?
१०. कुन कुन प्रकारको चिया उत्पादन हुन्छ र यो कुन कुन देशमा निर्यात गरिन्छ ?
११. तयारी चियाको सरदर मूल्य कति हो?
१२. अर्गानिक चिया कि अन्य चिया उत्पादन गरिन्दैछ ?
१३. अर्गानिक चिया प्रति यस कारखानाको धारणा र यसको व्यावस्थापन कस्तो छ ?
१४. अर्गानिक चिया परिक्षण गर्ने तरिका के के छ ?
१५. अर्गानिक चियाको बजार कस्तो छ ?

कृषक सम्बन्धी प्रश्नावाली

१. चिया खेतीबाट कस्तो आम्दामी हुन्छ ?
२. अर्गानिक सहकारीमा आवद्ध हुनुहुन्छ, यसका फाइदा र बेफाइदा भन्नुहोस ?
३. अर्गानिक चिया प्रतिको तपाईंको धारणा ?
४. अर्गानिक चिया खेतीका समस्याहरू के के छन् ?
५. अर्गानिक चियाको मूल्य प्रति सन्तुष्ट छ कि छैन ?
६. यस अर्गानिक चियामा कारखाना र सहकारी के सहयोग गर्दा राम्रो ?
७. सरकारी क्षेत्रबाट के के सहयोग गरेको छ ?
८. सरकार र अन्य क्षेत्रबाट केको अपेक्षा गर्नुहुन्छ ?
८. कामदारको पर्याप्तता कस्तो छ र अभाव पूर्ति कसरी गर्नुहुन्छ ?
९. कामदारको अवस्था कस्तो छ र कामदार लाई के कति दैनिक रोजगार रकम दिनुहुन्छ ?

## केही तस्बीरहरू

चिया टिप्पै चिया कृषक र कामदार



स्थानीय निजि बगान



चिया सम्बन्धी कार्यालय इलाम, जसबिरे

